यवनभाषा

का

व्याकरण।

पादरी विल्यम् हूपर साहेबने
भारत वर्षियोंके उपकार
के निमित्त लिखा।

सं १८७४

मुफीदउलखरवाइपरेस
अमरतसरमे मियाफरुक
रोद्दीनसाहिब केइहि
तमाम सेछपी·

शुद्धाशुद्ध पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७	१३	अनस्वार	अनुसार
२१	१	अङ्गीकार	अनङ्गीकार
२२	१८	युग	युज्
२४	११	उन्मत	उन्मत्त
२६	१७	ΣΤΕΑ	ΣΤΕΛ
..	१९	खोंच	खींच
२७	८	ΤΙΔ	ΤΙΛ
४१	६	ΟΙΚ	ΟΙΧ
४६	४	α	α से
..	१०	πλυ	πλυθ
४७	५	में	में अभ्यास
५२	२	῾ΡΓ	῾ΡΑΓ
५४	११	γνυ	ννυ
५७	२	ΚΑΑΤ	ΚΛΑΥ
५८	१०	σ	α
६२	१	तीन	चार
७२	८	χεχρυφων	χεχρύφθων
७७	८	के	के वास्ते
७९	१२	εμιγινυτην	εμιγνύτην
८१	१५	διδοσον	διδοσθον

८६	१३	न्यनाधिक	न्यूनाधिक
९५	१०	ζη̃ν	ζῇν
९६	१५	θανετ	θανεῖ
९८	४	ΒΛΑ	ΒΑΛ
१०१	५	ποιήσσται	ποιήσεται
१०६	१२	σπερησομενο	σπαρησομενο
११२	१५	γεγονεν	γεγονοτ
११९	१३	λελουμενο	λελυμενο
१२३	१०	εληλυθοντ	εληλυθοτ
१२८	४	ἕχτον	ἕχετον
१४४	६	ενεχειη	ενεχθείη
१५४	१२	θνε	θνα
"	१३	παρθ	πραθ
१५६	१	ἐδειται इ-	ἐδειται इत्या-
१६०	७	βασνο	βασανο
१६१	२	διχο	διχα
"	३	कर्य्य	कर्म्म
१६२	४	घमएड	घमण्ड
१६५	६	πενεθες	πενθες
"	७	घटान	चटान
१६६	३	σχευος	σχευες

..	१२	στηθος	στηθες
..	२०	σφε अपना(स्व)	कुछ नहीं
१६७	९	नक्षत	नक्षत्र
१६८	२१	गाहिरा	गहिरा
१७२	१	न बरने	बरने
१७३	२	मतवान	मत वा न
"	११	अधिक्य	आधिक्य
१७८	५	की	को
१८१	२	βασιλεσ-σα	βασιλισσα
१८२		वह आप से	(वह आप) से
१८३	१२	σωματιχ	σωματιχο
१८६	३	से	में
१८७	१०	दुष्ट	इष्ट
१८८	१६	χλλιον	χαλλιον
१९९	१५	वरिष्ठ	वरिष्ठ
१९१	९	ἀγδοηχον-τα	ὀγδοηχοντα
१९५	१५	अल्प प्राणान्वित	अल्पप्राणान्वित
२०५	१	सभाव	अभाव
२१३	४	के	के ८
"	५	होता	होना
"	६	अवश्यक	आवश्यक

२१६	५	तव	सब
२२३	१५	ὁ (सो)	ὁ
२२६	१५	ὅδατ	ὕδατ
२३०	१३	χρείτους	χρείττους
२३५	२	ἁπλόη } ἁπλῆ	ἁπλόην } ἁπλῆν
२५४	१	सम्पूर्णाना	सम्पूर्णता
"	१०	और	ओर
२५८	१०	विराति	विचारित
२६०	१३	और	ओर
"	१५	प्रत्येके	प्रत्येक
२६१	२	τα κατ' εμε	कुछ नहीं
"	१७	और	ओर
२७०	१४	आन्त	आता
२७६	१५	साध्य नहीं	साध्य
२७७	३	γένεται	γένηται
२८१	८	दारिद्र	दरिद्र

सूची पत्र।

यवनभाषा
का
व्याकरण

प्रथम अध्याय। अक्षरों का वर्णन

१। यवनभाषा में २४ अक्षर हैं। यथा।

मूर्त्ति।		नाम।	उच्चारण।
Α	α	ऑल्फॉ	आ वा ऑ
Β	β	बेटॉ	ब
Γ	γ	गॉम्मॉ	ग वा ङ
Δ	δ	देल्टॉ	द
Ε	ε	ऍप्सीलॉन्	ऍ
Ζ	ζ	ज़ेटॉ	ज़
Η	η	एटॉ	ए
Θ	θ	थेटॉ	थ
Ι	ι	योटॉ	इ वा ई वा य
Κ	κ	कॉप्पॉ	क

Λ	λ	लॉम्ब्डॉ	ल
Μ	μ	म्यू	म
Ν	ν	न्यू	न
Ξ	ξ	क्सी	क्स
Ο	ο	ऑमीक्रॉन्	ऑ
Π	π	पी	प
Ρ	ρ	ह्रॉ	र
Σ	σ ς	सिग्मॉ	स
Τ	τ	तॉउ	त
Υ	υ	उप्सीलोन्	उ वा ऊ
Φ	φ	फी	फ
Χ	χ	खी	ख
Ψ	ψ	प्सी	प्स
Ω	ω	ओमेगॉ	ओ

२। पहिली पंक्ति में जो प्रथम २ मूर्ति लिखी हुई हैं सो वाक्य के पहिले शब्द के आदि में और मनुष्य वा स्थान के विशेष

नाम के आदि में आती हैं द्वितीय २ मूर्ति और सब कहीं आती हैं और अक्षारहवें अक्षर की द्वितीय और तृतीय मूर्ति में यह अन्तर है कि तृतीय जो है सो शब्द के अन्तही मे और द्वितीय मूर्ति और सब कहीं आती है जहां प्रथम मूर्ति के आने का नियम नहीं है।

३। हिन्दी में आ ए ओ इन तीन स्वरों का ह्रस्वत्व नहीं होता है परन्तु यवनभाषा में होताहै और इस ह्रस्वत्व का चिह्न हम ने ˘ स्वर के ऊपर लिख दिया। यथा ऑ ऍ ऑ। यदि कोई कहे कि आ का ह्रस्वत्व अ है तो यह ठीक नहीं है क्योंकि अ का उच्चारण आ के उच्चारण से भिन्नहै और A का उच्चारण अ नहीं है वरन् ह्रस्व ऑ है।

४। फिर ΥΓ का उच्चारण हिन्दी में कभी नहीं होता है पर गुरुके मुख से सीखना आवश्यक है। वह ए वा उ के उच्चारण से कुछ थोड़ा सा मिलताहै। हमने नीचे के

चिह्न से उस को बताया । यथा उ ऊ ।

५ । Γ का उच्चारण χ वा χ का दूसरे γ के पहिले ङ होता है और सब कहीं ग ।

६ । I का उच्चारण शब्द के आदि में दूसरे स्वरके पहिले य होता है और सब कहीं इ वा ई ।

७ । Z का ठीक उच्चारण महाराष्ट्रों से होता है उत्तरदेशीयों से नहीं ।

८ । इन २४ अक्षरों से अधिक पुराने समय में और एक था सो छटवां था और उस की मूर्त्ति F *F* था । उस का उच्चारण व से मिलता था । परन्तु पीछे से उस का उ-च्चारण और तब उसका लेखन भी छोड़ दिया गया और अब केवल ६ छः का अंक समझा जाता है ।

९ । फिर और दो मूर्त्ति हैं जो अक्षर नहीं कहलाते हैं पर उच्चारण के लिये आव-श्यक है सो अल्पप्राण और महाप्राण क-हलातेहैं । महाप्राण का उच्चारण ह है और

अल्पप्राण केवल गले के खोलने को बताता है। अल्पप्राण की मूर्ति ' और महाप्राण की ' है। वे स्वरकी बड़ी मूर्ति की बाईं ओर और उसकी छोटी मूर्ति के ऊपर लिखे जाते हैं पर संयुक्त स्वर में दूसरे स्वरके ऊपर लिखे जाते हैं। यथा Ἀ Ἁ ἀ ἁ εὐ εὑ केवल शब्द के आदिही में ये आते हैं।

१०। महाप्राण की मूर्ति ρ के साथ भी आता है जब कि वह शब्द के आदि में अथवा दूसरे ρ के पीछे आताहै। यथा ῥω πυῤῥο। इस दशा में ρ का उच्चारण अधिक बलसे होताहै।

११। इन से अधिक और तीन मूर्ति है जो बल कहलाते हैं इस लिये कि शब्द के जिस अङ्क को बलके साथ पढ़ना है उसी अङ्क के स्वरके ऊपर लिखेजाते हैं सो ये हैं तीक्ष्ण ´ गुरु ` लुप्त ~। इन का सकल भेद हम यहां नहीं लिखसकते हैं

केवल इतनाही कहते हैं कि प्रश्नवाचक शब्दों में तीव्रा बल और जहां दो स्वर आपस में मिल गये तहां प्राय स्नुतबल आताहै। यथा ἄνθρωπος πότε καὶ δὲ τῶν ἧς।

१२। इनसे अधिक स्थितिसूचक प्रश्नसूचक और विस्मयसूचक भी मूर्त्ति हैं। स्थितिसूचक मूर्त्ति तीन हैं अर्थात् . जो περιοδο कहलाताहै और · जो κωλο कहलाताहै और , जो κομματ कहलाताहै। Περιοδο अधिक विलम्बकी स्थिति κωλο उस से न्यून और κομματ सब से थोड़े विलम्ब की स्थिति को बताता हैं। प्रश्नसूचक मूर्त्ति ; और विस्मयसूचक मूर्त्ति ! है।

१३। फिर और एक मूर्त्ति है सो शब्द के अन्तिम स्वर के लोप को बताताहै। यथा ἐπι के स्थाने ἐπ' और ἀνα के स्थाने ἀν' इस को अल्पमात्रा की मूर्त्ति

कभी नहीं समझना चाहिये ।

२४ । A ι υ ये तीन स्वर कब दीर्घ और कब ह्रस्व हैं यह लेखन से प्रगट नहीं होता है । एक एक शब्दमें उन का दीर्घत्व वा ह्रस्वत्व सीखने होगा ।

२५ । निरे स्वरों से अधिक यवनभाषा में कई एक संयुक्त स्वर कहलाते हैं सो ये हैं ।

मूर्ति ।	उच्चारण	मूर्ति ।	उच्चारण ।
αι	आॅइ	αυ	आॅउ
ει	ऐ	ευ	ओ
οι	औइ	ηυ	एउ
υι	उइ	ου	ऊ

जब किसी स्वर के नीचे ι लिखा जाता तब उसका उच्चारण नहीं होता है । यथा Aι ᾳ Hι ῃ Ωι ῳ ।

जब दो स्वर एक साथ आते हैं पर संयुक्त नहीं वरन् उनका पृथक २ उच्चारण होता है तब दूसरे के ऊपर ¨ ऐसे

दो विन्दु लिखी जाती हैं। यथा αϊ
ηϋ।

१९। व्यंजनों के कई एक गण हैं सो नि-
म्नलिखित चक्र से समझ पड़ेगें।

	अघोष।	घोष।	महाप्राणान्वित।	सानुनासिक।	संयुक्त।
कण्ठस्थ।	κ	γ	χ	γ	ξ
दन्त्य।	τ	δ	θ	ν	ζ
ओष्ठस्थ।	π	β	φ	μ	ψ
तालव्य।	λ	ρ	ς		

इति अक्षरों का वर्णन।

अभ्यास पत्र।

Δεῦτε πρός με πάντες οἱ
κοπιῶντες καὶ πεφορτισ-
μένοι, κἀγὼ ἀναπαύσω
ὑμᾶς. Ἄρατε τὸν ζυγόν
μου ἐφ' ὑμᾶς, καὶ μάθετε
ἀπ' ἐμοῦ, ὅτι πρᾶος εἰμι

καὶ ταπεινὸς τῇ καρδίᾳ· καὶ εὑρήσετε ἀνάπαυσιν ταῖς ψυχαῖς ὑμῶν. Ὁ γὰρ ζυγός μου χρηστός, καὶ τὸ φορτίον μου ἐλαφρόν ἐστιν.

द्वितीय अध्याय —— संधिका वर्णन।

१७। संस्कृत में जितनी संधि होती है उस से बहुत थोड़ी यवनभाषा में होती है तौ भी इस थोड़ी सी संधि को जानना अति आवश्यक है।

अथ व्यंजनों की संधि।

१८। जब एक शब्द के अन्तमें कोई अघोष आवे और दूसरा शब्द महाप्राण से आरम्भ हो तब उक्त अघोष महाप्राणान्वित होगा। यथा ἀπ᾽ (जो ἀπο से निकला देखो (३) और οὑ मिलके ἀφ᾽ οὑ होगा। वैसाही κατ᾽ (जो κατα

से निकला) और ὁλου मिलके καθ' ὁλου होगा । समासों में भी वैसाही होता है । यथा δεκα और ἡμερα बहुव्रीहि समास होके δεχημερο होगा ।

१९ । जब धातु दुहराया जाता है (जैसा संस्कृत में लिट् और जुहोत्यादि गण में होता है) तब महाप्राणान्वित अक्षर अघोष में बदला जाता है । यथा ΘΕ धातु से θιθημι नहीं वरन् τιθημι और φυ धातु से φεφυκα नहीं वरन् πεφυκα होता है ।

२० । जब धातु अथवा किसी मूलशब्द के आदि में अघोष है और उस के अन्त में महाप्राणान्वित अक्षर है और किसी कारण से इस का महाप्राण निकल जाता है तब वह आदि का अघोष महाप्राणान्वित होता है । यथा ΤΡΕΦ धातु के पीछे जब σ लगे तब φ उस से

मिलके ψ होगा और तब τ θ होजायेगा। यथा $\theta\rho\epsilon\psi$। वैसा ही $\tau\rho\iota\chi$ के पीछे जब σ लगे तब $\theta\rho\iota\xi$ होगा।

२१। समासों को छोड़के और २ शब्दों में तीन व्यंजन एक साथ प्राय नहीं रह सकते हैं वरन् उन में से एक छूट जाता है। यथा $\dot{\epsilon}\sigma\varphi\alpha\lambda$ और $\sigma\theta\alpha\iota$ मिलके $\dot{\epsilon}\sigma\varphi\alpha\lambda\theta\alpha\iota$ होगा।

२२। जब दो असम व्यंजन मिलते हैं तब प्राय पहिला बदलके दूसरे के समान होता है। यथा $\Gamma P A \Phi$ धातु τo प्रत्यय से मिलके $\gamma\rho\alpha\pi\tau o$ और $\delta\eta\nu$ प्रत्यय से मिलके $\gamma\rho\alpha\beta\delta\eta\nu$ होता है। वैसाही $\Lambda E \Gamma$ धातु $\theta\epsilon\nu\tau$ प्रत्यय से मिलके $\lambda\epsilon\chi\theta\epsilon\nu\tau$ और $\tau\alpha\iota$ प्रत्यय से मिलके $\lambda\epsilon\kappa\tau\alpha\iota$ होगा। परन्तु $\dot{\epsilon}\kappa$ उपसर्ग का κ कभी नहीं बदलताहै।

२३। जब दो अघोषों में दूसरा किसी कारण से बदलताहै तब पहिला भी वैसा·

ही बदलता है। यथा ἑπτα से
ἑβδομο निकलता है और νυκτ' औ
र ἡμεραν अव्ययीभाव समास होके
νυχθημερον होता है।

२४। जब शब्द के निर्माण में निरे स्वर (अ·
र्थात् जो संयुक्त स्वर न हो) के पीछे ρ
आताहै तब ρ दुहराया जाताहै। यथा
ἀ और 'PAΦ धातु से ἀῤῥαφο
और περι और 'PE धातु से περιῤῥο
होगा। देखो १०।

२५। जब β वा φ के पीछे σ आता है
तब वह π होके ψ बन जाता है और
वैसाही जब γ वा χ के पीछे σ आ·
ताहै तब वह κ होके ξ बन जाताहै।
यथा Ἀραβ और σι मिलके Ἀραψι
और ὀνυχ और σι मिलके ὀνυξι
होता है। देखो २०।

२६। M से पहिले πβφ प्रायः μ और κχ
प्रायः γ और τδθζ प्रायः σ होते हैं।

यथा ΤΥΠ धातु से τετυμμενο और ΤΥΧ धातु से τετυγμαι और ἈΔ धातु से ᾀσματ और βαπτιζ से βαπτισματ होते हैं।

२७। ΤΔΘΖ इसरे τ का θ के पहिले σ होते हैं और σ के पहिले प्राय छूट जाते हैं। यथा ΠΙΘ धातु से πειστεο और ΦΡΑΔ धातुसे φρασι और σωματ से σωμασι होते हैं।

२८। Ν कण्ठस्थ अक्षरों के पहिले γ (अर्थात् ङ्) और ओष्ठस्थ अक्षरों के पहिले μ और λ μ ν ρ के पहिले इन्हीं के सदृश और प्रत्ययों के σ के पहिले प्राय लुप्त होजाता है। यथा συν और γενες मिलके συγ-γενες और συν और ΦΕΡ मिलके συμφερ और ἐν और ΜΕΝ मिलके ἐμμεν और δαιμον और

σι मिलके δαιμοσι होते हैं। प-
रन्तु ἐν उपसर्ग ρ और σ के पहिले
आप नहीं बदलता है।

२५। जब ντ νδ νθ के पीछे σ
आता है तब इनका लोप होता है औ-
र अवश्य ह्रस्व α ι υ दीर्घ और
अवश्य ε वा ο यथाक्रम ει वा ου
हो जाता है। यथा παντ से πασι
और ζευγνυντ से ζευγνυσι
और τυπτοντ से τυπτουσι
और λεχθεντ से λεχθεισι और
ΠΕΝΘ से πεισομαι होते
हैं।

अथ स्वरों की संधि।

२६। बहुत ह्रस्वस्वरात्मक शब्द ऐसे हैं कि

जब दूसरे शब्द के आदि में कोई स्व
र आता है तब वह अन्तिम स्वर लुप्त
होता है। देखो १६ और १८ ॥

३१। थोड़े शब्द ऐसे हैं कि उन का
अन्तिम स्वर वा संयुक्त स्वर अगिले
शब्द के आदिम स्वर से मिल जाता
है। यथा και ἐγω मिलके
κἀγω और το ἐναντιον
मिलके τοὐναντιον होते हैं।

३२। जब एक शब्द के निर्माण में दो
स्वर वा संयुक्त स्वर एक साथ आ-
ते हैं तब निम्नलिखित चक्र के अ-
नस्वार मिल जाते हैं। यथा।

	आदिम स्वर									
अन्तिम स्वर	α	ε	η	ι	ο	ω	αι	ει	οι	ου
α	α	α	α	ᾳ	ω	ω	αι	ᾳ	ῳ	ω
ε	η वा ει	ει वा η	η	ει	ου	ω	ῃ	ει	οι	ου
η		η		ῃ						
ι	ι	ι		ι						
ο	ω वा ου	ου	ω	οι	ου	ω		ου	οι	ου
υ	υ	υ								
ω				ῳ						

जानना चाहिये कि ε α मिलके प्राय η
होताहै केवल थोड़े रूपों में ε ι और ε ε
मिलके प्राय ε ι केवल कभी २ η होता
है और ο α मिलके प्राय ω पर थोड़े
ही रूपों में ο υ होता है। ऊपर के च-
क्र में जहां जहां कुछ नहीं लिखा गया
तहां जानना चाहिये कि संधि नहीं हो-
ती है।

इति संधि का वर्णन।

अथ क्रियाओं का वर्णन।

तृतीय अध्याय धातु पाद।

३२। क्रियाओं के विषय में तीन बातें समु-
झनी आवश्यकहै अर्थात् १म धातु २य प्रत्य-
य ३य प्रत्ययों के लगाने के पहिले धातु

के कौन से रूप होते हैं। धातु तो घर की नेव के सदृश है प्रत्ययों के लगाने के निमित्त धातु में जो कुछ लगता है सो घरकी भित्तियों से मिलता है और प्रत्ययों को छप्पर से मिलान कर सकते हैं।

३३। अब मुख्य २ धातु अर्थ समेत नीचे लिखते हैं।

’ΑΓ	ले आ वा ले जा.	’ΑΛΛΑΓ	बदलदे
’ΑΓ	तोड़	‘ΑΛΟ	पकड़ा जा
’ΑΓΕΡ	इकट्ठा कर	‘ΑΜΑΡΤ	चूक
’ΑΕΙΔ	गा	’ΑΜΕΙΒ	बदल
’ΑΙΡΕ	ले	’ΑΝΥ	पूराकर
’ΑΙΣΘ	जानले	’Απ	लगा (आप)
’ΑΙΤΕ	मांग	’ΑΡ	उठा
’ΑΚΟΥ	सुन	’ΑΡ	जोड़
‘ΑΛ	कूद	’ΑΡΕ	प्रसन्न कर
’ΑΛΕΞ	बचा	’ΑΡΚΕ	रक्षा कर वा बर्जन हो
’ΑΛΙΦ	लेप (लिप)		

ʼΑΡΝΕ	अस्वीकार कर	ʼΑΣΚΕ	अभ्यास कर
ʼΑΡΠΑΓ	छीन	ʼΑΥΞ	बढ़ा
ʼΑΡΧ	पहिला हो वा आरम्भ कर		
ΒΑ	जा (गा)	ΒΛΕΠ	देख
ΒΑΛ	डाल	ΒΟΣΚ	चरा
ΒΑΠ	डुबो	ΒΟΥΛ	चाह
ΒΑΣΤΑΓ	उठा	ΒΡΕΧ	भिंगा
ΒΑΣΤΑΔ	उठा	ΒΡΟ	खा
ΒΛΑΒ	हानि कर	ΒΛΑΣΤ	उग
ΓΑΜ	विवाह कर	ΓΕΝ	हो (जन)
ΓΕΛΑ	हंस	ΓΝΟ	जान (ज्ञा)
ΓΕΜ	भर जा	ΓΡΑΦ	लिख
ΔΑΚ	दान्त से काट (दंश)	ΔΕΜ	घर बना
ΔΑΜ	वशीभूत कर (दम)	ΔΕΡ	चर्म निकाल
ΔΕ	बान्ध	ΔΕΧ	ग्रहण कर
ΔΕ	अभाव हो	ΔΙ	डर
ΔΕΙΚ	दिखा (दिश)	ΔΙΔΑΧ	सिखा

ΔO दे (दा)
ΔOK जान पड़
ΔPA भाग (द्रु)

ʽE डाल
ʽE पहिन
'EA रहन दे
'EΓEP जगा
ʽEΔ बैठ (सद्)
'EΔ खा (अद्)
'EΘ रीतिकी भान्तिसे कर
'EIK समान हो
'EIK वशीभूत हो
'EIPΓ बन्द कर
ʽEΛ ले
'EΛA हांक
'EΛEΓX खण्डन कर
ʽEΛK घसीट

ZA जी (जीव)
ZE उबल

ΔPA कर
ΔΥ प्रवेश कर
ΔΥNA सक

'EΛΠ आशा कर
'EΛΥΘ जा वा आ
'EM पेटमें से फेंकदे (वम)
'ENEK उठा
'EΠ कह (वच्)
ʽEΠ पीछे होले
'EP कह
'EP पूछ
'EPX जा वा आ
'EΣ हो रह (अस्)
ʽEΥΔ सो
ʽEΥP ढुंढके पा
'EΥX प्रार्थना कर
'EXΘ बैर कर

ZHTE ढूंढ
ZΥΓ जोड़ (युग)
ZΩ कटि बांध

'HΔ आनन्द कर (स्वाद)

'HK आ चुक

'HΣ बैठ (आस)

ΘΑΝ मर

ΘΑΥ आश्चर्य कर

ΘΕ रख (धा)

ΘΕΑ ध्यान से देख

ΘΕΛω 'ΕΘΕΛ चाह

ΘΕΥ दौड़ (धाव)

ΘΙΓ छू

ΘΡΑΥ तोड़ डाल

ΘΥ यज्ञ कर (हु)

'Ι जा (इ)

'ΙΑ चंगा कर

'ΙΔ देख वा जान (विद)

'ΙΚ पहुंच

'ΙΛΑ प्रसन्न कर

ΚΑΛΕ बुला वा नाम रख

ΚΑΛΥπ ढांप

ΚΑΜ थक (श्रम)

ΚΑΜπ झुका

ΚΑΥ जला

ΚΕΙ पड़ा रह

ΚΕΡ मूंड़

ΚΙΝΕ चला

ΚΛΑ तोड़

ΚΛΑΥ रो

ΚΛΕΙ बन्द कर

ΚΛΙΝ झुका

ΚΛΥ सुन (श्रु)

ΚΟΙΜΑ सुला

ΚΟπ काट

ΚΟΡΕ तृप्त कर

ΚΟΜΙΖ ले आ वा प्राप्त कर

ΚΡΑ मिला

ΚΡΑΓ चिल्ला
ΚΡΕΜΑ लटका
ΚΡΙΝ विचार कर
ΚΡΥΒ छिपा (गुप)

ΚΤΑ पा
ΚΤΕΝ वध कर
ΚΥ गर्भिणी हो
ΚΥΦ झुक

ΛΑΒ पा (लभ)
ΛΑΘ छिप
ΛΑΛΕ बोल
ΛΑΜΠ चमक
ΛΑΧ भाग्य से पा

ΛΕΓ कह
ΛΙΠ छोड़
ΛΟΥ स्नान कर
ΛΥ गांठ आदि खोल

ΜΑΝ उन्मत्त हो (मद)
ΜΑΘ सीख
ΜΑΧ लड़
ΜΕΘΥ मतवाला हो
ΜΕΛ चिन्तायमान हो
ΜΕΛΛ करने पर हो

ΜΕΝ रह ([illegible])
ΜΕΡ भाग पा
ΜΗΝΥ बता
ΜΙΓ मिला (मिश्र)
ΜΙΜΕ नक़ल कर
ΜΝΑ स्मरण कर (म्ना)
ΜΥ आंख मूंद

ΝΕ कात (नह)
ΝΕΜ बांट
ΝΕΥ पैर

ΝΕΥ सिर झुकाके इङ्ग.कर
ΝΙΠ कोई अङ्ग धो

’OΔ गर्वित हो
’OI समझ
’OI उगा
’OIΓ द्वार आदि खोल
’OIK चला जा
’OΛ नाश हो वा कर
’OM किरिया खा

’ONA लाभदायक हो
’OΠ देख
’OPA देख
’OPEΓ आगे की ओर बढ़
’OPΥΓ खोद
’OPXE नाच
’OΦEΛ धार

ΠAΓ दृढ़ता से लगा
ΠAΘ सुखदुःख भोग
ΠAI मार
ΠAIΓ ठट्ठा कर
ΠAΥ करने को छोड़
ΠEMΠ भेज
ΠEΠ पका (पच)
ΠEPΘ भूमि आदि नाश कर
ΠET गिर (पत)
ΠET उड़
ΠETA फैला
ΠI पी (पा)

ΠIΘ मना
ΠΛA भरदे (पू)
ΠΛAΓ मार
ΠΛAΔ सांचे में ढाल
ΠΛEK मरोड़
ΠΛEΥ नाव पर चल (प्लु)
ΠNEΥ वायु बह
ΠNIΓ गला घोंट
ΠO पी (पा)
ΠOIE कर वा बना
ΠOP चल
ΠPA जला

ΠΡΑ	बेच	ΠΤΥΧ	लपेट
ΠΡΑΓ	काम कर	ΠΥΘ	बूझ
ΠΡΙΑ	कीन	ΠΩΛΕ	बेच
ΠΤΥ	थूक		

‘ΡΑ	छिड़क	‘ΡΙΦ	फेंक (क्षिप)
‘ΡΑΓ	तोड़	‘ΡΥ	बह
‘ΡΑΦ	सी	‘ΡΥ	छुड़ा
‘ΡΕ	कह	‘ΡΩ	बलवान कर
‘ΡΕΠ	गुरुतर हो		

ΣΑΠ	सड़	ΣΠΕΝΔ	तपावन कर
ΣΒΕ	बुझा	ΣΠΕΡ	बो
ΣΕΒ	पूज	ΣΠΕΥΔ	शीघ्र कर
ΣΕΙ	हिला	ΣΤΑ	खड़ा हो
ΣΕΧ	लिये रह	ΣΤΑΓ	बून्द२ होके गिर
ΣΚΕΔΑ	बिथरा	ΣΤΕΓ	ढांपके जला गम्य कर
ΣΚΕΠ	ध्यानसे देख		
ΣΚΗΠ	टेक	ΣΤΕΑ	भेज वा ठीक करके रख
ΣΜΑ	पोंछ		
ΣΠΑ	खींच	ΣΤΕΝ	आह भर (स्तन)

ΣΤΕΡΓ	प्रेम कर	ΣΥΡ	घसीट
ΣΤΕΡΕ	हीन कर	ΣΦΑΓ	बध कर
ΣΤΙΓ	गोद	ΣΦΑΛ	ठोकर खिला
ΣΤΡΕΦ	चूमा	ΣΦΙΓΓ	गला घोंट
ΣΤΡΟ	बिछा (स्तृ)	ΣΧΙΔ	छेद (छिद)
ΣΤΥΓ	बैर कर	ΣΩ	बचा
'ΤΑΓ	क्रमसे रख	ΤΙ	बदला दे
ΤΑΡΑΧ	घबरा	ΤΙΔ	नोच
ΤΑΦ	क़बर दे	ΤΛΑ	दुख उठा
ΤΕΓΓ	भिगो	ΤΡΑΓ	खा
ΤΕΚ	जन	ΤΡΕΠ	फेर
ΤΕΜ	काट	ΤΡΕΦ	पोस
ΤΕΝ	तान (तन)	ΤΡΕΧ	दौड़
ΤΕΡ	घिस (घृ)	ΤΡΩΓ	खा
ΤΕΡΠ	आनन्द दे(तृप)	ΤΥΠ	मार
ΤΗΡΕ	रक्षा कर(त्रा)	ΤΥΧ	अदृष्टसे हो
'Υ	बरस	'ΥΦΑΝ	बिन
ΦΑ	कह (भा)	ΦΑΓ	खा (भक्ष)

ΦAN	चमक	ΦPAΓ	रोक
ΦEN	वधकर (हन)	ΦPAΔ	कह
ΦEP	उठा (भृ)	ΦPIK	रोमाञ्चित हो
ΦΘA	पहिले कर वा हो	ΦΥ	हो (भू)
ΦΘEΓΓ	शब्द कर	ΦΥΓ	भाग
ΦΘEP	बिगड़	ΦΥΛAK	पहरा दे
ΦΘI	घट वा क्षय हो	ΦΥP	सान
ΦΛEΓ	जल		
XAN	जंभा	XPI	तेल मल
XAP	आनन्द कर (हृष)	XPA	काम में ले आ
XAPAK	पत्थर आदि में खोद	XPE	आवश्यक हो
		XPΩ	रंग दे
XPA	ईश्वरवाणी कह	XΥ	उण्डेल
ΨA	मल	ΨEΓ	निन्दा कर
ΨAΛ	वीणा आदि बजा	ΨEΥΔ	झूठ कह
ΨAΥ	छू	ΨΥX	ठण्ढा कर
ΩΘ	ढकेल		

३४। इन धातुओं से अधिक और बहुत क्रियाएं हैं जो धातुओं वा नामों से प्राय α ε ο ευ αδ ιδ υδ αν υν लगाने से बनाये हुए हैं। इन का विभेद दिखाने के लिये हम धातुओं को बड़े २ अक्षरों से लिखेंगे और अन्यान्य क्रियाओं को छोटे २ अक्षरों से।

चतुर्थ अध्याय — क्रियाओं के रूप।

३५। पहिले जानना चाहिये कि क्रिया की भावना जो मन में होती है सो बहुत प्रकारों से हो सकती है परन्तु किसी भाषा में एक २ प्रकार की भावना एक २ रूप से प्रगट नहीं किई जाती है। क्रिया की भावना विशेष छः भान्ति के प्रकारों से होती है अर्थात् कर्तृत्व भाव काल पुरुष वचन लिङ्ग

२६। कर्त्तृत्व तीन प्रकार का है अर्थात् सकर्त्तृक परकर्त्तृक आत्मकर्त्तृक। सकर्त्तृक क्रिया वह है जो कर्त्ता के अधीन है यथा मैं बनाऊंगा सिंह आताहै। परकर्त्तृक क्रिया वह है जो कर्त्ता के अधीन नहीं हैं चाहे कर्त्ता गुप्त चाहे प्रगट हो यथा रोटी खाई गई पिता से पुत्र मारा जावे। आत्मकर्त्तृक क्रिया वह है जिसका कर्त्ता और कर्म्म दोनों एकही है यथा वे आप को भुलातेहैं अपने लिये मंगवा लो। सकर्त्तृक क्रिया भी दो प्रकार की है अर्थात् सकर्म्मक और अकर्म्मक।

२७। भाव बहुत प्रकार का है जैसा वार्त्ता इच्छा शक्ति आज्ञा प्रार्थना अभिप्राय पुनः पुनःकरण हेतुत्व नियम संज्ञा विशेषण इत्यादि।

२८। काल मुख्य जो तीन हैं अर्थात भूत भ-

विष्यत् वर्त्तमान परन्तु इन तीनों के तीन २ प्रकार हैं क्योंकि प्रत्येक काल में तीनों काल का सम्बन्ध और अपेक्षा हो सकती है। और २ वर्त्तमान दो और प्रकार का है अर्थात् व्यवहार-वर्त्तमान और विशेष-वर्त्तमान। सो सब मिलाके बारह प्रकार के काल हैं। यथा।

भूतकाभूत		वर्त्त॰ का भूत		भवि॰ काभूत	
	व्यव॰ वर्त्त॰		व्यव॰ वर्त्त॰		व्यव॰ वर्त्त॰
भूत का		वर्त्त॰ का		भवि॰ का	
	वि॰ वर्त्त॰		वि॰ वर्त्त॰		वि॰ वर्त्त॰
भूतका भविष्यत्		वर्त्त॰ का भविष्यत्		भवि॰का भविष्यत्	

३९। पुरुष तीन हैं अर्थात् प्रथम मध्यम उत्तम।

४०। वचन तीन हैं अर्थात् एकवचन द्विवचन बहुवचन।

४१। लिङ्ग तीन हैं अर्थात् पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग क्लीव ।

४२। अब कहना चाहिये कि इन मानसिक भावनाओं में किस २ का यवनभाषा में एक २ रूप है ।

लिङ्ग क्रिया के रूप से प्रगट नहीं होताहै ।

वचन प्राय रूप से प्रगट होता है सदा नहीं। इसकाभेद पीछे जान पड़ेगा ।

पुरुष सर्व्वदा रूपसे प्रगट होताहै ।

४३। क्रिया के जिन रूपों में केवल वचन और पुरुष का अन्तर है और किसी प्रकार का नहीं उन रूपों का समूह लकार कहलाता है। यवन भाषा में सतरह लकार हैं अर्थात् लट् लङ् १ लुङ् २ लुङ् १ लृट् २ लृट् १ लुट् २ लुट् १ लृट् २ लृट् १लिट् २ लिट् ३ लिट् १ लोङ् २ लोङ् ३ लोङ् लिङ्ट् । इन लकारों का अर्थ काल से

कुछ २ सम्बन्ध रखताहै सम्प्राप्ति नहीं ।

४४। लट् का अर्थ वर्त्तमान के वर्त्तमान का है। जैसा वह जाता है।

लङ् का अर्थ भूत के वर्त्तमान का है। जैसा वह जाता था ।

तीनों लिट् का अर्थ वर्त्तमान के भूत काहै। जैसा वह गया है ।

दोनों लट् और दोनों लृच् का अर्थ वर्त्तमान के भविष्यत् का है । जैसा वह जावेगा ।

तीनों लोङ् का अर्थ भूत के भूत का है। जैसा वह गया था ।

लिट्ट् का अर्थ भविष्यत् के भूत का है। जैसावह जा चुकेगा ।

दोनों लङ् और दोनों लृच् का अर्थ किसी विशेष कालका नहीं है बरन् यही बताते हैं कि क्रिया का व्यापार किसी विशेष समय

में हुआ वा होनेवाला है। तथापि वार्त्ता और
१ विशेषण भावों में उन का अर्थ सदा भ
त काल का है।

४५। १ और २ लच् का अर्थ प्राय सदा पर-
कर्त्तकहै और १ और २ लट् सकर्त्तक वा
आत्मकर्त्तक है।

३ लिट् और ३ लोट् का अर्थ प्राय परक-
र्त्तक वा आत्मकर्त्तकहै और १ और २ लि
ट् और १ और २ लोट् सकर्त्तक हैं।

१ और २ लुच् का अर्थ प्राय परकर्त्तक
है और १ और २ लुट् सकर्त्तक वा आत्म
कर्त्तक है।

लिट्ट का अर्थ परकर्त्तक वा आत्मकर्त्त
क है।

लट् और लुट् परकर्त्तक सकर्त्तक वा आ
त्मकर्त्तक हैं

४६। यवनभाषा में भावों के केवल छः ही

पृथक रूप हैं अर्थात् वार्त्ता संज्ञा विशेषण लेट् लिङ् लोट् । पहिले तीनों का अर्थ उनके नामों ही से प्रगटहै।

लोट् का अर्थ आज्ञा वा प्रार्थना है ।

लेट् के बहुत अर्थ हैं परन्तु वह प्राय लट् लिट् लुट् लृच् के वार्त्ता भाव के पीछे वाक्य के अधीन अङ्ग में आताहै। यथा मैं आया हूं कि आप से भेंट करूं यहां करूं यवनभाषा में लेट् भावमें होगा ।

लिङ् के भी बहुत अर्थ हैं विशेष कर के आशीर्व्वाद का परन्तु वह प्राय लट् लङ् लृच् लोङ् के वार्त्ता भाव के पीछे वाक्य के अधीन अङ्गमें आता है। यथा मैं गया था कि आपसे भेंट करूं यहां करूं यवनभाषा में लिङ् भाव में होगा।

४७। वाच्ची भाव के सब लकार मिलतेहैं। संज्ञा विशेषण और लिङ्ग भावों के लङ् और लोङ् को छोड़ के और सब लकार मिलतेहैं।

लेट् और लोट् में दोनों लट् और दोनों लच् और लिड्ट् नहीं मिलते हैं।

४८। प्रत्यय दो प्रकार के हैं अर्थात् परस्मैपद और आत्मनेपद के प्रत्यय।

लट् लङ् १ लङ् २ लङ् १ लट् २ लट् के प्रत्यय दोनोंपद के होते हैं। १ लच २ लच १ लिट् २ लिट् १ लोङ् २ लोङ् के प्रत्यय केवल परस्मैपद के होते हैं।

१ लच २ लच ३ लिट् ३ लोङ् लिङ्ङ् के प्रत्यय केवल आत्मनेपद के

होते हैं ।

४९ । १ लच २ लच को छोड़के और सब लकारों में परस्मैपद का अर्थ सकर्त्तृक है और आत्मनेपद का अर्थ परकर्त्तृक वा आत्मकर्त्तृक है ।

पञ्चम अध्याय — भित्तियों का निर्माण।

५० । हम कह आये हैं कि क्रिया का धातु घरकी नेव के समान है और प्रत्यय उस के छप्पर के समान है और इन प्रत्ययों के लगाने से पहिले जो कुछ धातु में लगता है सो उस की भित्तियों के समान है ।

प्रत्यय जो हैं सो पुरुष वचन भाव पद के अनुसार पृथक २ हैं और प्रत्ययों के लगने से पहिले जो धातु के रूप होते हैं सो लकारही के अनुसार पृथक २ हैं।

सो अब हम लकारों के रूप लिखते हैं।

५१ १ लट्

थोड़ीही क्रियाओं में मिलताहै। वह धातु से कुछ भी भिन्न नहीं है।

५२। १ लुङ्

का मध्यस्वर बहुत क्रियाओं में धातु के मध्यस्वर से भिन्न है। यथा TPEπ से τραπ ΣΤΕΛ से σταλ KTEN से κταν। और इससे अधिक वार्त्ता

भाव में उस के आदि में आगम होता है।

अथ आगम का वर्णन।

५३। आगम लङ् १ लुङ् २ लङ् १ लच २ लच १ लोङ् २ लोङ् ३ लोङ् के वाजी भावमें होताहै।

५४। मूल आगम ε है। उस के लगाने में ये नियम स्मरण रखना चाहिये।

१। जब धातु के आदि में ρ है तब ε के लगाने से वह दुहराया जाता है। यथा 'PAΦ से ἐῤῥαφ।

२। जब धातु के आदि में स्वर वा संयुक्त स्वर है तब संधि के ठीक नियम से नहीं वरन् निम्नलिखित प्रकारों से

इस स्वर वा संयुक्त स्वर से ε मिलता है।

यथा ।

ε और α मिलके η होते हैं। 'AMAPT

से ἡμαρτ ।

ε और ε मिलके प्राय η होते हैं। ΕΛΕΓΧ

से ἠλεγχ ।

परन्तु कितनी क्रियाओं में ει । 'ΕΠ से

εἰπ ।

ε और η मिलके η होते हैं। 'HK से ἡκ

ε और ι मिलके दीर्घ ι होते हैं। 'IK

से ἰκ ।

ε और ο मिलके ω होते हैं। 'ΟΛ से ὠλ

ε और υ मिलके दीर्घ υ होते हैं 'Υ

से ὑ ।

ε और ω मिलके ω होते हैं। 'ΩΘ से

ὠθ

ε और αυ मिलके ηυ होतेहैं ΑΥΞ से ηὔξ।

ε और αι मिलके ῃ होतेहैं। ΑΙΣΘ से ᾐσθ।

ε और ει मिलके ει होतेहैं। ΕΙΚ से εἶχ।

ε और οι मिलके ῳ होतेहैं 'ΟΙΚ से ᾤχ।

ε और ευ मिलके ευ वा ηυ होतेहैं। 'ΕΥΡ से εὗρ। 'ΕΥΧ से ηὔχ।

ε और ου मिलके ου होतेहैं। οὐτάδ से οὐτάδ।

३। इन स्वरादिक धातुओं का आगम ε से होता है। ΑΓ (तोड़) ἉΛΟ, 'ΕΙΚ 'ΕΛΠ 'ΟΡΑ 'ΩΘ। यथा ἑαγ ἑαλο।

४। ΒΟΥΛ ΔΥΝΑ ΜΕΛΛ का आगम ε से हो सकताहै परन्तु प्रायः η से होताहै। यथा ἠβουλ ἠδυνα।

५५। ἈΓ (लेजा) और ἈΡ (जोड़) का १ लुङ् ἤγαγ ἤραρ हैं।

५६। २ लुङ्

में धातु के अन्त में σ लगताहै। यथा ΤΥΠ से τυφ ΛΕΓ से λεξ ΤΙ से τισ ΠΕΡΘ से περσ ΦΡΑΔ से φρασ।

१। जब धातु के अन्तमें ह्रस्व स्वर है तब वह प्राय दीर्घ होता है अर्थात् ε η होताहै। यथा ΠΟΙΕ से ποιησ। α प्रायः η होताहै ὈΝΑ से ὀνησ। पर कभी २ α रहताहै। ἘΑ से ἑασ। ο ω होताहै। ΓΝΟ से γνωσ।

२। इन धातुओं के २ लुङ् में मध्यस्वर दीर्घ होता है। ΛΑΧ से ληξ ΛΑΒ से ληψ ΛΑΘ से λησ ΠΑΓ

से πηξ ‘PΥ(बह) से ῥευσ ‘PAΓ
से ῥηξ TΥX से τευξ ΦΥΓ से
φευξ ΠΙΘ से πειθ ΔΙ से
διεσ । ’OΦΕΛ XAP ।

३। इनधात्वन्तों का २ लूट σ के लगाने के
पहिले अपने अन्त में ε लगाना है सो η
बन जाता है।

ΑΙΣΘ ’ΑΛΕΞ ‘ΑΜΑΡΤ ’ΑΥΞ
ΒΛΑΣΤ ΒΟΣΚ ΒΟΥΛ ’ΕΜ
‘ΕΥΔ ‘ΕΥΡ ΘΕΛ ΜΑΘ ΜΑΧ
ΜΕΛ ΜΕΛΛ ’ΟΔ ’ΟΙΧ ’ΟΙ
(समझ) ’ΟΦΕΛ ΧΑΡ ’ΩΘ ’ΙΟΔ
का δ ζ होता है।

४। ΔΑΜ δαμα होके और ‘ΕΛΚ
ἑλκυ होके σ लगाते हैं।

५। कितनी अनेकाङ्गान्वित ‹ अन्त क्रियाओं

का σ निकलभी सकता है। यथा ΚΟΜΙΔ से κομι βιβαδ से βιβα।

५७। २ लङ्

में प्राय वैसाही σ लगता है और ऊपर के ५८।१।२।३।४ में जो कुछ २ लट् के विषय में लिखा है सो २ लङ् में भी घटता है। यथा ΛΕΓ से λεξ ΠΟΙΕ से ποιησ ʽΡΥ से ῥευσ ΟΦΕΛ से ὀφειλησ।

१। प्रस्तुत जिनधातुओं के अन्त में λ μ ν ρ है उन में σ नहीं लगता है वरन् धातु का मध्यस्वर दीर्घ होताहै। यथा ΜΕΝ से μειν ΣΤΕΛ से στειλ।

२। ʽΕ (डाल) ΘΕ ΔΟ में σ के स्थाने κ लगताहै। यथा ἧκ ἔθηκ ἐδωκ वाली भाव में होते हैं।

५८। १ लृङ्

में धातु का मध्यस्वर वैसाही बदलताहै जैसा १ लुङ् में और अन्त में कुछ नहीं लगताहै। यथा τραπ

५९। १ लृच्

में भी धातु का मध्यस्वर वैसाही बदल-ता है और अन्तमें ησ लगताहै। यथा τραπησ।

६०। २ लृच्

में क्रिया के अन्त में θ लगता है। य-था ΛΕΓ से λεχθ।

१।५८।१ में जो कुछ २ लृङ् के विषय में लिखाहै सो २ लृच् में भी करना है। यथा ΠΟΙΕ से ποιηθ। ΠΡΑ (बेच) से πραθ।

२। कितनी स्वरान्त क्रियाओं में σ बीच

में लगाता है। यथा τελε से τελεσθ
ἈΚΟΥ से ἀκουσθ।

३। जिन धातुओं के अन्त में ἐλ ερ εμ
ἐν है वे २ लच में ε को α बदल देते हैं।
यथा ΣΤΕΛ से σταλθ ΣΠΕΡ से
σπαρθ।

४। ΚΡΙΝ ΚΛΙΝ ΤΕΝ ΚΤΕΝ
ΠΛΥΝ का ν २ लच में छूट जाता है।
यथा κριθ κλιθ ταθ κταθ
πλυ।

५। इन धातुओं का २ लच ε लगाके θ ल-
गाते हैं। ΒΟΥΛ ΓΑΜ ΜΕΛ ΝΕΜ
ΟΙ (समझ) यथा βουληθ γαμηθ
οἰηθ।

६१ २लच

में क्रिया ठीक २ लच के अनुसार बदल-
ता है और अन्त में θησ लगता है यथा

ποιηθησ πραθησ τελεσθησ
σπαρθησ χριθησ νεμηθησ।

६२। १ लिट्

के अन्त में x वा महाप्राण लगता है
और आदि में होता है।

अथ अभ्यास का वर्णन।

६३। अभ्यास तीनों लिट् और तीनों लोट् औ
र लिङ्लृट् के सब भावों में होताहै।

६४। उसका अर्थ यह है कि क्रिया का प्र
थम अक्षर दुहराया जाता है और जब
प्रथम अक्षर व्यंजन है तब दोनों के बीच
में ε आ जाता है।

१। जब क्रिया के आदि में ρ है तब ε
दोनों ρ के पहिले ही आता है। यथा
ʽPIφ से ἐῥῥιφ।

२। जब क्रिया के आदि में संयुक्त व्यंजन है तब यह दुहराया नहीं जाता है केवल ε उस के पहिले आता है। यथा ΨΑΛ से ἔψαλχ।

३। जब क्रिया के आदि मे दो व्यंजन है तब प्राय वैसाही होताहै सदा नहीं यथा ΣΠΕΡ से ἔσπαρ। किन्तु ΓΡΑΦ से γεγραφ।

४। ΛΑΒ ΛΑΧ ΜΕΡ ῬΕ में प्रथम अक्षर नहीं दुहराया जाताहै वरन् ει आदि में लगताहै। यथा ΛΑΒ से εἴληφ।

५। जब क्रिया के आदि में स्वर वा संयुक्त स्वर है तब अभ्यास प्राय ठीक ऊपरिलिखित आगम के समान होता है।

६। इन स्वरादिक धातुओं का अभ्यास पहिले स्वर और पहिले व्यंजन के दुह·

राने से होता है तब दूसरा स्वर दीर्घ हो-
ता है।

ΕΓΕΡ से ἐγηγερχ ΕΛΑ से
ἐληλαχ ΕΛΥΘ से ἐληλυθ
ʼΟΛ से ὀλωλ ΕΝΕΚ से ἐνηνοχ
ʼΟΜ से ὀμωμοχ ʼΟΔ से ὀδωδ
ʼΑΛΙΦ से ἀληλιφ ʼΟΡΥΓ से ὀρωρυγ।
७।ΣΤΑ से ἑστα होता है।

६५। जब क्रिया के अन्तमें दन्त्य अथवा
तालव्य व्यंजन अथवा स्वर वा संयुक्त
स्वर है तब χ १ लिट में लगता है औ-
र जब उसके अन्तमें कण्ठस्थ अथवा
ओष्ठस्थ व्यंजन है तब महाप्राण लगता
है अर्थात् अन्त्य व्यंजन महाप्राणान्वित
होता है। यथा ΨΑΛ से ἐψαλχ
ΠΝΕΥ से πεπνευχ ΤΥΠ से
τετυφ ΛΕΓ से λελεχ।

१। χ से पहिले δ θ छूट जाते हैं। यथा ΦΡΑΔ से πεφραχ।

२। जो कुछ ५८।१ में २ रूढ़ के विषय में लिखा है सो १ लिट् में भी घटता है। यथा ΓΝΟ से ἔγνωχ।

३। इन धातुओं के १ लिट् में मध्यस्वर दीर्घ होता है। ΛΑΧ से εἴληχ ΛΑΘ से λεληθ ΛΑΒ से εἴληφ ΤΥΧ से τετευχ ΠΙΘ से πεπειχ ΔΙ से δεδοιχ।

४। इन धातुओं का १ लिट् ε लगाके χ लगाते हैं। ἉΜΑΡΤ से ἡμαρτηχ ΜΑΘ से μεμαθηχ ΜΕΝ से μεμενηχ ΝΕΜ से νενεμηχ ΧΑΡ से κεχαρηχ ὈΛ से ὀλωλεχ

५। जो कुछ ६०।३ में २ लुङ् के विषय

में लिखाहै सो १ लिट् में भी घटता है। यथा ΣΠΕΡ से ἑσπαρχ।

८। जो कुछ ६०।४ में २ लुच् के विषयमें लिखा है सो १ लिट् में भी घटता है। यथा KPIN से κεκριχ।

८८। २लिट्

के अन्तमें कुछ नहीं लगता है परन्तु मध्यस्वर प्राय किसी न किसी प्रकार से बदलता है अर्थात्।

१। जब मध्यस्वर ε है तब ο होताहै। यथा ΦΘΕΡ से ἐφθορ ΓΕΝ से γεγον।

२। जब ι है तब οι होता है। यथा ΛΙΠ से λελοιπ।

३। जब और कोई ह्रस्व स्वरहै तब प्राय बढाया जाताहै। यथा ΦΥΓ से πεφευγ 'ΟΔ से ὀδωδ।

४। ΛΑΧ से λελογχ ΠΑΘ से πεπονθ 'ΡΓ से ἐῤῥωγ।

६७। ३लिट्

के अन्तमें प्राय कुछ नहीं लगताहै परन्तु।

१।५८।१ में जो कुछ लिखाहै सो ३लिट् में भी घटता है यथा πεποιη।

२।६०।२ में जो कुछ लिखाहै सो ३ लिट् में भी घटताहै यथा ΧΡΙ से κεχρισ ΓΝΟ से ἐγνωσ।

३।६०।३ में जो कुछ लिखाहै सो ३ लिट् में भी घटता है। यथा ΣΤΕΛ से ἐσταλ।

४।६०।४ में जो कुछ लिखा है सो ३लिट् में भी घटता है। यथा ΤΕΝ से τετα।

५। ΤΡΕΠ ΤΡΕΦ ΣΤΡΕΦ का ε α होता है। यथा ἐστραφ।

६। ΒΟΥΛ ΜΑΧ 'ΟΙΧ· ΧΑΡ के

θνησκ βρωσκ।

ΔΙΔΑΧ का χ लुप्त होके διδασκ होता है।

७। इन धातुओं का लट् अन्त में ισκ लगता है।

ἉΛΟ ἙΤΡ।

Ἁλο का ο लुप्त होके ἁλισκ होता है।

८। इन धातुओं का लट् अन्त में τ लगता है।

ἈΠ ΒΑΠ ΒΛΑΒ ΚΑΛΥΒ ΚΑΜΠ ΚΟΠ ΚΡΥΒ ΚΥΦ ῬΑΦ ῬΙΦ ΠΕΠ ΝΙΦ ΤΑΦ ΣΚΕΠ ΣΚΗΠ ΤΕΚ ΤΥΠ।

९। इन धातुओं का लट् अन्त में ν लगता है।

ΔΑΚ ἘΛΑ ΚΑΜ ΠΙ ΤΕΜ ΦΘΑ।

Ἐλα ἐλαυν होता है।

न्त प्राय उसमें धातु किसी न किसी प्र·
कारसे बढ़ाया जाताहै चाहे मध्यमें कुछ
मिला देने से चाहे अन्तमें कुछ लगा देने
से चाहे दोनों प्रकार से । बहुत थोड़ी क्रि·
याओं में लट् धातु से छोटा भी है ।

१। इन धातुओं का लट् अन्तमें νυ लगा·
ता है । 'ΑΓ (तोड़ु·) ΔΕΙΚ 'ΕΙΡΓ
ΖΥΓ ΜΙΓ 'ΟΙΓ 'ΟΜ ΠΑΓ ῬΑΓ।
ΠΑΓ πηγνυ ῬΑΓ ῥηγνυ होते हैं।

२।'ΟΛ λ को दुहराके ὀλλυ होताहै।

३। इन धातुओं का लट् अन्तमें γνυ ल·
गाताहै ।

'Ε (पहिन) ΖΩ ΚΡΑ ΚΟΡΕ ΚΡΕΜΑ
ΠΕΤΑ 'ΡΩ ΣΒΕ ΣΚΕΔΑ
ΣΤΡΟ ΧΡΩ।
ΚΡΑ χερο·ννυ और ΣΤΡΟ
στορεννυ वा στρωννυ होतेहैं।

४। इन धातुओं का लट् अन्त में αν लगता है। Ἀ ΑΙΣΘ ʿΑΜΑΡΤ ΒΛΑΣΤ ʾΕΧΘ ʾΑΥΞ ΘΙΓ ΛΑΧ ΛΙΠ ΛΑΒ ΛΑΘ ΜΑΘ ΠΥΘ ΤΥΧ।

ΘΙΓ से लेके ΤΥΧ तक इन सभों के मध्यस्वर के पीछे सानुनासिक व्यंजन लगता है। यथा θιγγαν λαμβαν λανθαν τυγχαν।

५। इन धातुओं का लट् अन्त में ιν लगता है।

ΒΑ ʿΡΑ। यथा βαιν ῥαιν।

६। इन धातुओं का लट् अन्त में σκ लगता है।

ʾΑΡΕ ΒΡΟ ΓΝΟ ΔΙΔΑΧ ΔΡΑ(भाग) ΘΑΝ ʿΙΛΑ ΜΕΘΥ ΜΝΑ ΠΡΑ(बेच)। ΘΑΝ θνα होता है और वह और ΒΡΟ ΓΝΟ ΜΝΑ के स्वर दीर्घ होते हैं। यथा

३ लिट् में ε लगताहै। यथा μεμαχη।

६८। १ २ ३ लोङ्

यथाक्रम १ २ ३ लिट् के ठीक समान हैं केवल उनके आदि में आगम लगता है। यथा ἐπεπνευκ ἐλελεχ ἐπεποιηκ ἐπεφευγ ἐλελοιπ ἐχεχρισ ἐμεμαχη।

१। जब लिट् का पहिला अक्षर स्वरवा संयुक्त स्वरहै तब लोङ् उससे कुछ भी भिन्न नहीं है यथा ἐσταλ εἰληφ ἐληλυθ।

६९। लिङ्लट्

३लिट् के ठीक समान है केवल उसके अन्तमें σ लगता है।यथा πεποιησ ἐστραψ।

७०। लट्

थोड़ी क्रियाओं में धातु के समान है पर

१०। IK का लट् अन्त में νε लगाता है।

११। KAT KAAT का αυ αι से बदल-ता है।

१२। ΦΥΓ ἈΛΙΦ ΛΙΠ ΠΙΘ अपना२ मध्यस्वर संयुक्त स्वर से बदल देते हैं अ-र्थात् φευγ ἀλειφ λειπ πειθ होते हैं।

१३। ΣΑΠ का लट् σηπ है।

१४। ΣΩ लट् में ζ लगाता है और जि-तनी क्रियाएं δ- अन्त हैं और γ- अन्तों में से थोड़ी भी लट् में δ γ के स्थाने ζ लगाते हैं। यथा σωζ φραζ κραζ।

१५। बहुत κ- अन्त बहुत χ अन्त और प्रा-य जितनी γ- अन्त क्रियाएं हैं सो लट् में κ χ γ को σσ वा ττ से बद-ल देते हैं। यथा ΦΥΛΑΚ से

φυλασσ वा φυλαττ ΠΤΥΧ से πτυσσ वा πτυττ ΦΡΑΓ से φρασσ वा φραττ।

२६। ΘΕΥ ΝΕΥ ΠΛΕΥ ΠΝΕΥ ʽΡΥ (बह) ΧΥ लट् में अपना २ स्वर वा संयुक्त स्वर ε बनाते हैं अर्थात् θε νε πλε πνε ῥε χε होतेहैं।

२७। ΓΑΜ ΔΟΚ ʼΕΜ ʼΩΘ ΣΤΥΓ का लट् अन्तमें ε लगाता है।

२८। ΔΑΜ का लट् अन्तमें σ लगाता है।

२९। ʼΕΛΚ का लट् अन्तमें υ लगाता है।

३०। इनधातुओं का लट् आदि में अभ्यास पाता है और उसके साथ ι पड़ता है। ΓΕΝ से γιγν ΓΝΟ से γιγνωσκ ΔΟ से διδο ΔΡΑ(भागना) से διδρασκ

'E (डाल) से ἱε ΘΕ से τιθε 'ONA से ὀνινα ΠΛΑ से πιμπλα ΠΡΑ (जला) से πιμπρα ΠΡΑ (बेच) से πιπρασκ ΠΕΤ (गिर) से πιπτ ΤΕΚ से τικτ ΜΝΑ से μιμνησκ ΣΤΑ से ἱστα।

तब ΓΕΝ और ΓΝΟ का मूल γ निकल भी सकताहै। यथा γιν γινωσκ।

२१। बहुत ν-अन्त और ρ-अन्त क्रियाओं का लट् मध्यस्वर को संयुक्त स्वर करदेते हैं। यथा ΚΤΕΝ से κτειν ΜΑΝ से μαιν। सब बनाई हुई αν-अन्त क्रियाओं का लट् वैसाही होताहै।

२२। प्राय λ-अन्त क्रियाओं का लट् λ को दुहराताहै। यथा ΣΤΕΛ से στελλ। किन्तु 'ΟΦΕΛ ὀφειλ होताहै।

२३। 'ΕΔ का लट् ἐσθι है।

२४ ΠΑΘ का लट् πασχ है।

२५। NE का लड़ $\nu\eta\theta$ है।

७१। लङ्

ठीक लङ् के समान होता है। यथा

$\dot{\epsilon}\delta\alpha\kappa\nu$ $\dot{\epsilon}\lambda\epsilon\iota\pi$।

इति भित्तियों का निर्माण।

षष्ठ अध्याय — व्याकरण का लगन।

७२। पहिले हम प्रत्ययों को लिखेंगे ऐसे नहीं जैसे यवनभाषा में मिलते हैं वरन् ऐसे जैसे प्रथम काल में थे जहां तक अनुमान से जाना जाता है।

रूप	पुरुष	परस्मै पद			आत्मने पद		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम रूप	प्र॰	τι	τον	ντι	ται	σθον	νται
	म॰	σι	τον	τε	σαι	σθον	σθε
	उ॰	μι		μεν	μαι	μεθον	μεθα
द्वितीय रूप	प्र॰	τ	την	ντ	το	σθην	ντο
	म॰	σ	τον	τε	σο	σθον	σθε
	उ॰	μ		μεν	μην	μεθον	μεθα
लोट्	प्र॰	τω	των	ντων	σθω	σθων	σθων
	म॰	θι	τον	τε	σο	σθον	σθε
संज्ञा		ν α ι			σ θ α ι		
विशेषण		ν τ			μ ε ν ο		

७३। इस चक्र के विषय में पाठक लोग ती-न बातें देखेंगे ।

१। लोट् में उत्तम पुरुष नहीं है ।

२। परस्मैपद में उत्तम पुरुष का द्विवचन नहीं है ।

३। संज्ञा भाव और विशेषण भावमें पुरुष नहीं और संज्ञाभावमें वचन भी नहीं होता है । क्रिया के विशेषण में तो और २ विशेषणों की नाईं लिङ्ग वचन कारक होते हैं पर इसका वर्णन पीछे होगा ।

४। ऊपरि लिखित प्रत्ययों के देखने से ज्ञान पड़ेगा कि उनमें बहुत सम्बन्ध है। उत्तम पुरुष सदा μ से आरम्भ होता है ।

प्रथम पुरुष के एकवचन से उसका बहु वचन प्राय ν के आदि में लगाने से बनाहै ।

आत्मनेपद का प्राय प्रत्येक रूप परस्मैपद के उसी रूप से उसे कुछ बढ़ाने से बना है। यथा τι से ται μεν से μεθα τω से σθω।

५। पण्डितों को स्पष्ट देख पड़ेगा कि यवनक्रिया संस्कृत क्रिया से कितना मिलता है।

७४। ये प्रत्यय इसी प्रकार से सब क्रियाओं के १ लिट् और १ लोट् में और थोड़ी क्रियाओं के थोड़े और लकारो में भी लगते हैं। अवशिष्ट सब लकारों में प्रत्यय के पहिले कोई सम्बन्धी स्वर आ जाता है।

७५। अब बतावेंगे कि ऊपरिलिखित चक्र के किस २ रूप के प्रत्यय किस २ लकार में लगते हैं।

७६। जिसको हम ने प्रथम रूप कहा है उस रूप के दोनों पद के प्रत्यय इन ल-

कारों में लगते हैं।

लट् के वार्त्ता और लेट् भावमें।

१ और २ लट् के वार्त्ता भावमें।

१ और २ लुङ् के लेट् भाव में।

७७। उसी रूप के परस्मैपदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।

१ और २ लिट् के वार्त्ता और लेट् भाव में।

१ और २ लच् के लेट् भावमें।

७८। उसी रूप के आत्मनेपदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।

३ लिट् के वार्त्ता भाव में।

१ और २ लच् के वार्त्ता भावमें।

लिङ्ङ् के वार्त्ता भावमें।

७९। जिसको हमने द्वितीय रूप कहा है उस रूप के दोनों पद इन लकारों में लगते हैं।

लङ् में ।
लट् के लिङ् में ।
१ और २ लुङ् के वार्त्ता और लिङ् भावमें ।
८० । उसी रूप के परस्मैपदही के प्रत्यय इन
लकारों में लगते हैं ।
१ और २ लिट् के लिङ् में ।
१ और २ लुट् के वार्त्ता और लिङ् में ।
१ और २ लृट् के लिङ् में ।
१ और २ लोङ् में ।
८१ । उसी रूप के आत्मने पदही के प्रत्यय
इन लकारों में लगते हैं ।
३ लोङ् में ।
लिङ्लुट् के लिङ् भावमें ।
१ और २ लृच् के लिङ् भावमें ।
८२ । लोट् के दोनों पद के प्रत्यय इनल-
कारो में लगते हैं ।
लट् के लोट् भाव में ।

१ और २ लुङ् के लोट् भावमें।

८३। उन के परस्मैपदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।

१ और २ लिट् के लोट् भावमें।

१ और २ लट् के लोट् भावमें।

८४। उस के आत्मने पदही के प्रत्यय इन लकारों में लगतेहैं।

१ लिट् के लोट् भावमें।

लिङ्लुट् के लोट् भावमें।

८५। संज्ञा और विशेषण के दोनों पदके प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।

लट् के स॰ और वि॰ भावों में।

१ और २ लुङ् के स॰ और वि॰ भावों में।

१ और २ लट् के स॰ और वि॰ भावों में।

८६। उन के परस्मैपदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।

१ और २ लिट् के स॰ और वि॰ भावों में।

१ और २ लृच् के स॰ और वि॰ भावों में ।

८७। उन के आत्मने पदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं।

३ लिङ् के स॰ और वि॰ भावों में ।

लिङ्ग्ह् के स॰ और वि॰ भावों में ।

१ और २ लृच् के स॰ और वि॰ भावों में।

अथ ३ लिट और ३ लोड्-का वर्णन।

८८। ऊपरिलिखित चक्र के अनुसार आत्मनेपदही के प्रत्यय लगते हैं। केवल बहुवचन का σθων σθωσαν भी हो सकता है। और प्रत्ययों के पहिले इनदो लकारों का अन्तभाग संधि के नियमों से बदलता है। यथा τετυπ और μαι मिलके τέτυμμαι और ἐλελεγ और

σο मिलके ἐλέλεξο और ἐπεφραδ और μην मिलके ἐπεφρασμην और πεπλεχ और μενο मिलके πεπλεγμενο होतेहैं । और व्यंजनान्त क्रियाओं में प्रत्ययके σθ का σ लुप्त हो· ताहै। यथा τετυπ और σθω मि· लके τετύφθω और πεπειθ और σθαι मिलके πεπεῖσθαι होतेहैं । इस से अधिक इन ३ बातों को जानरखो ।

१। प्रत्ययके μ के पहिले दो γ में से एक निकल जाताहै । यथा ΣΦΙΓΓ से ἐσφιγμην ।

२। प्रत्ययके μ के पहिले दो μ में से एक निकलताहै । यथा ΚΑΜΠ का π संधि के नियम के अनुसार μ होजाताहै पर μεθα से मिलके κεκαμμεθα होताहै ।

३। व्यंजनान्त क्रियाओं में और उन स्वरान्त क्रियाओं में भी जो σ लगाते हैं प्रथम और द्वितीय रूप के प्रथम पुरुष का बहुवचन नहीं होताहै और किसी क्रियाके लेट् और लिङ् का कोई रूप नहीं होताहै। इन का अर्थ अन्यप्रकार से प्रगट किया जाता है।

८५। अब इन दो लकारों के उदाहरण देते हैं।

१। स्वरान्त धातु ΠΟΙΕ।

३ लिट्

वाच्यो भाव।

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ πεποίηται	πεποίησθον	πεποίηνται
म॰ πεποίησαι	πεποίησθον	πεποίησθε
उ॰ πεποίημαι	πεποιήμεθον	πεποιήμεθα

लोट् भाव।

प्र· πεποιήσθω	πεποιήσθων	πεποιήσθων· वा σθωσαν
म· πεποίησο	πεποίησθον	πεποίησθε

संज्ञा भाव।

πεποιῆσθαι

विशेषण भाव।

πεποιημενο

३ लोङ्

प्र· ἐπεποίητο	ἐπεποιήσθην	ἐπεποίηντο
म· ἐπεποίησο	ἐπεποίησθον	ἐπεποίησθε
उ· ἐπεποιήμην	ἐπεποιήμεθον	ἐπεποιήμεθα

२। σ लगाने वाला स्वरान्त धातु ΣΕΙ

३ लिट्।

अर्था भाव।

प्र·σέσεισται	σέσεισθον	
म·σέσεισαι	σέσεισθον	σέσεισθε
उ·σέσεισμαι	σεσείσμεθον	σεσείσμεθα

लोट् भाव।

प्र·σεσείσθω	σεσείσθων	σεσείσθωγ- वा σθωσαν
म·σέσεισο	σέσεισθον	σέσεισθε

संज्ञा भाव।

σεσεῖσθαι

विशेषण भाव।

σεσεισμενο

३लोङ्

प्र·ἐσέσειστο	ἐσεσείσθην	
म·ἐσέσεισο	ἐσέσεισθον	ἐσέσεισθε
उ·ἐσεσείσμην	ἐσεσείσμεθον	ἐσεσείσμεθα

ਮ ਕੋਣਸ੍ਯਕਂ ਜਗਾਜ ਧਾਤੁ KPYB

੩ ਲਿਟੁ

ਕਰ੍ਤ੍ਰੀ ਭਾਵ।

ਪ੍ਰ· κέκρυπται	κέκρυφθον	
ਮ· κέκρυψαι	κέκρυφθον	κέκρυφθε
ਉ· κέκρυμμαι	κεκρύμμεθον	κεκρύμμεθα

ਲੋਟੁ ਭਾਵ।

ਪ੍ਰ· κεκρύφθω	κεκρύφθων	κεκρύφθων ਵਾ φθωσαν
ਮ· κέκρυψο	κέκρυφθον	κέκρυφθε

ਸੰਗ੍ਯਾ ਭਾਵ

κεκρῦφθαι

ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਭਾਵ।

κεκρυμμενο

੩ ਲੋਟੁ

ਪ੍ਰ· ἐκέκρυπτο	ἐκεκρύφθην	
ਮ· ἐκέκρυψο	ἐκέκρυφθον	ἐκέκρυφθε
ਉ· ἐκεκρύμμην	ἐκεκρύμμεθον	ἐκεκρύμμεθα

४ कण्ठस्थव्यंजनान्त धातु ἈΛΛΑΓ ।

३ लिट्

वार्त्ता भाव।

प्र· ἤλλακται	ἤλλαχθον	
म· ἤλλαξαι	ἤλλαχθον	ἤλλαχθε
उ· ἠλλαγμαι	ἠλλάγμεθον	ἠλλάγμεθα

लोट् भाव।

प्र· ἠλλάχθω	ἠλλάχθων	ἠλλάχθων वा ἠλλάχθωσαν
म· ἤλλαξο	ἤλλαχθον	ἤλλαχθε

संज्ञा भाव।

ἠλλᾶχθαι

विशेषण भाव।

ἠλλαγμενο

३ लोङ्

प्र· ἤλλακτο	ἠλλάχθην	
म· ἤλλαξο	ἤλλαχθον	ἤλλαχθε
उ· ἠλλάγμην	ἠλλάγμέθον	ἠλλάγμεθα

५। दन्त्यव्यंजनान्त क्रिया σκευαδ।

३ लिट्

वाच्य भाव।

प्र	ἐσκεύασται	ἐσκεύασθον	
म	ἐσκεύασαι	ἐσκεύασθον	ἐσκεύασθε
उ	ἐσκευάσμαι	ἐσκευάσμεθον	ἐσκευάσμεθα

लोट् भाव।

प्र	ἐσκευάσθω	ἐσκευάσθων	ἐσκευάσθων वा σθωσαν
म	ἐσκεύασο	ἐσκεύασθον	ἐσκεύασθε

संज्ञा भाव।

ἐσκευάσθαι

विशेषण भाव।

ἐσκευασμενο

३ लोङ्

प्र	ἐσκεύαστο	ἐσκευάσθην	
म	ἐσκεύασο	ἐσκεύασθον	ἐσκεύασθε
उ	ἐσκευάσμην	ἐσκευάσμεθον	ἐσκευάσμεθα

इति ३ लिट् और ३ लोङ्.का वर्णन।

अथ सम्बन्धिस्वररहित क्रियाओं का वर्णन।

८०। हम कह आये हैं कि १ लिट् और १ लोङ् को छोड़के और २ लकार भी कितनी क्रियाओं में विना सम्बन्धी स्वर के अपने प्रत्यय लगाते हैं। ये लकार लट् लङ् १ लङ् २ लिट् हैं परन्तु केवल वार्त्ता लोट् संज्ञा विशेषण भावों में सम्बन्धी स्वर नहीं आता हो लेट् और लिङ् में आता है।

८१। इन धातुओं का १ लङ् विना सम्बन्धी स्वर के होता है। 'E (डाल) 'ΑΛΟ ΒΑ ΓΝΟ ΔΟ ΤΛΑ ΘΕ ΔΡΑ (भाग) ΔΥ ΣΒΕ ΣΤΑ ΦΘΑ ΦΥ और बनाई हुई क्रिया βιο भी। और केवल लोट् भाव में ΠΙ धातु की भी यही दशा है।

८२। इन धातुओं के लट् और लङ् विना सम्बन्धी स्वरके होते हैं।

ΣΤΑ ΔΟ ΦΕ 'Ε (डाल) ΦΑ ΠΡΙΑ ΔΥΝΑ ΚΡΕΜΑ 'ΟΝΑ ΠΛΑ ΠΡΑ (जला) ΚΕΙ 'ΗΣ और जितनी क्रियाएं लट्में νυ वा ννυ लगातेहैं।

'ΟΙ (समझ) के लट् और लङ् प्राय वैसे ही होते हैं।

९३। ΘΑΝ (θνα होके) के २ लिट् की व ही दशा है।

९४। उक्त क्रियाओं के उक्त लकारों में ऊपरि-लिखित चक्र के प्रत्यय वैसे ही नहीं रहते हैं वरन् न्यूनाधिक बदलतेहैं।

१। τι का τ σसे बदल जाताहै।

२। ντι का ντ σसे बदल जाताहै और उस के पहिले का स्वर दीर्घ होताहै अथवा अपने पीछे α लगादेताहै।

३। σι का ι निकल जाताहै।

४। τ प्रत्यय निकल जाताहै।

५। μ प्रत्यय ν से बदल जाता है।

६। ντ का τ निकलता है और σα ν के प-
हिले लगता है।

७। ντων τωσαν से बदल सकता है।

८। थोड़ी क्रियाओं के १ लङ् में का θι
σ से बदलता है।

२५। उक्त सब क्रियाओं के एकवचन के परस्मै-
पद के भाव में अन्त्य स्वर दीर्घ होता है।
यथा ΔΟ से δω ΣΤΑ से στη।
और ΔΟ और ΘΕ १ लङ् के संज्ञा भा-
व के परस्मैपद में δου और θει होते-
हैं।
और ΣΤΑ ʹΑΛΟ ΓΝΟ βιο ΔΡΑ(भाग)
ΔΥ ΣΒΕ ΤΛΑ ΦΘΑ ΦΥ १ लङ् के ती-
नों वचन के वार्त्ता और लोट् और संज्ञा
के परस्मैपद में अपने स्वर को दीर्घ कर-
ते हैं।

१८ **उदाहरण ।**

२। νυ लगाने वाला धातु MIΓ ।

लट्

वार्ता भाव।

परस्मैपद ।

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र· μίγνυσι	μίγνυτον	μιγνῦσι वा νύασι
म· μίγνυς	μίγνυτον	μίγνυτε
उ· μίγνυμι		μίγνυμεν

आत्मनेपद ।

प्र· μίγνυται	μίγνυσθον	μίγνυνται
म· μίγνυσαι	μίγνυσθον	μίγνυσθε
उ· μίγνυμαι	μιγνύμεθον	μιγνύμεθα

लोट् भाव।

परस्मैपद ।

प्र· μιγνύτω	μιγνύτων	μιγνύντων वा νύτωσαν
म· μίγνυθι	μίγνυτον	μίγνυτε

आत्मनेपद।

प्र· μιγνύσθω	μιγνύσθων	μιγνύσθων वा σθωσαν
म· μίγνυσο	μίγνυσθον	μίγνυσθε

संज्ञाभाव।

पर· μιγνύναι
आ· μίγνυσθαι

विशेषण भाव।

पर· μιγνύντ
आ· μιγνυμενο

लङ्

परस्मैपद।

प्र· ἐμίγνυ	ἐμιγνύτην	ἐμίγνυσαν
म· ἐμίγνυς	ἐμίγνυτον	ἐμίγνυτε
उ· ἐμίγνυν		ἐμίγνυμεν

आत्मनेपद।

प्र· ἐμίγνυτο	ἐμιγνύσθην	ἐμίγνυντο
म· ἐμίγνυσο	ἐμίγνυσθον	ἐμίγνυσθε
उ· ἐμιγνύμην	ἐμιγνύμεθον	ἐμιγνύμεθα

२। ΔΟ

१ लुङ्

वार्त्ता भाव।

परस्मैपद।

प्र·	ἔδω	ἐδότην	ἔδοσαν
म·	ἔδως	ἔδοτον	ἔδοτε
उ·	ἔδων		ἔδομεν

आत्मनेपद।

प्र·	ἔδοτο	ἐδόσθην	ἔδοντο
म·	ἔδοσο	ἔδοσθον	ἔδοσθε
उ·	ἐδόμην	ἐδόμεθον	ἐδόμεθα

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र·	δότω	δότων	δόντων वा δότωσαν
म·	δός	δότον	δότε

आत्मनेपद।

प्र·	δόσθω	δόσθων	δόσθων वा δόσθωσαν
म·	δόσο	δόσθον	δόσθε

संज्ञाभाव।

पर· δοῦναι

आ· δόσθαι

विशेषणभाव।

पर· δοντ

आ· δομενο

लट्

वार्त्ता भाव।

परस्मैपद।

प्र· δίδωσι	δίδατον	διδοῦσι वा διδόασι
म· δίδως	δίδοτον	δίδοτε
उ· δίδωμι		δίδομεν

आत्मनेपद।

प्र· δίδοται	δίδοσθον	δίδονται
म· δίδοσαι	δίδοσον	δίδοσθε
उ· δίδομαι	διδόμεθον	διδόμεθα

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र· διδότω	διδότων	διδόντων वा διδότωσαν
म· δίδοθι	δίδοτον	δίδοτε

आत्मनेपद।

प्र· διδόσθω	διδόσθων	διδόσθων वा διδόσθωσαν
म· δίδοσο	δίδοσθον	δίδοσθε

संज्ञाभाव।

पर· διδόναι

आ· δίδοσθαι

विशेषणभाव।

पर· διδοντ

आ· διδομενο

लङ्

परस्मैपद।

प्र· ἐδίδω	ἐδιδότην	ἐδίδοσαν
म· ἐδίδως	ἐδίδοτον	ἐδίδοτε
उ· ἐδίδων		ἐδίδομεν

आत्मनेपद।

प्र· ἐδίδοτο	ἐδιδόσθην	ἐδίδοντο
म· ἐδίδοσο	ἐδίδοσθον	ἐδίδοσθε
उ· ἐδιδόμην	ἐδιδόμεθον	ἐδιδόμεθα

३। ΣΤΑ

१ लुङ्

वार्त्ता भाव।

परस्मैपद।

प्र·	ἔστη	ἐστήτην	ἔστησαν
म·	ἔστης	ἔστητον	ἔστητε
उ·	ἔστην		ἔστημεν

आत्मनेपद।

प्र·	ἔστατο	ἐστάσθην	ἔσταντο
म·	ἔστασο	ἔστασθον	ἔστασθε
उ·	ἐστάμην	ἐστάμεθον	ἐστάμεθα

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र·	στήτω	στῆτων	στάντων वा στήτωσαν
म·	στῆθι	στῆτον	στῆτε

आत्मनेपद।

प्र·	στάσθω	στάσθων	στάσθων वा σθωσαν
म·	στάσο	στάσθον	στάσθε

संज्ञाभाव।

पर στῆναι

आ· στάσθαι

विशेषणभाव।

पर σταντ.

आ· σταμενο

लट्

वार्त्ता भाव।

परस्मैपद।

प्र·	ἵστησι	ἵστατον	ἱστᾶσι
म·	ἵστης	ἵστατον	ἵστατε
उ·	ἵστημι		ἵσταμεν

आत्मनेपद।

प्र·	ἵσταται	ἵστασθον	ἵστανται
म·	ἵστασαι	ἵστασθον	ἵστασθε
उ·	ἵσταμαι	ἱστάμεθον	ἱστάμεθα

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र·	ἱστάτω	ἱστάτων	ἱστάντων वा ἱστάτωσαν
म·	ἵσταθι	ἵστατον	ἵστατε

आत्मनेपद।

प्र·	ἱστάσθω	ἱστάσθων	ἱστάσθων वा σθωσαν
म·	ἵστασο	ἵστασθον	ἵστασθε·

संज्ञाभाव।

पर ἱστάναι

आ· ἵστασθαι

विशेषणभाव।

पर ἱσταντ

आ· ἱσταμενο

लङ्

परस्मैपद।

प्र·	ἵστη	ἱστάτην	ἵστασαν
म·	ἵστης	ἵστατον	ἵστατε
उ·	ἵστην		ἵσταμεν

आत्मनेपद।

प्र·	ἵστατο	ἱστάσθην	ἵσταντο
म·	ἵστασο	ἵστασθον	ἵστασθε
उ·	ἱστάμην	ἱστάμεθον	ἱστάμεθα

इति सम्बन्धिस्वररहित क्रियाओं का वर्णन ।

अथ सम्बन्धी स्वर का वर्णन ।

६७। पूर्वोक्त क्रियाओं को छोड़के और सब क्रियाओं के ३ लिट् और ३ लोट् को छोड़के और सब लकारों मे प्रत्ययों के पहिले कोई न कोई सम्बन्धी स्वर लग जाताहै। कहीं α कहीं ε कहीं η कहीं ο कहीं ω कहीं αι कहीं ει कहीं οι और कहीं २ इन में से दो साथ २ लगतेहैं अर्थात् οιε ·οιη ειη εε εο εω αιε αιη ειε εια εοιε εοι। और इन से अधिक इन लकारों में ऊपरि लिखित चक्र में के प्रत्यय न्यूनाधिक बदलके लगते हैं।

६८। अब बतावेंगे कि किस २ प्रत्यय के पहिले कौन् २ सम्बन्धी स्वर लगता है।

वार्त्ता भाव में

१। लट् लङ् १ लुङ् २ लृङ् १ लुट् २ लृ-
ट् लिट् के प्रथम पुरुष के बहुवचन और
उत्तम पुरुष के तीनों वचन में ○ लगता है
और उत्तम पुरुष के एकवचन के परस्मैपद
में यह ○ ω होता है ।

२। उन्हीं लकारों के अवशिष्ट रूपों में ε
लगता है ।

३। १ लृट में वैसेही ○ ω ε लगते
हैं और इन के पहिले ε भी लगता है औ-
र संधि से ε○ ○ʊ और εω ω और
εε ει होते हैं ।

४। २ लङ् और १ और २ लिट् के सब रू-
पों मे पूर्वकालमें α लगता था परन्तु अ-
ब प्रथम पुरुष के एकवचन के परस्मैप-
द में ε लगता है और सब रूपों में α

५। १ और २ लोङ् के सब रूपों मे ει
लगता है ।

६।१ और २ लच के सब रूपों में ŋ ल-
गता है ।

९९ । लेट् भाव में

१। वार्त्ता भाव का ᴗ ω और उस का ε
ŋ हो जाता है और उसका ω ज्यों का त्यों
रहता है ।

१०० । लिङ् भाव में

१। जिन क्रियाओं के वार्त्ता भाव में सम्ब-
न्धी स्वर नहीं लगता है उन में से ɑ-
अन्त क्रियाओं के लिङ् के परस्मैपद में ɑ।ŋ
लगता है और ε- अन्त क्रियाओं के लिङ्
के परस्मैपद में ɛ।ŋ लगता है और ᴗ- अन्त
क्रियाओं के लिङ् के परस्मैपद में ᴗ।ŋ लग-
ता है परन्तु द्विवचन में और बहुवचन के
मध्यम और उत्तम पुरुषों में इन का ŋ
छूट भी सकता है और उन के बहुवचन
के प्रथम पुरुष में ŋ ε हो सकता है ।

यथा।

φA के लट् के लिङ् का परस्मैपद।

प्र॰ φαίη	φαιήτην	φαίησαν
म॰ φαίης	φαίητον	φαίητε
उ॰ φαίην		φαίημεν

अथवा

प्र॰ φαίη	φαῖτην	φαῖεν
म॰ φαίης	φαῖτον	φαῖτε
उ॰ φαίην		φαῖμεν

अब इन को छोड़के और सब क्रियाओं और इन के आत्मनेपद को भी जानिये।

२। लट् २ लङ् १ लुङ् २ लुङ् लिट् १ लिट् २ लिट् के परस्मैपद के प्रथम पुरुष के बहुवचन में οισι परन्तु और सब रूपों के दोनों पद में αι लगता है।

३। १ लृट् में εοι और εοιε लगते हैं परन्तु संधिसे ये οι और οιε होते हैं।

किन्तु अथेना नगर की भाषा में αιη सब रूपों में लगता है।

४।२ लुङ् के प्रथम पुरुष के बहुवचन के परस्मैपद में αιε परन्तु और सब रूपों में αι लगता है। किन्तु अथेना नगरवासियों की भाषा में प्रथम पुरुष के एकवचन में ειε लगता है और प्रथम पुरुष के बहुवचन और मध्यम पुरुष के एकवचन में ειας लगता है।

५।१ और २ लट् और IΔ के २ लिङ् के सब रूपों में ειη लगता है परन्तु प्रथम पुरुष के बहुवचन में ειε भी और मध्यम और उत्तम पुरुषों के बहुवचन में ει भी लग सकता है।

लोट् भाव में

२०१।

१। लृट् १ लुङ् १ लिट् २ लिट् लिट्लृट् के ντων प्रत्यय के पहिले ο और सब रूपों में ε लगता है।

२। २ लुङ् के सब रूपों में ८ लगता है।

३। १ लच् २ लच् के सब रूपों में ७ लगता है।

१०२। संज्ञा भावमें

१। लट् १ लङ् २ लट् १ लिट् २ लिट् १ लच् २ लच् लिङ्ट् के प्रत्ययों के पहिले ६ लगता है।

२। २ लट् में ६६ लगता है सो ६८ होताहै।

३। २ लङ् में ८ लगता है।

४। १ और २ लच् में ७ लगताहै।

१०३। विशेषण भावमें

१। लट् १ लङ् २ लट् १ लिट् २ लिट् लिङ्ट् १ लच् २ लच् में ० लगताहै।

२। १ लट् के प्रत्ययों के पहिले ६० लगताहै सो ०७ होताहै।

३। २ लङ् मे ८ लगता है

४। १ और २ लच् में ६ लगता है।

१०४। अब बतावेंगे कि इन सम्बन्धी स्वरों से मिलके ऊपरिलिखित चक्र में के प्रत्यय किस प्रकार से बदलतेहैं।

१। १ और २ लिङ्ग के ετι में का τι लुप्त होताहै और अवशिष्ट सब लकारों के ετι और ηετι में का τ छूटके ει और ηι होतेहैं।

२। ονται ουσι और ωνται ωσι और ανται ασι होतेहैं। पर कभी २ ανται αν भी हो सकताहै।

३। εσι εις और ησι ηις और ασι ας होते हैं। पर कभी २ १ और २ लिङ्ग में यह ας ασθα वा σθα होताहै।

४। εσαι और ησαι का σ छूटके εαι ει वा ηι होताहै और ηαι ηι।

५। μι प्रत्यय लुप्त होता है।

६। ετ ειτ ατ ητ αιτ οιτ ειητ

ο।ητ का τ लुप्त होता है ।

७। ε।ϛ का ϛ कभी २ σθα होता है ।

८। ντ का τ सदा लुप्त होता है और ν के पहिले σα भी १ लच् २ लच् १ लोङ् २ लोङ् में लगता है और कभी २ और लकारों में भी ।

९। εσο ασο ο।σο α।σο ε।σο का σ छूटता है और तब εο ου और αο ω संधि से होते हैं

१०। ομ αμ ε।μ ημ ε।ημ ο।ημ का μ सदा ν होता है पर ο।μ α।μ के अन्त में ι लगता है ।

११। εθι का θι सदा लुप्त होता है पर αθι ον से बदल जाता है और ηθι ητι होजाता है ।

१२। ντων τωσαν से बदल सकता है और η के उपरान्त सदा ऐसा बदलता

है। परन्तु इस τωσαν के पहिले ο नहीं बरन् उस के स्थाने ε लगताहै।

१३। बहुवचन का σθων σθωσαν भी हो सकता है।

१४। १ और २ लिङ्ग का εναι वैसा ही रह ताहै पर और सबलकारों का εναι ειν से बदल जाताहै और αναι αι हो जाता है।

१५। १ और २ लिङ्ग के ουτ का ν छूट जाता है।

१६। जिन क्रियाओं के अन्तमें α ε ο है उनमें यह स्वर सम्बन्धी स्वर से संधि के नियमानुसार मिलताहै। परन्तु इन चार बातों को जान रखो।

१।ο और ειν मिलके οιν नहीं बरन् ουν होता है। यथा μισθόειν से μισθοῦν।

२। इन क्रियाओं के लट् के लिङ्. के परस्मैपद में प्राय οιη सम्बन्धी स्वर लगताहै। यथा τιμα से τιμῴη τιμῳήτην τιμῴησαν इत्यादि और φιλε से φιλαίη φιλοίητην φιλοίησαν इत्यादि।

३। ZA XPA(काममें लेना) ΣΜΑ ΨΑ πει-να διψα का α ε और ει से मिलके α ᾳ नहीं बरन η ῃ होताहै यथा χράεται से χρῆται और ζαειν से ζῆν।

४। स्वराङ्कान्वित धातुओं में केवल ει प्रत्यय के साथ संधि होता है और किसी प्रत्यय के साथ नहीं होताहै। यथा πνέει से πνεῖ परन्तु πνέουσι πνοῦσι नहीं होताहै।

९७। जहां २ प्रथम पुरुष के अन्तमें ε वा ι स्वरादिकशब्दके पहिले आता है तहां २ प्रत्यय के अन्तमें ν लगताहै। यथा

ἔχουσι αὐτὸ और ἔλεγε οὗτος न-हीं होगा बरन् ἔχουσιν αὐτὸ और ἔλεγεν οὗτος।

अथ सम्बन्धिस्वरान्वितक्रियाओं के उदाहरण

।१०५। १ लृट्

MEN और ΘΑΝ

वाच्ची भाव।

परस्मैपद।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰	μενεῖ	μενεῖτον	μενοῦσι
म॰	μενεῖς	μενεῖτον	μενεῖτε
उ॰	μενῶ		μενοῦμεν

आत्मनेपद।

प्र॰	θανεῖται	θανεῖσθον	θανοῦνται
म॰	θανῇ वा θανεῖ	θανεῖσθον	θανεῖσθε
उ॰	θανοῦμαι	θανούμεθον	θανούμεθα

लिङ् भाव।

परस्मैपद।

प्र॰ μενοῖ	μενοίτην	μενοῖεν
म॰ μενοῖς	μενοῖτον	μενοῖτε
उ॰ μενοῖμι		μενοῖμεν

अथवा

प्र॰ μενοίη	μενοίητην	μενοίησαν
म॰ μενοίης	μενοίητον	μενοίητε
उ॰ μενοίην		μενοίημεν

आत्मनेपद।

प्र॰ θανοῖτο	θανοίσθην	θανοῖντο
म॰ θανοῖο	θανοῖσθον	θανοῖσθε
उ॰ θανοίμην	θανοίμεθον	θανοίμεθα

संज्ञाभाव।

पर॰ μενεῖν

आ॰ θανεῖσθαι

विशेषण भाव।

प॰ μενουντ

आ॰ θανουμενο

१०६। १लुङ्

BΛA और ΛAB

वार्त्ता भाव।

परस्मैपद।

प्र॰ ἔβαλε	ἐβαλέτην	ἔβαλον
म॰ ἔβαλες	ἐβάλετον	ἐβάλετε
उ॰ ἔβαλον		ἐβάλομεν

आत्मनेपद।

प्र॰ ἐλάβετο	ἐλαβέσθην	ἐλάβοντο
म॰ ἐλάβου	ἐλάβεσθον	ἐλάβεσθε
उ॰ ἐλαβόμην	ἐλαβόμεθον	ἐλαβόμεθα

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र· βάλῃ	βάλητον	βάλωσι
म· βάλῃς	βάλητον	βάλητε
उ· βάλω		βάλωμεν

आत्मनेपद।

प्र· λάβηται	λάβησθον	λάβωνται
म· λαβῃ	λάβησθον	λάβησθε
उ· λάβωμαι	λαβώμεθον	λάβώμεθα

लिङ् भाव।

परस्मैपद।

प्र· βάλοι	βαλοίτην	βάλοιεν
म· βάλοις	βάλοιτον	βάλοιτε
उ· βάλοιμι		βάλοιμεν

आत्मनेपद

प्र· λάβοιτο	λαβοίσθην	λάβοιντο
म· λάβοιο	λάβοισθον	λάβοισθε
उ· λαβοίμην	λαβοίμεθον	λαβοίμεθα

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र· βαλέτω	βαλέτων	βαλόντων वा βαλέτωσαν
म· βάλε	βάλετον	βάλετε

आत्मनेपद।

प्र· λαβέσθω	λαβέσθων	λαβέσθων वा σθωσαν
म· λαβοῦ	λάβεσθον	λάβεσθε

संज्ञा भाव।

पर βαλεῖν

आ· λαβέσθαι

विशेषणभाव।

पर βαλοντ

आ· λαβομενο

१०७। ' २ लृट्

ΦΥΛΑΚ और ΠΟΙΕ

वार्त्ता भाव।

परस्मैपद।

प्र· φύλαξει	φυλάξετον	φυλάξουσι
म· φυλάξεις	φυλάξετον	φυλάξετε
उ· φυλάξω		φυλάξομεν

आत्मनेपद।

प्र· ποιήσοται	ποιήσεσθον	ποιήσονται
म· ποιήσῃ वा ποιήσει	ποιήσεσθον	ποιήσεσθε
उ· ποιήσομαι	ποιησόμεθον	ποιησόμεθα

लिङ् भाव।

परस्मैपद।

प्र· φυλάξοι	φυλαξοίτην	φυλάξοιεν
म· φυλάξοις	φυλάξοιτον	φυλάξοιτε
उ· φυλάξοιμι		φυλάξοιμεν

आत्मनेपद।

प्र· ποιήσοιτο	ποιησοίσθην	ποιήσοιντο
म· ποιήσοιο	ποιήσοισθον	ποιήσοισθε
उ· ποιησοίμην	ποιησοίμεθον	ποιησοίμεθα

संज्ञा भाव।

परं· φυλάξειν

आ· ποιήσεσθαι

विशेषण भाव।

प॰ φυλαξοντ

आ॰ ποιησομενο

।१०८।

२ लुङ्

ΠΡΑΓ और ΣΤΕΛ

कर्त्ता भाव।

परस्मैपद।

प्र॰ ἔπραξε	ἐπραξάτην	ἔπραξαν
म॰ ἔπραξας	ἐπράξατον	ἐπράξατε
उ॰ ἔπραξα		ἐπράξαμεν

आत्मनेपद।

प्र॰ ἐστείλατο	ἐστειλάσθην	ἐστείλαντο
म॰ ἐστείλω	ἐστείλασθον	ἐστείλασθε
उ॰ ἐστειλάμην	ἐστειλάμεθον	ἐστειλάμεθα

लेट् भाव।

परस्मैपद।

प्र· πράξῃ	πράξητον	πράξωσι
म· πράξῃς	πράξητον	πράξητε
उ· πράξω		πράξωμεν

आत्मनेपद।

प्र· στείληται	στείλησθον	στείλωνται
म· στείλῃ	στείλησθον	στείλησθε
उ· στείλωμαι	στειλώμεθον	στειλώμεθα

लिङ् भाव।

परस्मैपद।

प्र· πράξαι वा πράξειε	πραξαίτην	πράξαιεν वा ξειαν
म· πράξαις वा πράξειας	πράξαιτον	πράξαιτε
उ· πράξαιμι		πράξαιμεν

आत्मनेपद।

प्र· στείλαιτο	στειλαίσθην	στείλαιντο
म· στείλαιο	στείλαισθον	στείλαισθε
उ· στειλαίμην	στειλαίμεθον	στειλαίμεθα

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र·πραξάτω	πραξάτων	πραξάντων वा ξάτωσαν
म·πράξον	πράξατον	πράξατε

आत्मनेपद।

प्र·στειλάτω	στειλάσθων	στειλάσθων वा σθωσαν
म·στεῖλαι	στείλασθον	στείλασθε

संज्ञा भाव।

पर πρᾶξαι

आ στείλασθαι

विशेषणभाव।

पर πραξαντ

आ στειλαμενο

१०५। १ लङ

MAN।

गतौ भाव।

प्र· ἐμάνη	ἐμανήτην	ἐμάνησαν
म· ἐμάνης	ἐμάνητον	ἐμάνητε
उ· ἐμάνην		ἐμάνημεν

लेट् भाव ।

प्र॰ μανῇ	μανῆτον	μανῶσι
म॰ μανῇς	μανῆτον	μανῆτε
उ॰ μανῶ		μανῶμεν

लिङ् भाव ।

प्र॰ μαγείη	μανειήτην	μανείησαν
म॰ μανείης	μανείητον	μανείητε
उ॰ μανείην		μανείημεν

लोट् भाव ।

प्र॰ μανήτω	μανήτων	μανήτωσαν
म॰ μάνητι	μάνητον	μάνητε

संज्ञाभाव ।

μανῆναι

विशेषणभाव ।

μανεντ

---

११० १ लट्

ΣΠΕΡ

वार्त्ता भाव ।

प्र·σπαρήσεται	σπαρήσεσθον	σπαρήσονται
म·σπαρήσηαι σει	σπαρήσεσθον	σπαρήσεσθε
उ·σπαρήσομαι	σπαρησόμεθον	σπαρησόμεθα

लिङ्. भाव ।

प्र·σπαρήσοιτο	σπαρησοίσθην	σπαρήσοιντο
म·σπαρήσοιο	σπαρήσοισθον	σπαρήσοισθε
उ·σπαρησοίμην	σπαρησοί μεθον	σπαρησοίμεθα

संज्ञा भाव ।

σπαρήσεσθαι

विशेषण भाव ।

σπερησομενο

---

२२२ । २ लुच्

ΛΕΓ ।

वार्त्ता भाव ।

প্র· ἐλέχθη	ἐλεχθήτην	ἐλέχθησαν
ম· ἐλέχθης	ἐλέχθητον	ἐλέχθητε
উ· ἐλέχθην		ἐλέχθημεν

লেট্ ভাব।

প্র· λεχθῆ	λεχθῆτον	λεχθῶσι
ম· λεχθῇς	λεχθῆτον	λεχθῆτε
উ· λεχθῶ		λεχθῶμεν

লিঙ্ ভাব।

প্র· λεχθείη	λεχθειήτην	λεχθείησαν বা χθεῖεν
ম· λεχθείης	λεχθείητον	λεχθείητε বা χθεῖτε
উ· λεχθείην		λεχθείημεν বা χθεῖμεν

লোট্ ভাব।

প্র· λεχθήτω	λεχθήτων	λεχθήτωσαν
ম· λέχθητι	λέχθητον	λέχθητε

সংজ্ঞা ভাব।

λεχθῆναι

বিশেষণ ভাব।

λεχθεντ

ZHTE

বার্ত্তা ভাব।

প্র.	ζητηθήσεται	ζητηθήσεσθον	ζητηθήσονται
ম.	ζητηθήσῃ বা σει	ζητηθήσεσθον	ζητηθήσεσθε
উ.	ζητηθήσομαι	ζητηθησόμεθον	ζητηθησόμεθα

লিঙ্‌ ভাব।

প্র.	ζητηθήσοιτο	ζητηθησοίσθην	ζητηθήσοιντο
ম.	ζητηθήσοιο	ζητηθήσοισθον	ζητηθήσοισθε
উ.	ζητηθησοίμην	ζητηθησοίμεθον	ζητηθησοίμεθα

সংজ্ঞাভাব।

ζητηθήσεσθαι

বিশেষণভাব।

ζητηθησομενο

লিঙ্গুট

ΓΡΑΦ

বার্ত্তা ভাব।

প্র. γεγραψεται	γεγράψεσθον	γεγράψονται
ম. γεγράψῃ বা ψει	γεγράψεσθον	γεγράψεσθε
উ. γεγράψομαι	γεγραψόμεθον	γεγραψόμεθα

লিঙ্. ভাব।

প্র. γεγράψοιτο	γεγραψοίσθην	γεγράψοιντο
ম. γεγράψοιο	γεγράψοισθον	γεγράψοισθε
উ. γεγραψοίμην	γεγραψοίμεθον	γεγραψοίμεθα

সংজ্ঞাভাব।

γεγράψεσθαι

বিশেষণাভাব।

γεγραψομενο

११४ । ।लिट्

KPIN

वर्त्ती भाव।

प्र·κέκρικε	κεκρικάτην	κεκρίκασι
म·κέκρικας	κεκρίκατον	κεκρίκατε
उ·κέκρικα		κεκρίκαμεν

लेट् भाव।

प्र·κεκρίκῃ	κεκρίκητον	κεκρίκωσι
म·κεκρίκῃς	κεκρίκητον	κεκρίκητε
उ·κεκρίκω		κεκρίκωμεν

लिङ् भाव।

प्र·κεκρίκοι	κεκρικοίτην	κεκρίκοιεν
म·κεκρίκοις	κεκρίκοιτον	κεκρίκοιτε
उ·κεκρίκοιμι		κεκρίκοιμεν

लोट् भाव।

प्र·κεκρικέτω	κεκρικέτων	κεκρίκωσι
म·κέκρικε	κεκρίκετον	κεκρίκετε

संज्ञाभाव।

κεκρικέναι

विशेषणभाव।

κεκρικοτ

११५। १लोट्

ΦΥ।

प्र· ἐπεφύκει	ἐπεφυκείτην	ἐπεφύκεισαν
म· ἐπεφύκεις	ἐπεφύκειτον	ἐπεφύκειτε
उ· ἐπεφύκειν		ἐπεφύκειμεν

११६। २लिट्

ΓΕΝ।

कर्त्ता भाव।

प्र· γέγονε	γεγόνατον	γεγόνασι
म· γέγονας	γεγόνατον	γεγόνατε
उ· γέγονα		γεγόναμεν

लेट् भाव।

प्र· γεγόνῃ	γεγόνητον	γεγόνωσι
म· γεγόνῃς	γεγόνητον	γεγόνητε
उ· γεγόνω		γεγόνωμεν

लिङ्. भाव।

प्र· γεγόνοι	γεγονοίτην	γεγόνοιεν
म· γεγόνοις	γεγόνοιτον	γεγόνοιτε
उ· γεγόνοιμι		γεγόνοιμεν

लोट् भाव।

प्र· γεγονέτω	γεγονέτων	γεγονόντων वा νέτωσαν
म· γέγονε	γεγόνετον	γεγόνετε

संज्ञाभाव।

γεγονέναι

विशेषणभाव।

γεγονον

११५।

२ लोङ्.

ΦΘΕΡ

प्र· ἐφθόρει	ἐφθορείτην	ἐφθόρεισαν
म· ἐφθόρεις	ἐφθόρειτον	ἐφθόρειτε
उ· ἐφθόρειν		ἐφθόρειμεν

११८।

लट्

ΓΝΟ और ΠΥΘ।

कर्त्ता भाव।

परस्मैपद।

प्र· γινώσκει	γινώσκετον	γινώσκουσι
म· γινώσκεις	γινώσκετον	γινώσκετε
उ· γινώσκω		γινώσκομεν

आत्मनेपद।

प्र· πυνθάνεται	πυνθάνεσθον	πυνθάνονται
म· πυνθάνῃ वा νει	πυνθάνεσθον	πυνθάνεσθε
उ· πυνθάνομαι	πυνθανόμεθον	πυνθανόμεθα

লেট্ ভাব।

পরস্মৈপদ।

প্র· γινώσκῃ	γινώσκητον	γινώσκωσι
ম· γινώσκῃς	γινώσκητον	γινώσκητε
উ· γινώσκω		γινώσκωμεν

আত্মনেপদ।

প্র· πυνθάνηται	πυνθάνησθον	πυνθάνωνται
ম· πυνθάνῃ	πυνθάνησθον	πυνθάνησθε
উ· πυνθάνωμαι	πυνθανώμεθον	πυνθανώμεθα

লিঙ্ ভাব।

পরস্মৈপদ।

প্র· γινώσκοι	γινωσκοίτην	γινώσκοιεν
ম· γινώσκοις	γινώσκοιτον	γινώσκοιτε
উ· γινώσκοιμι		γινώσκοιμεν

আত্মনে পদ।

आत्मनेपद

प्र· πανθάνοιτο	πυνθανοίσ-θην	πυνθάνοιν-το
म· πυνθάνοιο	πυνθάνοισ-θον	πυνθάνοισ-θε
उ· πυνθανοίμ-ην	πυνθανοίμε-θον	πυνθανοίμε-θα

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र· γινωσκέτω	γινωσκέτων	γινωσκόντ-ων वा σκέτωσαν
म· γίνωσκε	γινωσκετον	γινώσκετε

आत्मनेपद।

प्र· πυνθανέσ-θω	πυνθανέσθ-ων	πυνθανέσθαν वा σθωσαν
म· πυνθάνου	πυνθάνεσθον	πυνθάνεσθε

संज्ञा भाव।

पर· γινώσκειν

आ· πυνθάνεσθαι

विशेषण भाव।

पर· γινωσκοντ

आ· πυνθανομενο

११९। लङ्

ΠΕΤ और ʼΕΛΑ।

परस्मैपद।

प्र·ἔπιπτε	ἐπιπτέτην	ἔπιπτον
म·ἔπιπτες	ἐπίπτετον	ἐπίπτετε
उ·ἔπιπτον		ἐπίπτομεν

आत्मनेपद।

प्र·ἠλαύνετο	ἠλαυνέσθην	ἠλαύνοντο
म·ἠλαύνου	ἠλαύνεσθον	ἠλαύνεσθε
उ·ἠλαυνόμην	ἠλαυνόμεθον	ἠλαυνόμεθα

अष्टम अध्याय। नियमविरुद्ध क्रियाओं का वर्णन।

१२०। १। ʼΕΣ।

यह धातु केवल लट् लङ् २ लृट् में होताहै। इस की नियमविरुद्धता विशेषकरके तीनप्रकार कीहै।

१। कितने रूपों में धातु लुप्त होता है केवल प्रत्ययही रहजाता है।

२। कितने रूपों में धातु ει से बदल जाता है।

३। प्रत्यय के σ के पहिले धातु का σ लुप्त होता है।

२लृट्

वार्त्ता भाव।

प्र (ἔσεται के स्थाने) ἔσται	ἔσεσθον	ἔσονται
म· ἔσῃ वा ἔσει	ἔσεσθον	ἔσεσθε
उ· ἔσομαι	ἐσόμεθον	ἐσόμεθα

लिङ् भाव।

प्र· ἔσοιτο | ἐσοίσθην | ἔσοιντο इत्यादि

संज्ञाभाव।

ἔσεσθαι

विशेषणभाव।

ἐσομενο

लट्

वार्त्ता भाव।

प्र· ἐστί	ἐστὸν	εἰσὶ
म· εἶς वा εἶ	ἐστὸν	ἐστὲ
उ· εἶμι		ἐσμὲν

लेट् भाव।

प्र· ᾖ	ἦτον	ὦσι
म· ᾖς	ἦτον	ἦτε
उ· ὦ		ὦμεν

लिङ् भाव।

प्र· εἴη	εἰήτην	εἴησαν वा εἶεν इत्यादि

लोट् भाव।

प्र· ἔστω	ἔστων	ἔστων वा ἔστωσαν
म· ἴσθι	ἔστον	ἔστε

संज्ञा भाव।

εἶναι

विशेषणभाव।

ὀντ

लङ्.

प्र॰ ἦν	ἤτην	ἦσαν
म॰ ἦς वा ἦσθα	ἦτον	ἦτε
उ॰ ἦν वा ἤμην		ἦμεν

१२१। हम कह आये हैं कि ३ लिट् और ३ लो॰ ट्. के प्रथम पुरुषका बहुवचन वार्त्ती भाव में और ३ लिट् का कोई रूप लेट् और लिङ्. भावों में नहीं होता है। सो उन के अर्थ में २ लिट् का विशेषण भाव ΈΣ धातु के कुछ रूप के साथ आता है। यथा ΛΥ से २ लिट् के वार्त्ती भाव के अर्थ में λελύμενο εἰσί। उसी के लेट् भाव के अर्थ में λελυμενο ὦ ἦτον ὦσι इत्यादि। उसी के लिङ्. भाव के अर्थ में λελυμενο εἴη εἰήτην εἰεν इत्यादि। और ३ लो-

उ. के अर्थमें λελυμενο ἦσαν ।

---

१२२ २। ᾿Ι ।

यह धातु केवल लट् और लङ् के केवल परस्मैपदमें होता है। लट् के एकवचन के वार्त्ता भाव में और लङ् के तीनों वचन में धातु ει होता है। और लङ् का आगम η है।

लट्

वार्त्ता भाव।

प्र· εἶσι	ἴτον	ἴασι
म· εἶς वा εἶ	ἴτον	ἴτε
उ· εἶμι		ἴμεν

लेट् भाव।

प्र· ἴῃ	ἴητον	ἴωσι इत्यादि

लिङ् भाव।

प्र· ἴοι	ἰοίτην	ἴοιεν इत्यादि

लोट् भाव।

प्र· ἴτω	ἴτων	ἰόντων वा ἴτωσαν
म· ἴθι	ἴτον	ἴτε

संज्ञा भाव।

ἰέναι

विशेषण भाव।

ἰοντ

लङ्

प्र· ᾔει	ᾔείτην	ᾔεισαν
म· ᾔεις	ᾔειτον	ᾔειτε
उ· ᾔειν वा ᾔα		ᾔειμεν

इस धातु के लट् के वार्त्ता भाव का अर्थ प्राय वर्तमान के भविष्यत् का है।

१२३। ΕΛΥΘ और ΕΡΧ।

ΕΡΧ लट् और लङ् में होता है। ΕΛΥΘ और सब लकारों में। ΕΛΥΘ का ...

२ लट् में ευ होता है और १ लुङ् में लु· म होताहै ।

१ लुङ्

वार्ता भाव।

प्र· ἦλθε	ἠλθέτην	ἦλθον	इत्यादि

लेट् भाव।

प्र· ἔλθῃ	ἔλθητον	ἔλθωσι	इत्यादि

लिङ् भाव।

प्र· ἔλθοι	ἐλθοίτην	ἔλθοιεν	इत्यादि

लोट् भाव।

प्र· ἐλθέτω	ἐλθέτων	ἐλθόντων वा ἐλθέτωσαν
म· ἔλθε	ἔλθετον	ἔλθετε

संज्ञा भाव।

ἐλθεῖν

विशेषण भाव।

ἐλθοντ

१ लिट्

वार्त्ती भाव।

प्र· ἐλήλυθε ἐληλύθατον ἐληλύθασι इत्यादि

लेट् भाव।

प्र· ἐληλύθῃ ἐληλύθητον ἐληλύθωσι इत्यादि

लिङ् भाव।

प्र· ἐληλύθοι ἐληλυθοίτην ἐληλύθοιεν इत्या·

संज्ञाभाव।

ἐληλυθέναι

विशेषणभाव।

ἐληλυθοντ·

२ लोङ्

प्र· ἐληλύθει ἐληλυθείτην ἐληλύθεισαν इ·

२ लृट्

वार्त्ती भाव।

प्र· ἐλεύσεται ἐλεύσεσθον ἐλεύσονται इत्या·

लिङ् भाव।

प्र·ἐλεύσαιτο ἐλευσοίσθην ἐλεύσοιντο इत्या

संज्ञा भाव।

ἐλεύσεσθαι

विशेषणभाव।

ἐλευσόμενο

लट्

वाज्यी भाव।

प्र·ἔρχεται ἔρχεσθον ἔρχονται इत्यादि

लेट् भाव।

प्र·ἔρχηται ἔρχησθον ἔρχωνται इत्यादि

लिङ् भाव।

प्र·ἔρχοιτο ἐρχοίσθην ἔρχοιντο इत्यादि

लोट भाव।

प्र·ἐρχέσθω ἐρχέσθων ἐρχέσθων वा σθωσαν इत्या·

संज्ञा भाव।

ἔρχεσθαι

विशेषणभाव।

ἐρχομενο

लङ्

प्र· ἤρχετο ἠρχέσθην ἤρχοντο इत्यादि

१२४। ΨΙ ΣΕΧ।

इस धातु के १ लङ् मे उस का ε निकलता है और २ लट् में उसका σ महाप्राणसे बदल जाताहै और लट् लङ् में यह σ लुप्त होताहै।

१ लिट् और १ लङ् कालेट् और लिङ् भाव मानों सम्बन्धिस्वरान्वित σχε से होतेहैं।

१ लङ् के लोट् भाव का परस्मैपद मानों सम्बन्धिस्वररहित σχε से होताहै।

१ लङ्

वार्ता भाव।

प्र·ἔσχε ἐσχέτην ἔσχον इत्यादि

लेट् भाव।

प्र·σχῇ σχῆτον σχῶσι इत्यादि

लिङ्·भाव।

प्र·σχοίη σχοιήτην σχοίησαν इत्यादि

लोट् भाव।

प्र·σχέτω σχέτων σχέτωσαν

म·σχὲς σχέτον σχέτε

संज्ञाभाव।

σχεῖν

विशेषणाभाव।

σχοντ

२लट्।

वार्ता भाव।

परस्मैपद।

प्र॰ ἕξει ἕξετον ἕξουσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र॰ ἕξεται ἕξεσθον ἕξονται इत्यादि

लिङ् भाव।

परस्मैपद।

प्र॰ ἕξοι ἑξοίτην ἕξοιεν इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र॰ ἕξοιτο ἑξοίσθην ἕξοιντο इत्यादि

संज्ञा भाव।

परस्मैपद।

ἕξειν

आत्मनेपद।

ἕξεσθαι

विशेषणभाव।

पर॰ ἕξοντ

आ॰ ἑξόμενο

लट्

वार्त्ता भाव।

परस्मैपद।

प्र· ἔχει ἔχτον ἔχουσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἔχεται ἔχεσθον ἔχονται इत्यादि

लेट् भाव।

परस्मैपद।

प्र· ἔχῃ ἔχητον ἔχωσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἔχηται ἔχησθον ἔχωνται इत्यादि

लिङ्· भाव।

परस्मैपद।

प्र· ἔχοι ἐχοίτην ἔχοιεν इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἔχοιτο ἐχοίσθην ἔχοιντο इत्यादि

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र· ἐχέτω ἐχέτων ἐχόντων वा ἐχέτωσαν इ·

आत्मनेपद।

प्र· ἐχέσθω ἐχέσθων ἐχέσθων वा σθωσαν इ·

संज्ञाभाव।

पर· ἔχειν

आ· ἔχεσθαι

विशेषणाभाव।

पर· ἐχοντ

आ· ἐχομενο

लङ्

परस्मैपद।

प्र· εἶχε εἰχέτην εἶχον इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· εἴχετο εἰχέσθην εἴχοντο इत्यादि

१२५। ५। 'OPA 'OTL 'IΔ ।

'OPA से लट् लङ् १ लिट् ३ लिट् १ लो-
ङ् ३ लोङ् ।

'OTL से २ लिट् ३ लिट् २ लोङ् ३ लोङ् २
लङ् २ लृङ् ।

'IΔ से १ लङ् २ लिट् २ लोङ्

१ लङ् का ८ आगम से मिलके ६८ हो-
ना है ।

'IΔ के २ लिट् का अभ्यास लेट् लिङ् सं-
ज्ञा विशेषण में ६८ से होता है । वार्त्ती
भाव के एकवचन में ०८ से । और द्वि-
वचन और बहुवचन में नहीं होता है
परन्तु धातु का δ σ से बदल जाता है ।
ऐसाही लोट् के सब रूपों में भी ।

२ लोङ् में ६८ ही में आगम लगके ŋ
होताहै ।

'IΔ के २ लिट् का अर्थ जानने का है

और सब लकारों का अर्थ देखने काहै।

१लङ्

वार्त्ताभाव।

परस्मैपद।

प्र· εἶδε εἰδέτην εἶδον इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· εἴδετο εἰδέσθην εἴδοντο इत्यादि

लेट् भाव।

परस्मैपद।

प्र· ἴδῃ ἴδητον ἴδωσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἴδηται ἴδησθον ἴδωνται इत्यादि

लिङ् भाव।

परस्मैपद।

प्र· ἴδοι ἰδοίτην ἴδοιεν इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἴδοιτο ἰδοίσθην ἴδοιντο इत्यादि

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र· ἰδέτω ἰδέτων ἰδόντων वा ἰδέτωσαν इत्या·

आत्मनेपद।

प्र· ἰδέσθω ἰδέσθων ἰδέσθων वा σθωσαν इ·

संज्ञाभाव।

पर· ἰδεῖν

आ· ἴδεσθαι

विशेषणभाव

पर· ἰδοντ

आ· ἰδομενο

२लिट्

वार्त्ता भाव।

प्र· οἶδε	ἴστον	ἴσασι
म· οἶσθα वा οἶδας	ἴστον	ἴστε
उ· οἶδα		ἴσμεν

लेट् भाव।

प्र· εἰδῆ εἰδῆτον εἰδῶσι इत्यादि

लिङ् भाव।

प्र· εἰδείη εἰδειήτην εἰδείησαν इत्यादि

लोट् भाव।

प्र· ἴστω ἴστων ἴστωσαν·

म· ἴσθι ἴστον ἴστε

संज्ञाभाव।

εἰδέναι

विशेषणभाव।

εἰδοτ

२ लोङ्·

प्र· ᾔδει ᾔδείτην ᾔδεισαν इत्यादि

२ लृट्

वार्त्ताभाव।

प्र· ὄψεται ὄψεσθον ὄψονται इत्यादि

लिङ् भाव ।

प्र· ὄψοιτο ὀψοίσθην ὄψοιντο इत्यादि

संज्ञाभाव।

ὄψεσθαι

विशेषणाभाव।

ὀψομενο

२ लुच

वार्जी भाव।

प्र· ὤφθη ὠφθήτην ὤφθησαν इत्यादि

लेट् भाव।

प्र· ὀφθῇ ὀφθῆτον ὀφθῶσι इत्यादि

लिङ् भाव।

प्र· ὀφθείη ὀφθειήτην ὀφθείησαν इत्यादि

लोट् भाव।

प्र· ὀφθήτω ὀφθήτων ὀφθήτωσαν इत्यादि

संज्ञाभाव।

ὀφθῆναι

विशेषणाभाव।

ὀφθεντ

२ लृट्

वाच्यभाव।

प्र· ὀφθήσεται ὀφθήσεσθον ὀφθήσονται इत्या·

लिङ्· भाव।

प्र· ὀφθήσοιτο ὀφθησοίσθην ὀφθήσοιντο इत्या·

संज्ञाभाव।

ὀφθήσεσθαι

विशेषणाभाव।

ὀφθησομενο

३ लिट्

वाच्यभाव।

प्र·ὦπται ὦφθον इत्यादि

लोट् भाव।

प्र·ὦφθω ὦφθων ὦφθων वा ὦφθωσαν इ·

संज्ञाभाव।

ὦφθαι

विशेषणभाव।

ὠμμενο

इ लोट्.

प्र·ὦπτο ὦφθην इत्यादि

लट्

वार्त्ताभाव।

परस्मैपद।

प्र·ὁρᾷ ὁρᾶτον ὁρῶσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र·ὁρᾶται ὁρᾶσθον ὁρῶνται इत्यादि

लोट् भाव।

পরস্মৈপদ।

প্র·ὁρᾷ ὁρᾶτον ὁρῶσι ইত্যাদি

আত্মনেপদ।

প্র·ὁρᾶται ὁρᾶσθον ὁρῶνται ইত্যাদি

লিঙ্·ভাব।

পরস্মৈপদ।

প্র·ὁρῴη ὁρῴήτην ὁρῴησαν ইত্যাদি

আত্মনেপদ।

প্র·ὁρῷτο ὁρῴσθην ὁρῷντο ইত্যাদি

লোট্ভাব।

পরস্মৈপদ।

প্র·ὁράτω ὁράτων ὁράτωσαν ইত্যাদি

আত্মনেপদ।

প্র·ὁράσθω ὁράσθων ὁράσθων বা σθω-σαν ইত্যাদি

সংজ্ঞাভাব।

পর· ὁρᾷν

आ· ὁρᾶσθαι

विशेषणभाव।

पर· ὁρωντ

आ· ὁρωμενο

लङ्.

परस्मैपद।

प्र· ἑώρᾱ ἑωράτην ἑωρῶν इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἑωρᾶτο ἑωράσθην ἑωρᾶντο इत्यादि

१लिट्

वार्त्ताभाव।

प्र· ἑώρακε ἑωράκατον ἑωράκασι इत्या·

लेट्भाव।

प्र· ἑωράκῃ ἑωράκητον ἑωράκωσι इत्या·

लिङ्भाव।

प्र· ἑωράκοι ἑωρακοίτην ἑωράκοιεν इ·

लोट्भाव।

प्र·ἑωρακέτω ἑωρακέτων ἑωρακόντων वा κέτωσαν

संज्ञाभाव।

ἑωρακέναι

विशेषणभाव।

ἑωρακοτ

१ लोङ्.

प्र·ἑωράκει ἑωρακείτην ἑωράκεισαν इ·

१ लिट्

वाक्तीभाव।

प्र·ἑώραται ἑώρασθον इत्यादि

संज्ञाभाव।

ἑωρᾶσθαι

विशेषणभाव।

ἑωραμενο

१ लोङ्.

प्र·ἑώρατο ἑωράσθην इत्यादि

२ लिट्

वर्त्तीभाव।

प्र·ὄπωπε ὀπώπατον ὀπώπασι बत्वा·

लेट् भाव।

प्र·ὀπώπη ὀπώπητον ὀπώπωσι बत्वा·

लिङ्·भाव।

प्र·ὀπώποι ὀπωποίτην ὀπώποιεν बत्वा·

लोट् भाव।

प्र·ὀπωπέτω ὀπωπέτων ὀπωπόντων वा πέτωσαν

संज्ञाभाव।

ὀπωπεναι

विशेषणभाव।

ὀπωποτ

२ लोट्.

प्र·ὀπώπει ὀπωπείτην ὀπώπεισαν बत्वा·

[illegible]। 'ENEK 'OI ΦΕΡ

'ENEK से १ लुङ्· २ लुङ्· १ लिट् ३ लिट्

१ लोङ् ३ लोङ् २ लङ् २ लङ् । परन्तु १ लङ्
२ लङ् मे χ के पहिले γ आताहै और १
लिट् ३ लिट् में दूना अभ्यास होता है ।
'OI से २ लट्।
ΦΕΡ से लट् और लङ् ।

१लङ्

वार्त्ताभाव ।

प्र॰ ἤνεγκε ἠνεγκέτην ἤνεγκον इत्यादि

लेट्भाव ।

प्र॰ ἐνέγκῃ ἐνέγκητον. ἐνέγκωσι इत्यादि

लिङ्भाव ।

प्र॰ ἐνέγκαι ἐνεγκοίτην ἐνέγκοιεν इत्यादि

लोट् भाव ।

प्र॰ ἐνεγκέτω ἐνεγκέτων ἐνεγκόντων
वा χέτωσαν

संज्ञा भाव ।

ἐνεγκεῖν

विशेषणभाव ।

ἐνεγκοντ

२ लुङ्

वाची भाव।

प्र· ἤνεγκε ἠνεγκάτην ἤνεγκαν इत्या·

लोट् भाव।

प्र· ἐνεγκάτω ἐνεγκάτων ἐνεγκάντων वा
χάτωσαν

संज्ञा भाव।

ἔνεγκαι

विशेषण भाव।

ἐνεγκαντ

२ लिट्

वाची भाव।

प्र· ἐνήνοχε ἐνηνόχατον ἐνηνόχασι इ·

लेट् भाव।

प्र· ἐνηνόχῃ ἐνηνόχητον ἐνηνόχωσι इ·

लोट् भाव।

प्र· ἐνηνοχέτω ἐνηνοχέτων ἐνηνόχον-
των वा χέτωσαν

संज्ञा भाव।

ἐνηνοχέναι

विशेषणभाव।

ἐνηνοχοτ

१ लोट्

प्र· ἐνηνόχει ἐνηνοχείτην ἐνηνόχεισαν

२ लिट्

वाच्यभाव।

प्र· ἐνήνεκται ἐνήνεχθον इत्यादि

लोट् भाव।

प्र· ἐνηνέχθω ἐνηνέχθων ἐνηνέχθων वा χθωσαν

संज्ञाभाव।

ἐνηνέχθαι

विशेषणभाव।

ἐνηνεγμενο

२ लोट्

प्र· ἐνήνεχτο ἐνηνέχθην इत्यादि

१ लङ्

वार्त्ता भाव।

प्र· ἠνέχθη ἠνεχθήτην ἠνέχθησαν इत्या·

लेट् भाव।

प्र· ἐνεχθῇ ἐνεχθῆτον ἐνεχθῶσι इत्या·

लिङ् भाव।

प्र· ἐνεχθείη ἐνεχθειήτην ἐνεχθείησαν इ·

लोट् भाव।

प्र· ἐνεχθήτω ἐνεχθήτων ἐνεχθήτωσαν इ·

संज्ञा भाव।

ἐνεχθῆναι

विशेषण भाव।

ἐνεχθεντ

२ लृट्

वार्त्ता भावा।

प्र· ἐνεχθήσεται ἐνεχθήσεσθον ἐνεχθή-
σονται इ·

लिङ्· भाव।

प्र· ἐνεχθήσοιτο ἐνεχθησοίσθην ἐνεχθήσ-
οιντο इ·

संज्ञाभाव।

ἐνεχθήσεσθαι

विशेषणभाव।

ἐνεχθησομενο

२लृट्

वाच्यभाव।

प्र॰ οἴσει οἴσετον οἴσουσι इत्यादि

लिङ् भाव।

प्र॰ οἴσοι οἰσοίτην οἴσοιεν इत्यादि

संज्ञाभाव।

οἴσειν

विशेषणभाव।

οἴσοντ

लट्

वाच्यभाव।

परस्मैपद।

प्र॰ φέρει φέρετον φέρουσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· φέρεται φέρεσθον φέρονται इत्यादि

लेट् भाव।

परस्मैपद।

प्र· φέρῃ φέρητον φέρωσι इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· φέρηται φέρησθον φέρωνται इत्या·

लिङ् भाव।

परस्मैपद।

प्र· φέροι φεροίτην φέροιεν इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· φέροιτο φεροίτην φέροιντο इत्यादि

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र· φερέτω φερέτων φερόντων वा φερέτωσαν इ·

आत्मनेपद।

प्र· φερέσθω φερέσθων φερέσθων वा σθω-σαν

संज्ञाभाव।

पर· φέρειν

आ· φέρεσθαι

विशेषणभाव

पर· φεροντ

आ· φερομενο

लङ्

परस्मैपद।

प्र· ἔφερε ἐφερέτην ἔφερον इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र· ἐφέρετο ἐφερέσθην ἐφέροντο इत्यादि

१२७। ७। 'ΕΠ 'ΕΡ 'ΡΕ ΦΑ।

'ΕΠ से १ लङ् २ लङ् होतेहैं और उन का

आगम सबभावों में रहता है।
'EP से १ लट्।
'PE से १ लिट् ३ लिट् २ लच् २ लच्।
ΦA से लङ् लट्.

१ लुङ्.

वार्त्ताभाव।

प्र॰εἶπε εἰπέτην εἶπον इत्यादि

लेट्‌भाव।

प्र॰εἴπῃ εἴπητον εἴπωσι इत्यादि

लिङ्‌भाव।

प्र॰εἴποι εἰποίτην εἴποιεν इत्यादि

लोट्‌भाव।

प्र॰εἰπέτω εἰπέτων εἰπόντων वा πέτ-ωσαν

संज्ञाभाव।

εἰπεῖν

विशेषणभाव।

εἰποντ

२ लुङ्.

वार्त्ताभाव।

प्र· εἶπε εἰπάτην εἶπαν इत्यादि

लोट्भाव।

प्र· εἰπάτω εἰπάτων εἰπάντων वा πάτωσαν

संज्ञाभाव।

εἶπαι

विशेषणभाव।

εἰπαντ

१ लृट्

वार्त्ताभाव।

प्र· ἐρεῖ ἐρεῖτον ἐροῦσι इत्यादि

लिङ्भाव।

प्र· ἐροῖ ἐροίτην ἐροῖεν इत्यादि

अथवा

प्र· ἐροίη ἐροιήτην ἐροίησαν इत्यादि

संज्ञाभाव।

ἐρεῖν

विशेषणाभाव।

ἐροῦντ

१ लिट्

वार्त्ताभाव।

प्र· εἴρηκε εἰρήκατον εἰρήκασι इत्यादि

संज्ञाभाव।

εἰρηκέναι

विशेषणाभाव।

εἰρηκοτ

१ लोट्.

प्र· εἰρήκει εἰρηκείτην εἰρήκεισαν इत्या·

२ लिट्

वार्त्ताभाव।

प्र· εἴρηται εἴρησθον εἴρηνται इत्यादि

लोट् भाव।

प्र· εἰρήσθω εἰρήσθων εἰρήσθων वा σθωσαν

संज्ञाभाव।

εἰρῆσθαι

विशेषणाभाव।

εἰρημενο

२लोङ्

प्र· εἴρητο εἰρήσθην εἴρηντο इत्यादि

२लुंच्

वाच्याभाव।

प्र· ἐῤῥήθη ἐῤῥήθητην ἐῤῥήθησαν इत्यादि

लेट्भाव।

प्र· ῥηθῇ ῥηθῆτον ῥηθῶσι इत्यादि

लिङ्भाव।

प्र· ῥηθείη ῥηθειήτην ῥηθείησαν इत्यादि

लोट्भाव।

प्र· ῥηθήτω ῥηθήτων ῥηθήτωσαν इत्यादि

संज्ञाभाव।

ῥηθῆναι

विशेषणभाव।

ῥηθεντ

२लृट्

वाच्यभाव।

प्र·ῥηθήσεται ῥηθήσεσθον ῥηθήσονται इत्यादि

लिङ्·भाव।

प्र·ῥηθήσοιτο ῥηθησοίσθην ῥηθήσοιντο इत्यादि

संज्ञाभाव।

ῥηθήσεσθαι

विशेषणभाव।

ῥηθησομενο

लट्

वाच्यभाव।

प्र· φησὶ	φατὸν	φᾶσι
म· φῂς	φατὸν	φατὲ
उ· φημὶ		φαμὲν

लेट्‌भाव।

प्र· φῆ φῆτον φῶσι इत्यादि

लिङ्‌भाव।

प्र· φαίη φαιήτην φαίησαν वा φαῖεν

लोट्‌भाव।

प्र· φάτω φάτων φάντων वा φάτωσαν

म· φάθι φάτον φάτε

संज्ञाभाव।

φάναι

विशेषणभाव।

φαντ

लङ्‌

प्र· ἔφη ἐφάτην ἔφασαν

म· ἔφης ἔφατον ἔφατε

उ· ἔφην ἔφαμεν

१२८। इन धातुओं का मध्यस्वर निम्नलिखित लकारों में लुप्त होता है।

BAΛ KAΛE TEM ΔAM का १ लिट् १ लिट् २ लच् में।

ΓEN लट् लङ् में।

KAM १ लिट् में।

ΠEPΘ १ लङ् में।

ΠETA १ लिट् में।

ΠET (गिर) लट् लङ् १ लिट् में।

TEK लट् लङ् में।

ΘAN १ लिट् २ लिट् में।

BAΛ βλα KAM χμε ΘAN θνε ΠEPΘ . ταρθ उक्त लकारों में होते हैं।

ΠET केवल १ लिट् में πτο होता है।

१२९। 'AIPE 'EΛ

'EΛ से १ लङ्।

'AIPE से और सब लक . ।

१३०। BAΣTAΔ, BAΣTAΓ

BAΣTAΓ से २ लुङ्।

BAΣTAΔ से और सब लकार।

१३१। 'EΔ ΦAΓ

ΦAΓ से १ लुङ्।

'EΔ से और सब लकार।

१३२। ΠI ΠO

ΠI से १ लुङ् २ लृट् लट् लुङ्।

ΠO से १ लिट् ३ लिट् २ लुङ्।

१३३। TPAΓ TPΩΓ

TPAΓ से १ लुङ्।

TPΩΓ से लट् लुङ् २ लृट्।

१३४। 'EΓEP

का २ लिट्। ἐγρήγορε ἐγρηγόρατον

ἐγρηγόρασι

१३५। 'EΔ

का १ ऌट् । ἐδεῖται ἐδεῖσθον ἐδοῦνται इत्यादि

२३६। ʼΕΘ

का २ लिट् εἴωθε εἰώθατον εἰώθασι इत्यादि

२३७। ʼΕΙΚ

का २ लिट् । वार्त्तमान । ἔοικε ἐοίκατον ἐοίκασι

विशेषण । εἰκοτ

२३८। ʼΕΔ और ΠΙ

के २ ऌट् विना σ होते हैं । यथा ἔδεται πίεται

२३९। ΠΕΤ (गिर)

का १ लुङ् । ἔπεσε ἐπεσέτην ἔπεσον हैं: उसका १ ऌट् । πεσεῖται πεσεῖσθον πεσοῦνται इत्यादि

२४०। ʽΡΑΓ

का २ लिट् । ἔῤῥωγε ἐῤῥώγατον ἐῤῥώγασι इत्यादि

१४१। ΤΑΦ

का लट् । θάπτει θάπτετον θάπτουσι इत्यादि

३ लिट् τέθαπται τέθαφθον इत्यादि

१४२। ΧΥ

का २ लृट् । पर॰ χεύσει χεύσετον χεύσουσι इत्यादि

आ॰ χέεται χέεσθον χέονται इत्यादि

२ लङ्॰ । ἔχεε ἐχεάτην ἔχεαν इत्यादि

१४३। ΧΡΕ

केवल प्रथम पुरुष में होता है ।

लट् । वार्त्ताभाव । χρή

लेट् भाव । χρῇ

लिङ्॰ भाव । χρείη

संज्ञाभाव । χρῆναι

विधेयसाभाव। χρεωντ
लङ्. ἐχρῆν वा χρῆν
२ लट् χρήσει

अथ नामों का वर्णन।

नवम अध्याय। मूलनामपाठ।

१४४। १। संज्ञा।

ἀγαπα	प्रेम	ἀγρα	अहेर
ἀγκαλα	सिमटी हुई भुजा	ἀγρο	खेत
ἀγκυρα	लंगर	ἀγων	बलप्रदर्शक भुइ
ἀγορα	हाट	ἀερ	वायु

ἀετο	गृध्र
Ἀθηνα	सरस्वती
αἰδο	लज्जा
αἱματ	लोहू
αἰνο	प्रशंसा
αἰγ	बकरा
αἰσχες	निन्दा
αἰων	आयुष
ἀχμα	नोक
ἀλγες	दुःख
ἁλ	लवण
ἀλωπεχ	लोमड़ा
ἀμμο	वालू
ἀμνο	मेमना
ἀμπελο	दाखलता
ἀναγκα	आवश्यकता
ἀνακτ	राजा
ἀνεμο	बहता हुआ वायु
ἀνερ	पुरुष (नर)
ἀνθες	पुष्प
ἀνθρωπο	मनुष्य
ἀντρο	गुफा
ἀπατα	कपट
Ἀπολλων	आदित्य
ἀρα	शाप
ἀργυρο	रूपा
Ἀρες	युद्धकादेव
ἀρθρο	देहका गांठ
ἀριθμο	गिनती
ἀριστο	प्रातःकाल का भोजन
ἀρκτο	भालू (ऋक्ष)
ἀρματ	रथ
ἀρνο	मेमना
ἀρσεν वा ἀῤῥεν	पुलिङ्ग
ἀσκο	मशक
ἀσπιδ	फरी
ἀστεο	तारा ([illegible])

ἀστυ	नगर
ἀστραπα	बिजली
αὐγα	ज्योति
αὐλα	आंगन
ἀφρο	फेन
ἀχθο	भार
βασνο	कसौटी
βασιλευ	राजा
βια	बल
βιο	जीवन
βοα	चीत्कार
βοϜ	बैल वा गाव (गो)
βορεα	उत्तर दिशा का वायु
βραβευ	अङ्गीकृत न्यायी
βραχιον	बाहु
βροντα	गरज
βυβλο	जलका सरपत
βωμο	ऊंची वेदी
γα	पृथिवी (गो)
γαλακτ	दूध
γαληνα	शोभा
γαστερ	पेट
γεφυρα	पुल
γηρατ	वृद्धावस्था
γιγαντ	दैत्य
γλωσσα	जीभ
γονατ	घुटना
γονυ	घुटना (जानु)
γραϜ	बूढ़ी
γυναικ	स्त्री
γωνια	कोण
δαιμον	देव
δακρυ	आंसू (अश्रु)
δακτυλο	अङ्गुली
δανες	ऋण
δαπανα	व्यय
δειπνο	संध्याकाल-का भोजन
δελφυ	योनि
δενδρο	वृक्ष
δεσποτα	स्वामी
δημο	प्रजा

ΔιF	स्वर्गराज (द्यु)	ἑνο	वरस
δικο	न्याय	ἐπηρεια	दुर्व्यवहार
δικτυο	जाल	ἐργο	कार्य
διψα	प्यास	ἐριδ	झगड़ा
δολο	छल	Ἑρμα	बुधवा गणेश
δορυ	हव (दारु)	ἑσπερα	संध्याकाल
δρακοντ	अतिभयानक सर्प	ἐτες	बरस
		εὐνα	पलंग
δροσο	ओस	εὐρο	पूर्वी दिशा का वायु
Fεαρ	वसन्त (-ln.)	ζεα	जव
ἐγω	मैं (अहम्)	ζηλο	जय की इच्छा
ἐδαφες	तला	ζημια	हानि
ἐθνες	जाति	ἡβα	युवावस्था
εἰρηνα	मेल	ἡλιο	सूर्य
ἐλαια	जैतून का पेड़	ἡμε	हम
ἐλεο	दया	ἡμερα	दिन
ἐλεφαντ	हाथी (इभ)	ἡπατ	कलेजा (यकृत्)
ἑλκες	घाव	ἡρω	आर्य
Ἑλλαδ	यवनदेश	ἠχο	शब्द
Ἑλλην	यवन	ἠο	भोर
ἐθες	रीति	θαλασσα	समुद्र

θαλπες	उष्णता
θαρσες	ढाढ़स
θεο	देव
θεμιδ	धर्म्म
θηρ	वन्य पशु
θορυβο	हुल्लड़
θρονο	आसन
θυγατερ	पुत्री (दुहितृ)
θυμο	जीव
θυρα	द्वार
θωραξ	वृआस
ἱμαντ	तस्मा
ἱματιο	वस्त्र
ἰο	विष वा मोर्चा
ἱππο	घोड़ा (अश्व)
ἰσχυ	सामर्थ्य
ἰχθυ	मत्स्य
καιρο	अवसर
καλαμο	सरपत
καμινο	तन्दूर
καπνο	धूआँ
καρα	सिर (शिरस्)
καρδια	हृदय
καρπο	फल
καυχα	घमण्ड
κεραμο	मट्टी
κερατ	सींग (शृङ्ग)
κερδες	लाभ
κεφαλα	सिर
κηπο	वाटिका
κηρο	मोम
κηρυκ	प्रचारक
κιθαρα	वीणा
κινδυνο	जोखिम
κλαδο	शाखा
κλεες	यश
κλειδ	कुंजी
κληρο	चिट्ठी (डालने की)
κολαξ	चापलूस
κολπο	गोदी
κομα	केश
κονι	धूलि

κοπρο	विष्ठा	λυκο	मेड़िया
κοραξ	काक	λυπα	शोक
κορυφα	शिखा	λυχνο	दीपक
κοσμο	क्रम वा जगत	μαρτυρ	साक्षी
κρατες	बल	μαστιγ	कोड़ा
κρεατ	मांस	μαστο	स्तन
κυδες	कीर्त्ति	μελες	अङ्ग.
κυκλο	चक्र	μελιτ	मधु
κυν	कुत्ता (श्वन्)	μεταλλο	खानि
κυον	कुत्ता (श्वन्)	μετρο	मात्र
κυρες	अधिकार	μην	मास
κωλο	अङ्ग.	μητερ	माता (मातृ)
κωμο	चकरबा	μηχανα	उपाय
λαο	प्रजागण	μισθο	वेतन
λεοντ	सिंह	μο	मुझे
λιθο	पत्थर	μογο	श्रम
λιμεν	बन्दर	μοιχο	परस्त्रीगामी
λιμνα	झील	μορφα	मूर्त्ति
λιμο	अकाल	μουσα	सरस्वतीगण
λινο	शण		

μυ	मूस	ξιφες	खड्ग
μυελο	गूदा	ξυλο	काठ
μυθο	वार्त्ता	ὁ	वह आप
μυλα	चकती	ὀγχο	भार
ναF	नाव	ὁδο	मार्ग
ναπυ	मिरिच	ὀδοντ	दान्त (दन्त)
νευρο	नस	οἰχο	घर
νεφες	बादल(नभस्)	οἰχτο	करुणा
νιχα	जय	οἰνο	दाखरस
νοο	मन	ὀχνο	आलस
νοσο	रोग	ὀμφαλο	नाभि
νοτο	दक्षिणदिशा	ὀναρ	स्वप्न
	कावायु	ὀνειδες	निन्दा
νυχτ	रात (निशा	ὀνο	गदहा
	नक्तम्)	ὀνοματ	नाम
νυμφα	दुल्हिन	ὀνυχ	नख
νω	हमदो (नौ)	ὀπιδ	पीछा
νωτο	पीठ	ὁπλο	हथियार

ὀργα	क्रोध	πεδο	भूमि
ὀρθρο	भोर	πεινα	भूख
ὁρχο	किरिया	πειρα	यत्न
ὀρνεο	पक्षी	πελαγες	समुद्र
ὀρνιθ	पक्षी	πελεχυ	कुल्हाड़ा
ὀρες	पहाड़	πενθες	शोक
ὁρο	सीमा	πετρα	चट्टान
ὀστεο	हड्डी(अस्थि)	πετρο	पत्थर
οὐρανο	स्वर्ग	πηγα	सोता
ὀφελες	लाभ	πηχυ	भुजाका अग्रभाग
ὀφι	सर्प	πιναχ	पाटी
ὀφρυ	भौं (भ्रू)	πλανα	भ्रम
ὀχλο	भीड़ .	πλευρα	पसली
παιδ	लड़का	πλινθο	ईंट
παλα	कुश्ती	πλουτο	धन
παρθενο	कुमारी	ποδ	पांव (पद)
πατερ	पिता(पितृ)	ποθο	आकांक्षा
πατο	पन्थ(पथ)	ποιμεν	गड़ेरिया

πολεμο	युद्ध
πολι	नगर (पुरि)
ποταμο	नदी
πτερνα	एड़ी
πυλα	किवाड़
πυρ	आग
πυρο	आग
πυργο	बुर्ज
ῥαβδο	छड़ी
ῥιγες	ठण्ड
ῥιζα	जड़
ῥιν	नाक
ῥοδο	गुलाब
σαλο	चञ्चलता
σαρκ	मांस
σεληνα	चन्द्र
σηματ	चिह्न
σθενες	शक्ति
σιγα.	चुपरहना
σιδηρο	लोहा
σιτο	गोहूं
σιωπα	चुपरहना।
σκελες	जांघ और पांव
σκευος	पात्रवा समान
σκηνα	डेरा
σκια	छाया
σκοτες	अन्धियारा
σπλαγχνο	अन्तड़ी
σο	तू
σποδο	राख
σταφυλα.	गुच्छा
σταχυ	अनाजकाबाल
στηθος	छाती
στοιχο	पंक्ति
στοματ	मुख
στρατο	सेना
στρουθο	चिड़िया
συκο	अंजीर
σφαιρα	गेन्दा
σφε	वे आप
σφε	अपना (स्व)
σφω	तुमदो (वाम)

σφω	वे दो आप	ὑδατ	जल
σφραγιδ	मुद्रा	ὑδωρ	जल
σχοινο	रस्सा	ὑιο	पुत्र
σχολα	अवकाश	ὑλα	वन
σωματ	देह	ὑμε	तुम (यूयम्)
ταμια	भण्डारी	ὑμνο	गीत
ταυρο	सांड़	ὑπνο	स्वप्न
τειχες	भित्ति	ὑψες	ऊंचाई
τεκτον	बढ़ई (तक्षन्)	φαρμακο	औषध
τελες	अन्त	φεγγες	उंजियाला
τερατ	आश्चर्य की बात	φθονο	डाह
τεχνα	शिल्प	φοβο	भय
τολμα	हियाव	φοιτο	परिभ्रमण
τοξο	धनुष	φρεν	हृदय
τοπο	स्थान	φυλλο	पत्ती
τραγο	बकरा	φωνα	वाणी
τριχ	केश	φωρ	चोर
τυραννο	स्ववशीभूत स्वामी	χαλκο	तांबा
		χαριτ	कृपा
ὑ	सूकर	χειλες	ओंठ
ὑβρι	बलात्कार	χειματ	जाड़ा (हिम)

χειρ	हाथ (कर)
χην	हंस
χθον	भूमि
χιον	हिम
χλευα	ठट्ठा
χολα	पित्त
χορο	नाच
χορτο	घास
χρονο	समय
χρυσο	सोना
χρωτ	चमड़ा
χωρα	देश
ψηφο	कङ्कर
ψοφο	रव
ψυχα	प्राण
ψωμο	टुकड़ा
ὠμο	कन्धा
ὠνο	मोल
ὠο	अण्डा
ὡρα	कोई परिमित समय
ὠτ	कान

२। विशेषण।

ἀγαθο	भला
ἁγιο	पवित्र
ἁγνο	निर्म्मल
ἀθροο	घन
ἀκολουθο	अनुगामी
ἀκριβες	ठीक
ἀκρο	उत्तम
ἀληθες	सत्य
ἀλλο	अन्य
ἀμεινον	भद्रतर
ἀμφο	दोनों (उभ)
ἀξιο	योग्य
ἁπαλο	कोमल
ἀριστερο	बायां
αὐτο	वही वा यही
αὐτο	यह
βαθυ	गहिरा

βαρβαρο	म्लेच्छ
βαρυ	भारी(गुरु)
βελτο	अच्छा
βεβαιο	स्थिर
βοηθο	उपकारक
βραδυ	धीरा
βραχυ	अदीर्घ
γειτον	प्रतिवासी
γεροντ	वृद्ध
γλυκυ	मीठा
γυμνο	नंगा
δειν	अमुक
δεκα	दस (दश)
δεξιο	दहिना(दक्षिण)
δηλο	प्रगट
διακονο	परिचारक
δουλο	सेवक
δυο	दो (द्वौ)
ἑ	यह (इ)
ἐγγυ	निकट
εἰκοσι	बीस(विंशति)
ἑκα	एक
ἑκατον	सौ (शतम्)
ἐκεινο	वह
ἑκοντ	स्ववशीभूत
ἐλαφρο	हलका
ἐλαχυ	छोटा (लघु)
ἐλευθερο	निर्बन्ध
ἑν	एक
ἐννεFα	नौ (नव)
ἑξ	छः (षष्)
ἑπτα	सात(सप्त)
ἐρημο	शून्य
ἐρυθρα	लाल
ἑταιρο	संगी
ἑτοιμο	सिद्ध
εὐθυ	सीधा
εὐρυ	चौड़ा

ἥμερο	नम्रस्वभाव
ἤπιο	कोमलस्वभाव
ἥσσον वा ἥττον	न्यून
ἥσυχο	निश्चल
θερμο	उष्ण
θηλυ	स्त्रीलिङ्ग·
θρασυ	ढीठा
ἴδιο	निज
ἱερο	दैव
ἱκανο	शक्त
ἴσο	तुल्य
καθαρο	निर्मल
καινο	नया
κακο	बुरा
καλο	सुन्दर
κενο	शून्य
κοιλο	छूछा
κοινο	साधारण
κουφο	हलका
κωφο	गूंगा वा बहिरा
λευκο	श्वेत
μακαρ	धन्य
μακρο	लम्बा
μαλακο	कोमल
μεγα	बड़ा (महत्)
μεγαλο	बड़ा
μελαν	काला
μεσο	मध्य
μιο	एक
μικρο	छोटा
μονο	अकेला
μυριο	दससहस्र
μωρο	मूर्ख
νεϝο	नया (नव)
νεκρο	मृतक
ξανθο	पीला
ξενο	परदेशी
ξηρο	सूखा
ὅ	जो (यत्)
ὁ	सो (स)

ὀκτω	आठ (अष्टौ)
ὀλιγο	थोड़ा
ὁλο	समूचा (सर्व्व)
ὀξυ	तीक्ष्ण
ὀρθο	सीधा
ὀρφανο	हीन
ὁσιο	धर्म्मी
οὑτο	यह
παντ	सब
παχυ	मोटा
πεντε	पांच (पञ्च)
πικρο	कड़ुआ
πιον	चरबी से मोटा (पीवन्)
πλατυ	चौड़ा
ποικιλο	चित्र
πολλο	बहुत
πολυ	बहुत
πραο	कोमलस्वभाव
πραϋ	कोमलस्वभाव
πρεσβυ	बूढ़ा

πυκνο	घन
ῥαδιο	सहज
σαφες	स्पष्ट
σκληρο	कठोर
σκολιο	टेढ़ा
σοφο	ज्ञानी
στειρο	ऊसर
στερεο	दृढ़ (स्थिर)
στενο	सकेत
σφοδρο	अत्यन्त
ταυτο	यह
ταπεινο	नीचा
ταχυ	शीघ्र
τερεν	कोमल
τεταρ	चार (चतुर्)
τιν	कौन वा कोई (किम्)
το	सो (तद्)
τουτο	यह
τραχυ	खड़बड़
τρι	तीन (त्रि)
τυφλο	अन्धा

ὑγιες	स्वस्थ
ὑγρο	ओदा
φαυλο	निकम्मा
φιλο	प्यारा
χαλεπο	कठिन
χειρον	दुष्टतर
χηρο	हीन
χιλιο	सहस्र
χλωρο	हरा
χωλο	लंगड़ा
ψιλο	पतला
ὠκυ	शीघ्र (आशु)
ὠμο	कच्चा

३। अव्यय।

ἄγαν	अत्यन्त
+ἀγχι	निकट
ἀεὶ	सर्व्वदा
ἅλις	बस (अलम्)
ἀλλὰ	नवरन
+ἀμφὶ	दोनों ओर
ἄν	संदेहवाचक शब्द
+ἀνὰ	ऊपरकी ओर (अनु)
ἄνευ	विना
+ἀντὶ	सम्मुख
+ἀπὸ	दूरकी ओर
ἄρα	इस कारण
ἆρα	प्रश्नवाचक शब्द
+ἄρτι	तत्क्षण
αὖ	पीछेकी ओर
αὔριον	आनेवाला कल (श्वः)
ἄχρι	तक
γὰρ	क्योंकि
γε	निश्चयवाचक शब्द
δὲ	परन्तु (तु)
δεῦρο	इधर
δὴ	दृढ़तावाचक शब्द
+διὰ	विभागवाचक [illegible]
εἰ	यदि

+εἰς	भीतरकी ओर	μέχρι	तक
+ἐκ	बाहरकी ओर (उत्)	μή	मतवान (मा)
ἐκεῖ	वहां	νῦν	अब
+ἐν	भीतर (नि)	οὐ	नहीं
ἕνεκα	निमित्त	ναί	हां
ἐπεί	इसलिये कि	+ὀψέ	विलम्बमे
+ἐπί	ऊपर (अभि)	+πάλαι	पूर्वकालमें (पुरा)
εἶτα	तदनन्तर	+πάλιν	फिर (पुनर)
ἔτι	अबभी	+παρά	पास (परा)
+εὖ	अच्छीरीतिसे	πέλας	निकट
ἤ	वा	+περ	अधिकवाचकशब्द
ἤ	से (अधिकवाचकशब्द)	πέρα	पार
ἤδη	अबतक	+περί	चारों ओर (परि)
ἵνα	जिस्तें	+πρό	आगे की ओर (प्र)
καί	औरवाभी (च)	+πρός	पास (प्रति)
+κατά	नीचेकी ओर	πω	अबतक
λίαν	अधिककरके	+συν	संग (सम्)
μάλιστα	अत्यन्त	τάχα	कदाचित्
μάτην	निष्कारण	τε	और (च)
μέν	तो	+ὑπέρ	ऊपर (उपरि)
+μετά	मध्यमें	+ὑπό	नीचे (उप)

φεῦ वाह	-βλασ दूषणवाचकशब्द
χαμαί भूमिंपर	-δι दो (द्वि)
χωρίς अलग	-δυσ दूषणवाचकशब्द (दुर्)
χθές गयाकल(ह्यः)	-ἡμι आधा (सामि)
ὤ आह	-νη अभाववाचकशब्द (न)
-ἀवा ἁ ऐक्यवाचकशब्द	-τηλε दूर
-ἀν अभाववाचकशब्द	

१४५। इन अव्ययों में से जिन के पहिले — यह चिह्न हम ने लिखा सो अलग कभी नहीं मिलते हैं केवल समासों के आदि में। और जिन के पहिले हमने + यह चिह्न लिखा है सो अलग भी और समासों में भी मिलते हैं। अवशिष्ट सब अव्यय केवल अलगही मिलतेहैं।

दशम अध्याय — नामोंकानिर्माण।

१४६। उपरिलिखित मूलनामों से अधिक और

बहुत नाम हैं जो क्रियाओं वा और २ नामों से बनते हैं। इन के बनने की रीतियां अवलिखते हैं।

१। संज्ञाओं का निर्माण।

१। कितनी संज्ञाएं धातुओं से ठीक मिलतीहैं यथा ΦΥΛΑΚ से φυλακ रक्षक। २। कितनी केवल धातु के स्वर को बदल देतीहैं यथा ΦΛΕΓ से φλογ ज्वाला। ३। कितनी ο वा α लगादेतीहैं यथा ʼΕΥΧ से εὐχα प्रार्थना ΔΙΔΑΧ से διδαχα शिक्षा ΧΑΡ से χαρα आनन्द ΛΕΓ से λογο वचन ΤΥΠ से τυπο मार वा मूर्त्ति जो मारने से बनती है ΤΡΕΠ से τροπο फेर वा रीति। ये संज्ञाएं प्राय क्रियाही बनातीहैं परन्तु कभी २ कर्त्ता को यथा ΤΡΕΦ से τροφο पालक ἀνθρωπο और

KTEN से ἀνθρωποκτονο मनुष्य-घाती।

४। कितनी σα लगाती हैं यथा ΔΟΚ से δοξα मतवा महिमा।

५। कितनी σι वा σια लगाती हैं यथा λεξι उक्ति βασι गति φυσι भूति अर्थात् स्वभाव वा प्रकृति πραξι कृति θυσια हुति अर्थात् यज्ञ ἀκρασια अशक्ति। ये प्रत्यय संस्कृत ति से ठीक मिलते हैं और सदा क्रियाही को बनाते हैं।

६। कितनी μο वा σμο लगाती हैं यथा ΔΕ से δεσμο बन्धन ΣΕΙ से σεισμο भूई कांप ὀδυρμο रोदन। ये भी सदा क्रियाही को बनाते हैं।

७। कितनी μα लगाती हैं यथा ΜΝΑ से μνημα स्मृति ΓΝΟ से γνωμα ज्ञान ΤΙ से τιμα मोल वा आदर। ये कभी क्रिया और कभी २ कर्म्म बनाते हैं।

८। कितनी ματ लगातीहैं यथा πραγματ कर्म्म γραμματ जो लिखा हुआहै σπερματबोयाहुआ वीज । ये संस्कृत मनसे ठीक मिलतेहैं और सदा कर्म्म को बतातेहैं।

९। कितनी ες लगातीहैं यथा ΓΕΝ से γενες जाति ।

१०। कितनी το वा ετο वा ατο लगातीहैं यथा ΠΟ से ποτο पानी Υ से υετο वृष्टि ΘΑΝ से θανατο मृत्यु ।

११। कितनी τα वा τηρ वा τορ लगातीहैं यथा ΜΑΘ से μαθητα शिष्य ΚΡΙΝ से κριτα विचारक ΣΩ से σωτηρ त्राता ῬΕ से ῥητορ वक्ता । ये संस्कृत तृ से ठीक मिलते हैं और सदा कर्त्ता को बताते हैं ।

१२। कितनी उसी अर्थमें ευ लगातीहैं यथा γραφευ लेखक ।

१३। कितनी τρο वा τρα वा τηριο लगाती

हैं यथा λουτρο स्नानपात्र δικασ-
τηριο (जो δικαδ क्रियासे बनाहै और
यह δικα से) न्यायालय । ये संस्कृत त्र
से ठीक मिलतेहैं और क्रिया के स्थान वा
पात्र को बताते हैं ।

१४। कितनी संज्ञाएं विशेषणों वा और २
संज्ञाओं से ια के लगाने से बनती हैं यथा
ἀνερ से ἀνδρια पौरुष । इसके पहि-
ले विशेषण का अन्त्य स्वर लुप्त होताहै य-
था σοφο से σοφια पाण्डित्य κακο
से κακια बुराई ανοο से ἀνοια
मूढ़ता । और विशेषण के अन्त का το
σια होताहै यथा ἀθανατο से ἀθ-
ανασια अमरता । और ες और ευ प्राय
εια होतेहैं यथा ἀληθες से ἀληθεια
सत्यता βασιλευ से βασιλεια
राज्य । किन्तु ἀμαθες से ἀμαθια
शिक्षाहीनता और πενητ दरिद्र से

πενια दरिद्रता होतेहैं।

१५। कितनी τητ लगातीहैं यथा ἰσο से ἰσοτητ तुल्यता θεο से θεοτητ देव-ता। यह संस्कृत ता से मिलताहै।

१६। कितनी συνα लगातीहैं यथा δικαιο निर्दोष से δικαιοσυνα निर्दोषता। इसके पहिले से विशेषण का अन्त्य ν लुप्त होता-है यथा σωφρον जितेन्द्रिय से σωφρο-συνα जितेन्द्रियता। और जब ο-अन्त वि-शेषणों के ο के पहिले ह्रस्व स्वर है तब अन्त्य ο ω होता है यथा ἁγιοसे ἁγιω-συνα पवित्रता।

१७। कितनी ες लगाती हैं और इस से पहिले से विशेषण का अन्त्य υ लुप्त होता है यथा βαθυ से βαθες गम्भीरता ταχυ से ταχες शीघ्रता।

१८। संख्यावाचक विशेषणों से संज्ञाएं बन-ती हैं जिनका अर्थ है संख्याका समूह। यथा

μοναδ ऐक्य δυαδ द्वय τριαδ त्रय τετραδ चतुष्टय ἑβδομαδ सप्तत्व δεκαδ दशत्व ἑκατονταδ सौका समूह ।

१९। कितनी संज्ञाएं और २ संज्ञाओं से τα के लगाने से बनती हैं यथा πολι से πολιτα नगरवासी ।

२०। कितनी ευ वा ιευ लगाती हैं यथा ἱερο से ἱερευ याजक ἁλ से ἁλιευ मछुवा ।

२१। कितनी ων लगाती हैं यथा ἐλαια से ἐλαιων जैतून के पेड़ों की वारी ἀμπελο से ἀμπελων द्राक्षालता।

२२। स्त्रीलिङ्ग के बनाने के लिये α-अन्त पुंलिङ्ग संज्ञाएं ιδ लगाती हैं यथा δεσπ-οτα से δεσποτιδ स्वामिनी । οντ-अन्त संज्ञाएं αινα लगाती हैं यथा λεο-ντ से λεαινα सिंह की स्त्री । ευ-अन्त

संज्ञाएं εια वा ισσα लगाती हैं यथा βασιλ-
εια वा βασιλεσσα राज्ञी ।

२३। देशवासी के बताने के लिये कितने
देशों के नाम ιο वा αιο लगाते हैं यथा
Ἀθηνα से Ἀθηναιο Κορινθο से
Κορινθιο कितने ανο ηνο ινο लगा-
ते हैं यथा Ἀσια से Ἀσιανο कितने ιτα
ητα ατα ιωτα लगाते हैं यथा Ἱερο
σολυμα से Ἱεροσολυμιτα Ἰσκα-
ρα Ἰσκαριωτα और कितने ευ ल-
गाते हैं ।

२४। पुलिङ्ग सन्तान के बताने के लिये
पितरों के नाम ιδα αδα ιαδα और
स्त्रीसन्तान के बताने के लिये ιδ αδ
लगाते हैं ।

२५। लघुता के बताने के लिये कितनी
संज्ञाएं ιο ιδιο αριο ισκο ισκα
लगाती हैं यथा παιδ से παιδιο छोटा

लड़का θηρ से θηριο छोटा पशु
πλοιο नावसे πλοιαριο छोटी नाव
πιναx से πιναxιδιο छोटी पाटी
παιδ से παιδισxα छोटी लड़की।

२। विशेषणों का निर्म्माण।

२४७। MO से ἐμο मेरा σο से σο तेरा
ἡμε से ἡμετερο हमारा ὑμε से
ὑμετερο तुम्हारा(वह) आप से ὁ उस-
का अपना σφε से σφετερο उनका
अपना बनते हैं।

२४८। १। कितने विशेषण और २ नामों से
ιο वा αιο वा ειο के लगाने से बनते
हैं और इन के पहिले से अन्त्य स्वर कभी २
निकलता है कभी २ नहीं और कभी २ अ-
न्त्य ες भी निकलता है। यथा οὐρανο
से οὐρανιο स्वर्गीय φιλο से φιλιο

प्यारकरनेवाला κυρες से κυριο अधिका-
री का प्रभु θεο से θειο देव ἀγορα से
ἀγοραιο हाटवाला πατερ से πατριο
पैत्र γυναικ से γυναικειο स्त्रीसम्बन्धी।
το σιο होता है यथा πλουτο से
πλουσιο धनी ।

२। कितने εο लगाते हैं यथा χρυσο से
χρυσεο सोनहला । ये विशेषण उस वस्तु
को बताते हैं जिससे कोई पदार्थ बनाहै ।

३। कितने ικο वा τικο वा ακο लगा-
ते हैं यथा KPIN से κριτικο विचा-
रक σωματ से σωματικ शारीरिक
Ἑλλην से ἑλληνικ । ये प्रत्यय संस्कृत
इक से मिलते हैं ।

४। कितने ινο लगाते हैं यथा ἀνθρωπο
से ἀνθρωπινο मानुष λιθο से
λιθινο पत्थर का πεδο से πεδινο

चौड़स ὀρες से (ὀρεσινο कीसन्ती)
ὀρεινο पहाड़ी ।

५। कितने λο वा ηλο वा ωλο लगाते हैं यथा ΔΙ से δειλο भीरु ἉΜΑΡΤ से ἁμαρτωλο पापी ।

६। कितने ιμο वा σιμο लगाते हैं यथा ὀφελες से ὠφελιμο लाभदायक ΧΡΑ से χρησιμο काम के योग्य ।

७। कितने ρο वा ερο लगाते हैं यथा οἰκτο से οἰκτρο करुणायोग्य ΣΑΠ से σαπρο सड़ा νοσο से νοσερο रोगी ΦΑΝ से φανερο प्रकाशित ।

८। कितने εντ वा οεντ लगाते हैं यथा χαριτ से χαριεντ शोभायमान αἱματ से αἱματοεντ लहूलुहान ।

९। कितने ωδες लगाते हैं यथा γυναικωδες स्त्रीयोग्य ।

१०। कितने μον लगाते हैं यथा ἐπι और ΣΤΑ से ἐπιστημόν बुद्धिमान ἐλεο से ἐλεημον दयावान ΜΝΑ से μνημον स्मरण करनेवाला। यह संस्कृत मत् वत् से मिलताहै।

११। कितने υ लगाते हैं यथा ʽΗΔ से ἡδυ सुखदायक।

१२। कितने αν लगाते हैं यथा ΤΛΑ से τα-λαν, दुःखी।

१३। कितने τιο लगाते हैं यथा ʼΑΡ(जोड़) से ἄρτιο ठीक।

१४५। सब क्रियाओं से दो प्रकार के विशेषण बन सकते हैं। दोनों क्रिया के उस रूप से बनतेहैं जो २ लुच् में उसका होताहै।

१। एकतो τεο के लगाने से बनताहै। इस का अर्थ ठीक संस्कृत तव्य से मिलताहै यथा ποιητεο कर्त्तव्य λεκτεο वक्तव्य

φερτεο भर्तव्य।

२। दूसरा प्राय τo के लगाने से परन्तु थोड़ी क्रियाओं से νo के लगाने से बनता है। इस का अर्थ ठीक संस्कृत त वा न से मिलता है यथा βατo गत γραπτo लिखित δοτο दत्त θετο हित χλυτο श्रुत ἰτο इत ληπτο लब्ध στυγνο द्विष्ट ΔΙ से δεινο भीत अर्थात् डरावना ΣΕΒ से σεμνο पूजित।

अथ तरवर्थवाचक और तमवर्थवाचक विशेषणों का वर्णन।

१५०। सब गुणवाचक विशेषणों और बहुत अव्ययों के तरवर्थवाचक और तमवर्थवाचक रूप होते हैं।

१५१। तरवर्थवाचक का अर्थ यह है कि अल्प गुण वा गुण के अभाव का वक्ता है सो एक में दूसरे से वा कितने विशिष्ट दूसरों

से अधिक मिलता है।

१५२। तमवर्थवाचक का अर्थ यह है कि जिस गुण वा गुण के अभाव का चर्चा है सो एक में और सभों से अधिक मिलता है।

१५३। तरवर्थवाचक और तमवर्थवाचक दो प्रकार से बनते हैं। कितने विशेषण तरवर्थवाचक के लिये τερο (तर) और तमवर्थवाचक के लिये τατο (तम) लगाते हैं और कितने विशेषण तरवर्थवाचक के लिये ιον (ईयस्) और तमवर्थवाचक के लिये ιστο (इष्ठ) लगाते हैं।

१५४। जो विशेषण τερο और τατο लगाते हैं उनमें से जिनके अन्त में ς को छोड़के और कोई व्यंजन है सो अपने और τερο τατο के बीच में εσ लगाते हैं यथा σωφρον से σωφρονεστερο σωφρονεστατο। और जितने ο-अन्त विशेषण हैं यदि इस ο से पहिले जो स्वर है

सो ह्रस्व हो तो उस ० दीर्घ होगा यथा

σοφο से σοφωτερο σοφωτατο

ἁγιο से ἁγιωτερο ἁγιωτατο

१५५। ἑδε का नम वर्याचक ἐσχατο है और πρo का नमवर्याचक πρωτο है अर्थात प्रथम

१५६। जो विशेषण ιον और ιστο लगाते हैं सो इन के पहिले अन्त्यस्वर को छुड़ाते हैं यथा ἡδυ। ἡδιον ἡδιστο।

१५७। परन्तु ये विशेषण प्राय इस ऊपर के नियम के विरुद्ध होते हैं। यथा

αἰσχρο से αἰσχιον αἰσχιστο

ἐχθρο से ἐχθιον ἐχθιστο

οἰκρο से οἰκτιστο

ταχυ से θασσον ταχιστο

καλο से καλλιον καλλιστο

μεγα से μειζον μεγιστο

πολυ से πλεον वा } πλειστο
πλειον }
ἐλαχυ से ἐλασσον ἐλαχιστο
ῥαδιο से ῥαον ῥαστο
μάλα से μᾶλλον μαλιστο

१५८। कितने विशेषण ऐसे हैं कि उन का कोई तरवर्थवाचक वा तमवर्थवाचक नहीं है परन्तु उनके अर्थ में और २ विशेषणों का प्रयोग होता है। यथा

१। ἀγαθο के तरवर्थवाचक और तमवर्थवाचक नहीं होते हैं परतरवर्थवाचक के अर्थ में αμεινον वा (βελτο से) βελτιον वा (κρατες से) κρειττον वा κρεισσον का और तमवर्थवाचक के अर्थमें βελτιστο वा κρατιστο वा ἀριστο (वरिष्ठ) का प्रयोग होता है।

२। μικρο के तरवर्थवाचक और तमवर्थवाचक नहीं होते हैं पर उसके और ὀλιγο

के तरवर्णवाचक के अर्थ में ἐλασσον वा ἐλαττον और ἡσσον वा ἡττον का और μικρο ही के तमवर्णवाचक के अर्थ में ἐλαχιστο का प्रयोग होताहै।

३। κακο के तरवर्णवाचक और तमवर्णवाचक के अर्थ में न केवल κακιον κακιστο वरन χειρον χειριστο और ἡσσον वा ἡττον ἡκιστο का प्रयोग होताहै।

१५९। ἑκα के केवल तरवर्णवाचक और तमवर्णवाचक का प्रयोग होताहै। ἑκατερο का अर्थ है दोनों में प्रत्येक। ἑκαστο का अर्थ है बहुत में प्रत्येक।

१६०। ἑ (यह) के तरवर्णवाचक ही का प्रयोग होता है। ἑτερο का अर्थ है इतर अर्थात दोही में दूसरा।

अथ संख्यावाचक विशेषणों का वर्णन।

२९१। ऊपरिलिखित संख्यावाचक विशेषणों से ये भी बनते हैं।

१। ἕνδεκα ग्यारह δώδεκα बारह τρισκαίδεκα तेरह τέσσαρες καίδεκα चौदह πεντεκαίδεκα पन्द्रह ἑκκαίδεκα सोलह इत्यादि।

२। τριάκοντα तीस τεσσαράκοντα चालीस πεντήκοντα पचास ἑξήκοντα साठ ἑβδομήκοντα सत्तर ἀγδοήκοντα अस्सी ἐνενήκοντα नब्बे।

३। διακόσιο दोसौ τριακόσιο तीनसौ τετρακόσιο चारसौ πεντακόσιο पांच सौ इत्यादि।

२९२। क्रमप्रकाशक संख्यावाचक विशेषण ऊपरिलिखित संख्यावाचक विशेषणों से प्रायः το के लगाने से बनते हैं यथा τρίτο तीसरा τέταρτο चौथा πέμπτο पांचवां

ἕκτο छठवां ἔνατο नौवां δέκατο दस-वां εἰκοστο बीसवां τριακοστο तीसवां πεντηκοστο पचासवां ἑκατοστο सौवां διακοσιοστο दो सौवां χιλιοστο हज़ारवां μυριοστο दस-हज़ारवां इत्यादि ।

१६३ । परन्तु प्रथम का नाम ἕν से नहीं बना है बरन πρo का समवर्थवाचक है। और द्वितीय का नाम δυο का तत्वर्थवाचक है अर्थात् δευτερο । और सप्तम का नाम ἕβδομο और अष्टम का नाम ὄγδοο है।

१६४ । πλοο के लगाने से गुणन वाचक विशेषण होते हैं यथा ἁπλοο एकगुण διπλοο दोगुण τετραπλοο चारगुण इत्यादि ।

३। अव्ययों का निर्माण।

१९५। १। कितने अव्यय क्रियाओं से δην के लगाने से बनते हैं यथा KPYB से κρύβδην छिपकेसे ἈΜΕΙΒ से ἀμοιβδην पारी पारी।

२। कितने क्रियाओं से τι लगाने से बनते हैं यथा ὀνοματ से (ὀνοματ्य की सन्ती) ονομαστι नाम लेके Ἑλλην से ἑλληνιδ यवनभाषाबोलना और इस से ἑλληνιστι यवनभाषामें।

३। कितने संज्ञाओं से ι वा ει के लगाने से बनते हैं यथा πανοιχι समस्त घर संमेत πανδημει समस्त लोगसमेत।

४। कितने ις लगाते हैं यथा μογο से μογις वा μολις श्रम वा कठिनता से।

५। कितने अव्यय और २ अव्ययों से बने हैं। यथा

αὖ से αὖθις फिर । ἀνὰ से ἄνω ऊपर।
δι से δίχα दो टुकड़े में ।
ἐν से ἔνδον भीतर ।
ἐκ से ἔξω और ἐκτὸς बाहर ।
εἰς से ἔσω भीतर ।
κατὰ से κάτω नीचे ।
μετὰ से μεταξὺ मध्यमें ।
περὶ से πέριξ चारों ओर ।
πέρα से πέραν पार ।
πρὸ से πρωῒ भोरको πρώην
गया परसों πρὶν पहिले ।
εἰ और ἂν मिलके ἐὰν यदि होताहै ।
१९८। Tὸ और ἡμερα मिलके σημερον
आज होताहै ।
१९९। Δεῦρο का अर्थ क्रिया के मध्यम पु-
रुष के एकवचन के लोट भाव काहोता
है अर्थात् इधर आ । इस कारण से उसका

बहुवचन δεῦτε अर्थात् इधर आओ भी होताहै।

१९८। सबनरवर्णवाचक विशेषणों के क्लीबलिङ्ग के कर्त्ता वा कर्म्म के एकवचन और सब नमवर्णवाचक विशेषणों के उसी लिङ्ग के उन्हीं कारकों के बहुवचन का प्रकारवाचक अव्यय के अर्थ में प्रयोग होताहै यथा κρεῖττον और अच्छीरीतिसे ἥκιστα सबसे न्यूनरीति से अर्थात् किसी रीतिसेनहीं ।

१९९। अभ्यिस्तूचक संख्यावाचक अव्यय प्राय मूल संख्यावाचक विशेषणों से κις के लगाने से बनते हैं यथा τετράκις चार वार ἑκατοντάκις सौ वार । परन्तु तीनवार का नाम τρὶ से केवल ς के लगाने से बना है। दोवार δὶς एकवार ἅπαξ है।

२००। οὐ अल्पप्राणान्वित स्वरों के पहिले οὐκ और महाप्राणान्वित स्वरों के पहिले οὐχ होताहै ।

२०१। A का α संस्कृत स से ठीक मिलता

है। उसका मूल अर्थ ऐकान्त का है यथा ἀδελφο सहोदर ἅπαξ एक मारसे अर्थात् एकबार (सकृत्) ἁπλοο एक-गुणा। उससे ἅμα (सम) एकसाथ और ὁμο (सम) एकट्ठा निकलते हैं और इससे ὁμοῦ एक साथ और ὁμῶς तिसपरभी और ὁμοιο समान निकलते हैं।

१७२। Ἀν व्यंजनके पहिले α होता है जैसा संस्कृत में अन् व्यंजनके पहिले अ होता है। यथा ἀν और θανατο मिलके ἀθανατο अमृत ἀν और ὑποκριτο कपटी मिलके ἀνυποκριτο निष्कपट होते हैं।

१७३। ये तीन अङ्ग θεν वा θε और से δε वा σε और को ως प्रकारसे कारकों के प्रत्ययों की नाईं नामों के अन्त में लगते हैं।

θεν θε δε σε केवल संज्ञा वा संज्ञावाचक अव्ययों मे लगते हैं यथा ἄνωθεν ऊपर से οἴκαδε घर को । ως केवल विशेषणों में लगते हैं और उसके पहिले से विशेषण का अन्त्य ὄ वा α निकलता है यथा σωφρον से σωφρόνως जितेन्द्रिय की नाईं ὀντ से ὄντως सच मुच καλο से καλῶς सुन्दर रीति से और υ ε होता है यथा εὐθυ से εὐθέως शीघ्र । तरवर्थवाचक और तमवर्थवाचक विशेषणों का वर्णन हो चुका है ।

१७४। περ सम्बन्धवाचक शब्दों के अन्तमें लगता है यथा ὅς περ जो कोई ὥς περ जिस किसी रीति से καί περ यद्यपि ।

एकादश अध्याय — संज्ञाओं के रूप।

१७६। संज्ञा और विशेषणों के रूप लिङ्ग वचन कारक के अन्तर को प्रगट करते हैं। संज्ञा और विशेषण का अन्तर यह है कि प्रत्येक संज्ञा किसी विशेष लिङ्ग की है और प्रत्येक विशेषण तीनों लिङ्ग का हो सकताहै। जब हम नामों के रूपों का नाम लेंगे तब संज्ञा और विशेषणों के रूप समझना चाहिये क्योंकि अव्ययों के रूप नहीं हैं।

१७७। कारक तो मन की भावना में अति बहुत बरन कदाचित् अगण्य हो सकते हैं परन्तु यवन भाषा में इन के पांचही पृथक् २ रूप हैं अर्थात् कर्त्ता कर्म्म सम्बन्ध अधिकरण सम्बोधन।

१७८। सम्बन्ध कारक में अपादान का भी अर्थ है बरन जानपड़ता है कि यही इस

रूप का मूल अर्थ है किन्तु प्राय उस में सम्ब-
न्धही का अर्थ मिलता है इसी से हमने उस-
का नाम ऐसा रखा है ।

१७९ । अधिकरण में सम्प्रदान और करण के
भी अर्थ हैं ।

१८० । ये सब रूप प्रत्यय के नाम के अन्तमें
लगाने से बनते हैं और ये प्रत्यय तीन प्र-
कार के हैं ।

१८१ । एकप्रकार के प्रत्यय प्राय उन सब
नामों में लगते हैं जिन के अन्तमें α है।
और एक प्रकार के प्रत्यय प्राय उन सभों
में लगते हैं जिनके अन्तमें o है । और
फिर और एक प्रकार के प्रत्यय उन सब
नामों में लगते हैं जिनके अन्तमें कोई
व्यञ्जन वा ८ वा υ वा ευ है और α-
अन्त और o-अन्त नामों में से बहुत-
ही थोड़ों में भी ।

१८२। जान पड़ता है कि इस तीसरे प्रकार के प्र·
त्यय यवन भाषा के मूल प्रत्यय हैं और कि
और दोनों प्रकार के प्रत्यय इस के प्रत्ययों के
साथ α वा ० मिलाने से बने हैं। इस का·
रण से हम पहिले इसी का वर्णन करेंगे।

अथ प्रथम प्रकार के प्रत्यय।

१८३।

	एकवचन		द्विवचन	बहुवचन	
	पु॰ और स्त्री॰	क्लीव	तीनों लिङ्ग	पु॰ और स्त्री॰	क्लीव
कर्त्ता	ς		ε	ες	α
कर्म्म	α वा ν		ε	ας	α
सम्बन्ध	ος		οιν	ων	
अधिकरण	ι		οιν	σι	
सम्बोधन			ε	ες	α

१८४। जहां २ हमने सून्य स्थान छोड़ दिया तहां
कोई प्रत्यय नहीं लगताहै। किन्तु बहुत ना·
मों में सम्बोधन का एकवचन कर्त्ता के स·
मान है।

१८५। कर्म्म का एकवचन प्राय α से होता है ν से बहुत नहीं।

१८६। σι प्रत्यय स्वरादिक शब्दों के पहिले आ के σιν होताहै।

१८७। क्लीवलिङ्ग नामों के विषयमें दो बातें स्मरण रखो।

१। कर्त्ता कर्म्म सम्बोधन प्रत्येक वचनमें समान होतेहैं।

२। बहुवचन में इन तीन कारकों के अन्तमें α है।

अथ उदाहरण।

१८८। पुंलिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग संज्ञा ἄλ।

कर्त्ता	ἅλς	ἅλε	ἅλες
कर्म्म	ἅλα	ἅλε	ἅλας
सम्ब॰	ἁλος	ἁλοιν	ἁλων
अधि॰	ἁλι	ἁλοιν	ἁλσι
सम्बो॰	ἅλς	ἅλε	ἅλες

१८९। पुलिङ्ग संज्ञा χοραχ।

क॰	χόραξ	χόραχε	χόραχες
क॰	χόραχα	χόραχε	χόραχας
स॰	χόραχος	χόραχοιν	χόραχων
अ॰	χόραχι	χόραχοιν	χόραξι
स॰	χόραξ	χόραχε	χόραχες

१९०। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा σαρχ।

क॰	σάρξ	σάρχε	σάρχες
क॰	σάρχα	σάρχε	σάρχας
स॰	σαρχὸς	σαρχοῖν	σαρχῶν
अ॰	σαρχὶ	σαρχοῖν	σαρξὶ
स॰	σάρξ	σάρχε	σάρχες

१९१। क्लीब लिङ्ग संज्ञा ναπυ।

क॰	νᾶπυ	νάπυε	νάπυα
क॰	νᾶπυ	νάπυε	νάπυα
स॰	νάπυος	ναπύοιν	ναπύων
अ॰	νάπυϊ	ναπύοιν	νάπυσι
स॰	νᾶπυ	νάπυε	νάπυα

१९२। कर्त्ता के एकवचन और अधिकरण के बहुवचन को छोड़के और सब रूपों में ये प्रत्यय प्राय इसी नियम के अनुसार लगते हैं परन्तु इनदो रूपों में प्रायकरके कुछ नियमविरुद्धता होतीहै। इस के तीन कारणहैं।

१। इनदो प्रत्ययों के आदि में ० है और यह अक्षर थोड़े ही व्यंजनों से मिलसकता है प्राय व्यंजनों के उपरान्त आके चाहे वह आप लुप्तहोजाहै चाहे वह रहके दूसरे व्यंजन को छुड़ाताहै। अधिकरण के बहुवचन में सदा यही दशा होतीहै पर कर्त्ता के एकवचन में किसीनाम की यह दशा होती है किसी की वह।

२। यवन भाषा में व्यंजनों में से केवल ० ४ ० शब्द के अन्त में रह सकते हैं इसकारणसे जब नाम के अन्तमें चाहे प्रत्यय के

स्वभाव के कारण से चाहे ς के लुप्त होने से और कोई व्यंजन है तब चाहे लुप्त होता है चाहे इन तीनों में से एक बन जाता है।

३। पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग नामों के कर्त्ता के एकवचन का स्वर प्रायः दीर्घ होता है।

१६३। पुलिङ्ग संज्ञा θηρ का ς प्रत्यय कर्त्ता के एकवचन में लुप्त होता है।

क॰ θὴρ	θῆρε	θῆρες
क॰ θῆρα	θῆρε	θῆρας
स॰ θηρὸς	θηροῖν	θηρῶν
अ॰ θηρὶ	θηροῖν	θηρσὶ
स॰ θὴρ	θῆρε	θῆρες

१६४। क्लीवलिङ्ग संज्ञा σωματ का अन्त व्यंजन कर्त्ता और कर्म्म के एकवचन में और अधिकरण के बहुवचन में लुप्त होता है।

क॰ σῶμα	σώματε	σώματα
क॰ σῶμα	σώματε	σώματα
स॰ σώματος	σωμάτοιν	σωμάτων

अ· σώματι σωμάτοιν σώμασι

स· σῶμα σώματε σώματα

११५। पुलिङ्ग. संज्ञा δαιμον का स्वर दीर्घ होता है।

क· δαίμων δαίμονε δαίμονες

क· δαίμονα δαίμονε δαίμονας

स· δαίμονος δαιμόνοιν δαιμόνων

अ· δαίμονι δαιμόνοιν δαίμοσι

स· δαῖμον δαίμονε δαίμονες

११६। स्त्रीलिङ्ग. संज्ञा φρεν की यही दशा होती है।

क· φρήν φρένε φρένες

क· φρένα φρένε φρένας

स· φρενὸς φρενοῖν φρενῶν

अ· φρενὶ φρενοῖν φρεσὶ

स· φρὲν φρένε φρένες

११७। क्लीवलिङ्ग संज्ञा φωτ τ को जब अ· न्त होता है तब ς से बदल देता है।

क· φῶς φῶτε φῶτα
क· φῶς φῶτε φῶτα
स· φωτὸς φώτοιν φώτων
अ· φωτὶ φώτοιν φώσι
स· φῶς φῶτε φῶτα

१९८। पुलिङ्ग संज्ञा λεοντ कर्त्ता के एकव· वन में τ को छुड़ाताहै और अधिकरण के बहुवचनमें οντ को ουσ करदेताहै।

क· λέων λεοντε λέοντες
क· λέοντα λέοντε λέοντας
स· λέοντος λεόντοιν λεόντων
अ· λέοντι λεόντοιν λέουσι
स· λέον λέοντε λέοντες

१९९। पुलिङ्ग संज्ञा ὀδοντ दोनों रूप में οντ को ους करदेताहै।

क· ὀδοὺς ὀδόντε ὀδόντες
क· ὀδόντα ὀδόντε ὀδόντας
स· ὀδόντος ὀδόντοιν ὀδόντων

अ· ὀδόντι ὀδόντοιν ὀδόυσι
स· ὀδὸν ὀδόντε ὀδόντες

२०० । पुलिङ्ग संज्ञा ἱμαντ ντ को छुड़ा· तीहै ।

क· ἱμὰς ἱμάντε ἱμάντες
क· ἱμάντα ἱμάντε ἱμάντας
स· ἱμάντος ἱμάντοιν ἱμάντων
अ· ἱμάντι ἱμάντοιν ἱμᾶσι
स· ἱμὰν ἱμάντε ἱμάντες

२०१ । स्त्रीलिङ्ग संज्ञा νυκτ इन दो रूपों में τ को छुड़ातीहै ।

क· νὺξ νύκτε νύκτες
क· νύκτα νύκτε νύκτας
स· νυκτὸς νυκτοῖν νυκτῶν
अ· νυκτὶ νυκτοῖν νυξὶ
स· νὺξ νύκτε νύκτες

२०२ । क्लीवलिङ्ग संज्ञा γαλακτ कर्त्ता और कर्म्म के एकवचन में κτ को छुड़ातीहै ।

क· γάλα γάλακτε γάλακτα
क· γάλα γάλακτε γάλακτα
स· γάλακτος γαλάκτοιν γαλάκτων
अ· γάλακτι γαλάκτοιν γάλαξι
स· γάλα γάλακτε γάλακτα

२७३। पुलिङ्ग संज्ञा παιδ कर्त्ता और सम्बोधन के एकवचन और अधिकरण के बहुवचन में δ को छुड़ाती है।

क· παῖς παῖδε παῖδες
क· παῖδα παῖδε παῖδας
स· παιδὸς παιδοῖν παιδῶν
अ· παιδὶ παιδοῖν παισὶ
स· παῖ παῖδε παῖδες

२७४। पुलिङ्ग संज्ञा ποδ कर्त्ता और सम्बोधन के एकवचन में οδ को ου करदेताहै।

क· πούς πόδε πόδες
क· πόδα πόδε πόδας
स· ποδὸς ποδοῖν ποδῶν

अ· ποδὶ ποδοῖν ποσὶ
स· ποὺ πόδε πόδες

२०५। पुलिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग संज्ञा ὀρνιθ इन दो रूपों मे θ को छुड़ाती है।

क· ὄρνις ὀρνῖθε ὀρνῖθες
क· ὀρνῖθα ὀρνῖθε ὀρνῖθας
स· ὀρνῖθος ὀρνίθοιν ὀρνίθων
अ· ὀρνῖθι ὀρνίθοιν ὀρνῖσι
स· ὄρνις ὀρνῖθε ὀρνῖθες

२०६। बहुत δ-अन्त और θ-अन्त नामों के कर्म्म के एकवचन में δα θα की सन्ती ν भी होसकता है। यथा

स्त्रीलिङ्ग संज्ञा ἐριδ।

क· ἔρις ἔριδε ἔριδες
क· ἔριν वा ἔριδα ἔριδε ἔριδας
स· ἔριδος ἐρίδοιν ἐρίδων
अ· ἔριδι ἐρίδοιν ἔρισι
स· ἔρις ἔριδε ἔριδες

२०७। πατερ μητερ θυγατερ γαστερ सम्बन्ध और अधिकरण के एकवचन में ε को छुड़ाते हैं और अधिकरण के बहुवचन में न केवल ऐसा करते हैं बरन ρ के पीछे α भी ले लेते हैं। यथा

क·	πατήρ	πατέρε	πατέρες
क·	πατέρα	πατέρε	πατέρας
स·	πατρὸς	πατέροιν	πατέρων
अ·	πατρὶ	πατέροιν	πατράσι
स·	πατὲρ	πατέρε	πατέρες

२०८। बहुत नामों का अन्त्य व्यंजन स्वरादिक प्रत्यय के पहिले लुप्त होता है और तब प्राय दोनों स्वर संधि के नियमानुसार मिल जाते हैं।

२०९। क्लीवलिङ्ग संज्ञाएं κερατ κρεατ γηρατ τερατ τ को छुड़ाती हैं। यथा

क॰ χέρας	χέρατε वा χέρα	χέρατα वा χέρα
क॰ χέρας	χέρατε वा χέρα	χέρατα वा χέρα
स॰ χέρατος वा χέρως	χεράτοιν वा χερῷν	χεράτων वा χερῶν
अ॰ χέρατι वा χέρᾳ	χεράτοιν वा χερῷν	χέρασι
स॰ χέρας	χέρατε वा χέρα	χέρατα वा χέρα

२१०। पुलिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग संज्ञा βoF F को उक्त रूपों में छुड़ातीहै और कर्त्ता और कर्म्म और सम्बोधन के एकवचन में और अधिकरण के बहुवचनमें उसको υ से बदल देतीहै। और केवल कर्त्ता और कर्म्म और सम्बोधन के बहुवचन में सन्धि हो सकताहै। यथा

क॰ βοῦς	βόε	βόες वा βοῦς
क॰ βοῦν	βόε	βόας वा βοῦς
स॰ βοός	βοοῖν	βοῶν
अ॰ βοΐ	βοοῖν	βουσί
स॰ βοῦ	βόε	βόες वा βοῦς

२२१। वैसी ही γραF भी होतीहै किन्तु γρ· ᾱες और γρᾱας दोनों संधिके नियम वि· रुद्ध γραῦς होतेहैं।

२२२। जितने नामों के अन्त में ς है सभों के का स्वरादिक प्रत्ययों के पहिले लुप्त होना अवश्यक है। और इन नामों के विषय में और तीन बातें स्मरणरखो।

१। नाम का ε ε प्रत्यय से मिलके ει न· हीं वरन η होताहै और ας प्रत्यय से मि· लके ης नहीवरन εις होताहै।

२। σι प्रत्यय के पहिले इन नामों का ς लुप्त होताहै।

३। जितनी संज्ञाओं के अन्त में ες है सब क्लीवलिङ्ग हैं और निष्प्रत्यय रूपों मे यह ες ος बन जाताहै। यथा

क्लीवलिङ्ग संज्ञा ἐθνες।

क·	ἔθνος	ἔθνη	ἔθνη
क·	ἔθνος	ἔθνη	ἔθνη

स· ἔθνοῦς	ἐθνοῖν	ἐθνῶν
श्र· ἔθνει	ἐθνοῖν	ἔθνεσι
स· ἔθνος	ἔθνη	ἔθνη

२१३। स्त्रीलिङ्ग संज्ञाएं αἰδο φειδο केवल एकवचन की होती हैं स्वरादिक प्रत्ययों में संधि होता है और सम्बोधन में οι होता हैं। यथा

क· αἰδὼς क· αἰδὼ स· αἰδοῦς
श्र· αἰδοῖ स· αἰδοῖ

२१४। जिन नामों के अन्त में ι वा υ है उन के केवल कर्त्ता कर्म्म सम्बोधन के बहुवचन में संधि होता है। और उन के कर्म्म के एकवचन में प्राय ν प्रत्यय लगता है। यथा

पुलिङ्ग संज्ञा ἰχθυ।

क· ἰχθὺς	ἰχθύε	ἰχθῦς
क· ἰχθὺν	ἰχθύε	ἰχθῦς
स· ἰχθύος	ἰχθύοιν	ἰχθύων

अ·	ἰχθύϊ	ἰχθύοιν	ἰχθύσι
स·	ἰχθῦ	ἰχθύε	ἰχθῦς

२२५। परन्तु साधारण भाषा में इन नामों का ι और υ कर्त्ता कर्म्म सम्बोधन के एकवचन को छोड़के और सब रूपों में ε बन जाताहै और तब अधिकरण के एकवचन में भी संधि होताहै। और पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग नामों के सम्बन्ध के ος और οιν का ο दीर्घ होताहै। यथा

स्त्रीलिङ्ग संज्ञा πολι।

क·	πόλις	πόλεε	πόλεις
क·	πόλιν	πόλεε	πόλεις
स·	πόλεως	πόλεων	πόλεων
अ·	πόλει	πόλεων	πόλεσι
स·	πόλι	πόλεε	πόλεις

वर्ज्जित संज्ञा ἀστυ।

क·	ἄστυ	ἄστεε	ἄστη
क·	ἄστυ	ἄστεε	ἄστη
स·	ἄστεος	ἀστέοιν	ἀστέων

अ· ἄστει	ἀστέοιν	ἄστεσι
स· ἄστυ	ἄστεε	ἄστη.

२१९। जिन नामों के अन्त में ευ है उन का ευ वैसाही अधिकरण के बहुवचन को छोड़के और तब उक्त रूपों में ε होता है। किन्तु सम्बन्ध के केवल एकहीवचन के प्रत्यय का ο दीर्घ होताहै। और कर्म्म के बहुवचन में प्राय सन्धि नहीं होता है। और कर्म्म के एकवचन का प्रत्यय α है। यथा

क· βασιλεύς	βασιλέε	βασιλεῖς
क· βασιλέα	βασιλέε	βασιλεῖς वा βασιλέας
स· βασιλέως	βασιλέοιν	βασιλέων
अ· βασιλεῖ	βασιλέοιν	βασιλεῦσι
स· βασιλεῦ	βασιλέε	βασιλεῖς

अथ द्वितीय प्रकार के प्रत्यय।

२२०। द्वितीयप्रकार की सब संज्ञाओं के अन्त में ο है और उन के प्रत्यय ο से मि·

लके ऐसे होते हैं।

	एकवचन		द्विवचन	बहुवचन	
	पुंओर स्त्री	क्लीव	तीनों लिङ्ग	पुंओर स्त्री	क्लीव
कर्त्ता	oς	ov	ω	oι	α
कर्म्म	ov		ω	ouς	α
सम्ब	~ou		oιv	ωv	
अधि	ῳ		oιv	oις	
संबो	ε	ov	ω	oι	α

२१८। अब विचार करने से देख पड़ता है कि oς ῳ ω oιv ouς α ωv oις और कर्म्म का ov ये प्रत्यय पहिले प्रकार के प्रत्ययों के साथ o मिलने से बने हैं। परन्तु क्लीव लिङ्ग का ov और ou ε oι ये प्रत्यय कहां से आये हैं सो स्पष्ट नहीं है। केवल ou के विषय में जान पड़ता है कि मूल रूप oσιo था और पीछे oι तु म हुआ।

अथ उदाहरण।

२१९। पुलिङ्ग संज्ञा ἀνθρωπο।

क॰	ἄνθρωπος	ἀνθρώπω	ἄνθρωποι
क॰	ἄνθρωπον	ἀνθρώπω	ἀνθρώπους
स॰	ἀνθρώπου	ἀνθρώποιν	ἀνθρώπων
ग्र॰	ἀνθρώπῳ	ἀνθρώποιν	ἀνθρώποις
स॰	ἄνθρωπε	ἀνθρώπω	ἄνθρωποι

२२०। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा ὁδο।

क॰	ὁδὸς	ὁδὼ	ὁδοὶ
क॰	ὁδὸν	ὁδὼ	ὁδοὺς
स॰	ὁδοῦ	ὁδοῖν	ὁδῶν
ग्र॰	ὁδῷ	ὁδοῖν	ὁδοῖς
स॰	ὁδὲ	ὁδὼ	ὁδοὶ

२२१। क्लीवलिङ्ग संज्ञा φυλλο।

क॰	φύλλον	φύλλω	φύλλα
क॰	φύλλον	φύλλω	φύλλα
स॰	φύλλου	φύλλοιν	φύλλων
ग्र॰	φυλλῷ	φύλλοιν	φύλλοις
स॰	φύλλον	φύλλω	φύλλα

२२२। θεο का सम्बोधन θεε नहीं वरन θεός है।

२२३। जिन नामों के अन्तमें εό और οο है उन में से बहुतों में नियमानुसार संधि होता है किन्तु क्लीवलिङ्ग के कर्त्ता आदि के बहुवचन के εα और οα दोनों α होतेहैं।

पुलिङ्ग संज्ञा νοο।

क॰	νοῦς	νῶ	νοῖ
क॰	νοῦν	νῶ	νοῦς
स॰	νοῦ	νοῖν	νῶν
अ॰	νῷ	νοῖν	νοῖς
स॰	νοῦ	νῶ	νοῖ

क्लीवलिङ्ग संज्ञा ὀστεο।

क॰	ὀστοῦν	ὀστῶ	ὀστᾶ
क॰	ὀστοῦν	ὀστῶ	ὀστᾶ
स॰	ὀστοῦ	ὀστοῖν	ὀστῶν
अ॰	ὀστῷ	ὀστοῖν	ὀστοῖς
स॰	ὀστοῦν	ὀστῶ	ὀστᾶ

अथ तृतीय प्रकार के प्रत्यय।

२२४। तृतीयप्रकार की सब संज्ञाओं के अन्तमें α है और उनमें से कोई क्लीवलिङ्ग नहीं है। उनके रूप ऐसे होतेहैं।

	एकवचन		द्विवचन	बहुवचन
	पुलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	दोनों लिङ्ग	दोनों लिङ्ग.
कर्त्ता·	ας	α	α	αι
कर्म्म·	αν		α	ας
सम्ब·	ου	·ας	αιν	ων
अधि·	ᾳ		αιν	αις
सम्बो·	α		α	αι

२२५। इन प्रत्ययों में भी कितने मूलप्रत्ययों के साथ α के मिलाने से हुए हैं और कितनों का मूल अस्पष्ट है परन्तु दूसरे प्रकार के प्रत्ययों से न्यूनाधिक मिलतेहैं।

अथ उदाहरण।

२२६। पुलिङ्ग संज्ञा ταμια।

क·	ταμίας	ταμία	ταμίαι
क·	ταμίαν	ταμία	ταμίας
स·	ταμίου	ταμίαιν	ταμιῶν
अ·	ταμίᾳ	ταμίαιν	ταμίαις
स·	ταμία	ταμία	ταμίαι

२२७। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा ἡμερα।

क·	ἡμέρα	ἡμέρα	ἡμέραι
क·	ἡμέραν	ἡμέρα	ἡμέρας
स·	ἡμέρας	ἡμέραιν	ἡμερῶν
अ·	ἡμέρᾳ	ἡμέραιν	ἡμέραις
स·	ἡμέρα	ἡμέρα	ἡμέραι

२२८। परन्तु प्राय α–अन्त संज्ञाए साधारण भाषा में एकवचनमें α को η से बदलदेते हैं। किन्तु पुलिङ्ग संज्ञाए सम्बोधनके एकवचन मे α को रहने देतेहैं। यथा

पुलिङ्ग संज्ञा μαθητα।

क·	μαθητὴς	μαθητὰ	μαθηταὶ

क·	μαθητὴν	μαθητὰ	μαθητὰς
स·	μαθητοῦ	μαθηταῖν	μαθητῶν
अ·	μαθητᾷ	μαθηταῖν	μαθηταῖς
स·	μαθητὰ	μαθητὰ	μαθηταὶ

स्त्रीलिङ्ग संज्ञा ψυχα ।

क·	ψυχὴ	φυχὰ	φυχαὶ
क·	ψυχὴν	φυχὰ	φυχὰς
स·	ψυχῆς	φυχαῖν	φυχῶν
अ·	ψυχῇ	φυχαῖν	φυχαῖς
स·	ψυχὴ	φυχὰ	φυχὰι

२२९ । और थोड़ी स्त्रीलिङ्ग α– अन्त संज्ञाएं केवल सम्बन्ध और अधिकरण के एकवचन में α को η कर देते हैं और किसी रूप में नहीं । यथा

स्त्रीलिङ्ग संज्ञा δοξα

क·	δόξα	δόξα	δόξαι
क·	δόξαν	δόξα	δόξας

स॰ δόξης	δόξαιν	δοξῶν
स॰ δόξῃ	δόξαιν	δόξαις
स॰ δόξα	δόξα	δόξαι

द्वादश अध्याय। नियमविरुद्ध संज्ञाएं।

---

२३० । ἐγω — μο — νω — ἡμε ।

क॰ ἐγω	νῶϊ वा νὼ	ἡμεῖς
क॰ με वा ἐμὲ	νῶϊ वा νὼ	ἡμᾶς
स॰ μου वा ἐμοῦ	νῶϊν वा νῷν	ἡμῶν
अ॰ μοι वा ἐμοῖ	νῶϊν वा νῷν	ἡμῖν

२३१ । σο — σφω — ὑμε ।

क॰ σὺ	σφῶϊ वा σφὼ	ὑμεῖς
क॰ σε	σφῶϊ वा σφὼ	ὑμᾶς
स॰ σου	σφῶϊν वा σφῷν	ὑμῶν
अ॰ σοι	σφῶϊν वा σφῷν	ὑμῖν

२३२ । ὁ (सो) — σφω — σφε ।

		पुं॰ स्त्री॰	क्लीब·
क·	σφωέ	σφεῖς	σφέα
क· ἕ	σφωέ	σφᾶς	σφέα
स· οὗ	σφωῒν	σφῶν	
अ· οἷ	σφωῒν	σφίσι	

कर्त्ता का एकवचन नहीं है ।

२३३ । ἀνερ ।

सब स्वरादिक प्रत्ययों के पहिले ε के स्थाने δ रखना है और अधिकरण के बहुवचन में न केवल ऐसा करना है बरन ρ के पीछे α भी लेना है । यथा

क· ἀνὴρ	ἄνδρε	ἄνδρες
क· ἄνδρα	ἄνδρε	ἄνδρας
स· ἀνδρὸς	ἀνδροῖν	ἀνδρῶν
अ· ἀνδρὶ	ἀνδροῖν	ἀνδράσι
स· ἄνερ	ἄνδρε	ἄνδρες

२३४ । क्लीबलिङ्ग संज्ञाएं γονατ–γονυ । δορατ–δορυ । γονυ और δορυ निष्प·

न्यय रूपों में होताहै।

γονατ और δοϱατ और सब रूपों में।

२३५। γονα(x)ι

कर्त्ता के एकवचन में न केवल ς प्रत्यय को छुड़ाताहै वरन x को भी छुड़ाके αι को η से बदल देताहै।

२३६। ΔιF

एकही वचन में होताहै और कर्त्ता और सम्बोधन में Ζευ बन जाता है।

२३७। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा χλειδ

के कर्म्म के बहुवचनमें δ छूटके χλειῖς भी हो सकताहै।

२३८ χυν — χυον।

χυον कर्त्ता और सम्बोधन के एकवचन में होताहै।

χυν और सब रूपों में।

२३९। μαρτυρ।

कर्त्ता के एकवचन में μαρτυς होताहै और कर्म्म के एकवचन में μαρτυν भी हो सकताहै ।

२४० । स्त्रीलिङ्ग संज्ञा ναF के रूप ऐसे होते हैं ।

क॰	ναῦς	νῆε	νῆες
क॰	ναῦν	νῆε	ναῦς
स॰	νεώς	νεοῖν	νεῶν
अ॰	νηί	νεοῖν	ναυσί
स॰	ναῦ	νῆε	νῆες

२४१ । क्लीवलिङ्ग संज्ञा πυρ—πυρο ।
πυρ एकवचन में और द्विवचनमें होता है ।

πυρο बहुवचन में ।

२४२ । क्लीवलिङ्ग संज्ञा ὑδατ—ὑδωρ
ὑδωρ निष्प्रत्यय रूपों में होताहै ।
ὑδατ और सब रूपों में ।

२४३। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा χ६८ρ

सम्बन्ध और अधिकरण के द्विवचन और अधिकरण के बहुवचन में χ६० होता है।

२४४। क्लीवलिङ्ग संज्ञा ώᴛ

निष्प्रत्यय रूपों में oᴗ̃c होता है।

त्रयोदश अध्याय—विशेषणों के रूप।

२४५। प्रत्येक विशेषण मानों तीन संज्ञाओं का समूह है। कितने विशेषण केवल पहिले प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं कितने केवल दूसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं कितने दूसरे और तीसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं और कितने पहिले और तीसरे प्रकारके प्रत्यय लगाते हैं।

प्रथम भाग।

अथ उन विशेषणों का वर्णन जो केवल पहिले प्रकारके प्रत्यय लगाते हैं।

२४६। अथ उदाहरण।

πεπον पक्का।

	एकवचन		द्विवचन
	पुं॰स्त्री॰	क्लीव॰	तीनों लिङ्ग॰
क॰	πέπων	πέπον	πέπονε
क॰	πέπονα	πέπον	πέπονε
स	πέπονος		πεπόνοιν
सं॰	πέπονι		πεπόνοιν
स॰	πέπον		πέπονε

बहुवचन	
पुं॰स्त्री॰	क्लीव॰
πέπονες	πέπονα
πέπονας	πέπονα
πεπόνων	
πέποσι	
πέπονες	πέπονα

τετραποδ चवपाद।

	एकवचन	
	पुं॰स्त्री॰	क्लीव॰
क॰	τετράπους	-πουν
क॰	τετράποδα	-πουν
स	τετράποδος	
सं॰	τετράποδι	
स॰	τετράπου	-πουν

द्विवचन	बहुवचन
तीनों लिङ्ग॰	पुं॰स्त्री॰ क्लीव।
τετράποδι	τέτράποδες -ποδα

τετράποδε	τετράποδας -ποδα
τετραπόδοιν	τετραπόδων
τετραπόδοιν	τετράποσι
τετράποδε	τετράποδες -ποδα

२४७। ες — अन्त विशेषणों के क्लीवलिङ्ग के निष्प्रत्यय रूपों में ες ही रहता है संज्ञाओं की नाईं ος नहीं होताहै। यथा

	पु॰ वा स्त्री॰	क्लीव	तीनों लिङ्ग
क॰	ἀληθὴς	ἀληθὲς	ἀληθῆ
क॰	ἀληθῆ	ἀληθὲς	ἀληθῆ
स॰	ἀληθοῦς		ἀληθοῖν
अ॰	ἀληθεῖ		ἀληθοῖν
स॰	ἀληθὲς		ἀληθῆ

पु॰ वा स्त्री॰	क्लीव॰
ἀληθεῖς	ἀληθῆ
ἀληθεῖς	ἀληθῆ
ἀληθῶν	
ἀληθέσι	
ἀληθεῖς	ἀληθῆ

२४८। जिन तरवर्थवाचक विशेषणों के अन्तमें ον है वे कर्म्म के एकवचन और कर्त्ता कर्म्म सम्बोधन के बहुवचन में ν को छुड़ा सकते हैं तब संधि होती है। यथा

χρειττον।

पुलिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग	क्लीब	तीनों लिङ्ग
क॰ χρείττων	-ττον	χρείττονε
क॰ χρείττονα वा χρείττω	-ττον	χρείττονε
स॰ χρείττονος		χρειττόνοιν
स॰ χρείττονι		χρειττόνοιν
स॰ χρείττον		χρείττονε

पु॰ वा स्त्री	क्लीब
χρείττονες वा χρείττους	-ττονα वा ττω
χρείττονας वा χρείττους	-ττονα वा ττω
χρειττόνων	
χρείττοσι	
χρείττονες वा χρείττους	-ττονα वा ττω

द्वितीय भाग ।

अथ उनविशेषणों का वर्णन जो केवल दूसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं

२४९ । वहुत ο-अन्त विशेषण ऐसे होते हैं । यथा ἥσυχο ।

	पुं वा स्त्री	क्लीब	तीनो लिः	पुं वा स्त्री	क्लीब
क.	ἥσυχος	ἥσυχον	ἡσύχω	ἥσυχοι	ἥσυχα
क.	ἥσυχον		ἡσύχω	ἡσύχους	ἥσυχα
स.	ἡσύχου		ἡσύχοιν	ἡσύχων	
अ.	ἡσύχῳ		ἡσύχοιν	ἡσύχοις	
स.	ἥσυχε	ἥσυχον	ἡσύχω	ἥσυχοι	ἥσυχα

२५० । थोड़े विशेषण ο-अन्त नहीं वरन ο को दीर्घ करके ω-अन्त होते हैं । यथा

ἵλεω प्रसन्न ।

	पुं वा स्त्री	क्लीब	तीनो लि.	पुं वा स्त्री	क्लीब लिङ्ग
क.	ἵλεως	ἵλεων	ἵλεω	ἵλεω	
क.	ἵλεων		ἵλεω	ἵλεως	ἵλεω

स· ἵλεω ἱλεῴν ἵλεων

अ· ἱλεῴ ἱλεῴν ἵλεως

स· ἵλεως ἵλεων ἵλεω ἵλεω

तृतीय भाग।

अथ उन विशेषणों का वर्णन जो दूसरे और तीसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं।

२५१। ये सब विशेषण पुलिङ्ग और क्लीव-लिङ्ग में दूसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं और स्त्रीलिङ्ग में तीसरे प्रकार के प्रत्यय।

२५२। इन सब विशेषणों को हम सुबीता के निमित्त ο-अन्त तो कहते हैं परन्तु सच पूछो तो उन के पुलिङ्ग और क्लीवलिङ्ग ο-अन्त हैं और उन के स्त्रीलिङ्ग α-अन्त। यथा सच पूछो तो दो विशेषण हैं καλο और καλα किन्तु सुबीता के लिये हम दोनों को καλο कहते हैं मानों एकही होता।

२५३। इन विशेषणों का स्त्रीलिङ्ग यदि α के पहिले ρ वा ο को छोड़के और कोई स्वर हो तो α को नहीं बदल देता है पर यदि ο वा ρ को छोड़के और कोई व्यंजन हो तो समस्त एकवचन में α को η से बदल देता है। यथा

ο – अतिरिक्तस्वरान्वित विशेषण νεο।

	पुं॰लिङ्ग	क्लीव	स्त्री॰	पुं॰क्लीव	स्त्री॰
क॰	νέος	νέον	νέα	νέω	νέα
क॰		νέον	νέαν	νέω	νέα
स॰		νέου	νέας	νέοιν	νέαιν
स॰		νέῳ	νέᾳ	νέοιν	νέαιν
स॰	νέε	νέον	νέα	νέω	νέα

पुंलिङ्ग	क्लीव	स्त्री
νέοι	νέα	νέαι
νέους	νέα	νέας
νέων		νέων
νέοις		νέαις
νέοι	νέα	νέαι

ρ-अतिरिक्तव्यंजनान्वित विशेषण φιλο।

क॰	φίλος φίλον	φίλη	φίλω	φίλα
क॰	φίλον	φίλην	φίλω	φίλα
स॰	φίλου	φίλης	φίλοιν	φίλαιν
स॰	φίλῳ	φίλῃ	φίλοιν	φίλαιν
स॰	φίλε φίλον	φίλη	φίλω	φίλα

φίλοι	φίλα	φίλαι
φίλους	φίλα	φίλας
	φίλων	φίλων
	φίλοις	φίλαις
φίλοι	φίλα	φίλαι

२५४। गुणवाचक विशेषण οα को संधि से मिलाके α बनाते हैं और οη को η बनाते हैं। यथा ἁπλοο।

एकवचन.

	उभलिङ्ग	क्लीबलिङ्ग
क॰	ἁπλόος ἁπλοῦς	ἁπλόον ἁπλοῦν
क॰	ἁπλόον ἁπλοῦν	ἁπλόον ἁπλοῦν

ἁπλόη ἁπλῆ
ἁπλόη ἁπλῆ इत्यादि

बहुवचन

क॰	ἁπλόοι ἁπλοῖ	ἁπλόα ἁπλᾶ
क॰	ἁπλόους ἁπλοῦς	ἁπλόα ἁπλᾶ

ἁπλόαι ἁπλαῖ
ἁπλόας ἁπλᾶς इत्यादि

२५५ । वस्तुवाचक εο – अन्त विशेषण स्त्रीलिङ्ग के εα को मिलाके η बनाते हैं और क्लीबलिङ्ग के εα को α । यथा χρυσεο ।

एकवचन

	पुंलिङ्ग	क्लीबलिङ्ग
क॰	χρύσεος χρυσοῦς	χρύσεον χρυσοῦν
क॰	χρύσεον χρυσοῦν	χρύσεον χρυσοῦν

स्त्रीलिङ्ग । χρύσεα χρυσῆ
χρύσεαν χρυσῆν

बहुवचन

क. χρύσεαι χρυσαῖ χρύσεα χρυσᾶ

χρύσεαι χρυσαῖ इत्यादि

चतुर्थ भाग।

अथ उनविशेषणों का वर्णन जो पहिले औ र तीसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं।

२५६। इनसभों के पुलिङ्ग और क्लीवलिङ्ग पहिले प्रकारके प्रत्यय लगाते हैं और स्त्रीलिङ्ग तीसरे प्रकार के प्रत्यय। और स्त्रीलिङ्ग अपने अन्त्यभाग को कुछ न कुछ बदलके ये प्रत्यय लगाताहै।

२५७। υ-अन्त विशेषणों का स्त्रीलिङ्ग υ को ει करदेताहै। यथा

ἡδυ सुखदायक।

	पु.	क्ली.	स्त्री.	पु. व क्ली.	स्त्री.
क.	ἡδύς	ἡδύ	ἡδεῖα	ἡδέε	ἡδεία
क.	ἡδύν	ἡδύ	ἡδεῖαν	ἡδέε	ἡδεία
स.	ἡδέος		ἡδείας	ἡδέοιν	ἡδείαιν

अ· ἡδεῖ ἡδείᾳ ἡδέοιν ἡδείαιν

स· ἡδὺ ἡδεῖα ἡδέε ἡδεία

पु·	क्ली·	स्त्री·
ἡδεῖς	ἡδέα	ἡδεῖαι
ἡδεῖς	ἡδέα	ἡδείας
ἡδέων		ἡδειῶν
ἡδέσι		ἡδείαις
ἡδεῖς	ἡδέα	ἡδεῖαι

२५८। सब ντ-अन्त क्रिया के विशेषणों का स्त्रीलिङ्ग ντ को σ बनाके पूर्वगतस्वर को बढ़ाता है अर्थात् αντ को ασ εντ को εισ οντ को ουσ करदेताहै। और उस के सम्बन्ध और अधिकरण के एकवचन में α η से बदल जाताहै। यथा

२ लुङ् के विशेषण भाव का परस्मैपद

πραξαντ।

	पु·	क्ली·	स्त्री·	पु·वा क्ली·	स्त्री·
क·	πράξας	-ξαν	-ξασα	-ξαντε	-ξασα
क·	πράξαντα	-ξαν	-ξασαν	-ξαντε	-ξασα

सं·	πράξαντος -ξάσης	-ξάντοιν -ξάσαιν	
अ·	πράξαντι -ξάσῃ	-ξάντοιν -ξάσαιν	
सं·	πράξαν -ξασα	-ξαντε ξασα	

पु·	क्लीव	स्त्री·
-ξαντες	-ξαντα	-ξάσαι
-ξαντας	-ξαντα	-ξάσας
-ξάντων		-ξασῶν
-ξασι		-ξάσαις
-ξαντες	-ξαντα	-ξάσαι

२ लुङ का विशेषण भाव λεχθεντ ।

	पु·	क्लीव	स्त्री·	पु·क्ली·	स्त्री·
क·	λεχθεὶς	-θὲν	-θεῖσα	-θέντε	-θείσα
क·	λεχθέντα	-θὲν	-θεῖσαν	-θέντε	-θείσα
स	λεχθέντος		-θείσης	-θέντοιν	-θείσαιν
अ·	λεχθέντι		-θείσῃ	-θέντοιν	-θείσαιν
सं·	λεχθὲν		-θεῖσα	-θέντε	-θείσα

पु·	क्लीव·	स्त्री·
-θέντες	-θέντα	-θεῖσαι

-θέντας -θέντα -θείσαις
θέντων θεισῶν
-θεῖσι -θείσαις
-θέντες -θέντα -θεῖσαι

लट् के विशेषणभावका परस्मैपद βαινοντ

क॰ βαίνων -νον -νουσα		-νοντε -νούσα
क॰ βαίνοντα -νον -νουσαν		-νοντε -νούσα
तृ॰ βαίνοντος	-νούσης	-νόντοιν -νούσαιν
च॰ βαίνοντι	-νούσῃ	-νόντοιν -νούσαιν
सं॰ βαίνον	-νουσα	-νοντε -νούσα

-νοντες -νοντα -νουσαι
-νοντας -νοντα -νούσας
-νόντων -νουσῶν
-νουσι -νούσαις
-νόντες -νοντα -νουσαι

२५९। αντ-अन्त विशेषण παντ भी वैसाही होता है। यथा

क॰ πᾶς	πᾶν	πᾶσα	πάντε	πάσα
क॰ πάντα	πᾶν	πᾶσαν	πάντε	πάσα
स॰	παντός	πάσης	πάντοιν	πάσαιν
अ॰	παντί	πάσῃ	πάντοιν	πάσαιν
स॰	πᾶν	πάσα	πάντε	πάσα

πάντες πάντα πάσαι
πάντας πάντα πάσας
πάντων πασῶν
πᾶσι πάσαις
πάντες πάντα πάσαι

२९० । और οντ – अन्त विशेषण ἔχοντ भी वैसाही होताहै । यथा

क॰ ἔχων ἔχον ἔχουσα | ἔχοντε ἐχούσα |
ἔχοντες ἔχοντα ἔχουσαι इत्यादि

२९१ । परन्तु εντ – अन्त विशेषणों का जो क्रिया के विशेषण नहीं हैं स्त्रीलिङ्ग εντ को εσσ से बदल देताहै ।

यथा αἱματοεντ ।

क॰ αἱματόεις -τόεν-τόεσσα | τόεντε-τοέσσα | -τόεντες-τόεντα-τόεσσαι इत्यादि ।

२६२ । μελαν ταλαν τερεν का स्त्रीलिङ्ग α को αι और ε को ει करदेते हैं । यथा

क॰ μέλας-λαν-λαινα	-λανε -λαίνα	-λανες-λανα-λαιναι
क॰ μέλανα-λαν-λαιναν	-λανε -λαίνα	-λανας-λανα-λαίνας
स॰ μέλανος -λαίνης	-λάνοιν-λαίναιν	-λάνων -λαινῶν
ञ॰ μέλανι -λαίνῃ	-λάνοιν-λαίναιν	-λασι -λαίναις
स॰ μέλαν -λαινα	-λανε -λαίνα	-λανες -λανα-λαιναι

२६३ । οτ-अन्त क्रिया के विशेषणोंका स्त्रीलिङ्ग οτ के स्थाने υι [illegible] होताहै । यथा

२ लिङ्ग का विशेषण भाव εἰδοτ।

क॰ εἰδώς	εἰδός	εἰδυῖα	εἰδότε	εἰδυία
क॰ εἰδότα	εἰδός	εἰδυῖαν	εἰδότε	εἰδυία
स॰	εἰδότος	εἰδυίας	εἰδότοιν	εἰδυίαιν
सं॰	εἰδότι	εἰδυίᾳ	εἰδότοιν	εἰδυίαιν
स॰	εἰδός	εἰδυῖα	εἰδότε	εἰδυία

εἰδότες	εἰδότα	εἰδυῖαι
εἰδότας	εἰδότα	εἰδυίας
εἰδότων		εἰδυιῶν
εἰδόσι		εἰδυίαις
εἰδότες	εἰδότα	εἰδυῖαι

चतुर्दश अध्याय— नियमविरुद्ध विशेषण।

२६४। πολυ—πολλο। μεγα—μεγαλο।

πολυ और μεγα पुलिङ्ग॰ और क्ली॰ बलिङ्ग॰ के कर्त्ता और कर्म्म के एकवचन में होतेहैं। πολλο और μεγαλο

और सब रूपों में । यथा

क· πολύς πολὺ πολλή | πολλὼ πολλὰ
क· πολὺν πολὺ πολλὴν | πολλὼ πολλὰ

πολλοί πολλὰ πολλαί
πολλοὺς πολλὰ πολλὰς इत्यादि

क· μέγας μέγα μεγάλη | μεγάλω μεγαλα
क· μέγαν μέγα μεγάλην | μεγάλω μεγαλα

μεγαλοι -λα -λαι इत्यादि
-λους -λα -λας

२६५ । ἕν —— μιο ।

ἑν पुलिङ्ग और क्लीबलिङ्ग में होता है ।

μιο स्त्रीलिङ्ग में । यथा

क·	εἷς	ἕν	μία
क·	ἕνα	ἕν	μίαν
सं·	ἑνὸς		μίας
स·	ἑνὶ		μίᾳ
सं·	ἕν		μία

२९९ δυο और ἀμφο

द्विवचनमें केवल दूसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं। परन्तु इस से अधिक δυο कर्त्ता और कर्म्म में वैसाही रह भी सकता है अर्थात् δύο। और सम्बन्ध और अधिकरण में बहुवचन के पहिले प्रकार के प्रत्यय भी लग सकता है अर्थात् δυῶν δυσί।

३००। τρι

के पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग कर्त्ता के ιε और कर्म्म के ια दोनों को ει बनाते हैं। यथा

	पु॰ और स्त्री॰	क्लीब॰
क॰	τρεῖς	τρία
क॰	τρεῖς	τρία
स॰	τριῶν	
अ॰	τρισὶ	
स॰	τρεῖς	τρία

३०१ τεταρ

समासों में τετρα होताहै और सब समा

स में नहीं आता है तब साधारण भाषा में τεσσαρ होता है।

२६९। τιν

का ν क्लीबलिङ्ग के निश्चमाय रूपों में लुप्त होता है। यथा

	पु॰ और स्त्री॰	क्ली॰	तीनों लिङ्ग	पु॰ और स्त्री॰	क्लीब
क॰	τις	τι	τινε	τινες	τινα
क॰	τινα	τι	τινε	τινας	τινα
स॰	τινος		τινοιν	τινων	
[illegible]	τινι		τινοιν	τισι	

२७०। αὐτο ἐκεινο ὁ (जो) το τουτο ἀλλο के क्लीब लिङ्ग के कर्त्ता और कर्म्म के एकवचन में चाहता था कि ν के स्थाने τ प्रत्यय लगे जैसा बहुत संस्कृत सर्व्वनामों में त् लगता है। परन्तु यह τ लुप्त हुआ है। यथा

क॰ ἄλλος ἄλλο ἄλλη ἄλλω ἄλλα
क॰ ἄλλον ἄλλο ἄλλην ἄλλω ἄλλα

ἄλλοι ἄλλα ἄλλαι
ἄλλους ἄλλα ἄλλας इत्यादि

२७१। τό———ὁ (सो)।

ὁ पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग के कर्त्ता के एकवचन और बहुवचन में होता है। το और सब रूपों में। और इस से अधिक पुलिङ्ग का प्रत्यय ς लुप्त होताहै जैसा संस्कृत में सः नहीं किन्तु स होता है। यथा

क॰	ὁ τό ἡ		τώ	τά	οἱ	τά	αἱ
क॰	τόν τό τήν		τώ	τά	τούς	τά	τάς
स॰	τοῦ	τῆς	τοῖν	ταῖν		τῶν	τῶν
अ॰	τῷ	τῇ	τοῖν	ταῖν		τοῖς	ταῖς

२७२। αὐτο-οὑτο-ταυτο-τουτο।

αὐτο स्त्रीलिङ्ग के कर्त्ता के एकवचन और बहुवचन में होताहै।

ταυτο स्त्रीलिङ्ग के इन रूपों और सम्बन्ध के बहुवचन को छोड़के और सब

रूपों में और क्लीवलिङ्ग के कर्त्ता और कर्म्म
के बहुवचन में होता है।

οὑτο पुलिङ्ग के कर्त्ता के एकवचन और
बहुवचन में होता है।

τουτο पुलिङ्ग के और सब रूपों में और
स्त्रीलिङ्ग के सम्बन्ध के बहुवचन में होता
है और क्लीवलिङ्ग के उन सब रूपों में जि-
नमें ταυτο नहीं होता है। यथा

क॰	οὗτος	τοῦτο	αὕτη	τούτω	ταύτα
क॰	τοῦτον	τοῦτο	ταύτην	τούτω	ταύτα
स॰	τούτου		ταύτης	τούτοιν	ταύταιν
अ॰	τούτῳ		ταύτῃ	τούτοιν	ταύταιν

οὗτοι ταῦτα αὗται
τούτους ταῦτα ταύτας
τούτων τούτων
τούτοις ταύταις

२७३। δειν

के तीनों लिङ्ग के कर्त्ता और कर्म्म के एक-

वचन में α प्रत्यय लगता है। यथा

क॰ δεῖνα	δεῖνε	δεῖνες δεῖνα
क॰ δεῖνα	δεῖνε	δεῖνας δεῖνα
स॰ δεῖνος	δείνοιν	δείνων
श्र॰ δεῖνι	δείνοιν	δεῖσι

२७४। πέντε से लेके ἑκατόν तक सब संख्यावाचक विशेषण और जितने संख्यावाचक विशेषण इन के मिलाने से बने हुए हैं उन सभों के येही रूप रहते हैं और कोई रूप उन का नहीं होता है।

पञ्चदश अध्याय— उपसर्गों का वर्णन।

२७५। उपसर्गों का मूल अर्थ प्राय समासों में मिलता है परन्तु समासों में भी और जब अलग आते हैं तब भी यह अर्थ न्यूनाधिक बदल जाता है।

२७६। ἀμφί

का मूल अर्थ दोनों ओर है यथा ἀμφιλο-γο जिस की दोनों ओर बात हो सकती है अर्थात् सन्दिग्ध । परन्तु बहुत शब्दों में उसका अर्थ चारों ओर है यथा ἀμφι और ἕ (पहिन) मिलके ἀμφιε होता है जिसका अर्थ है अपनी चारों ओर पहिनना अर्थात् ओढ़ना ।

ἀμφι अलग होके प्राय कर्म्म के साथ आताहै और उस का अर्थ है पास वा लगभग यथा οἱ ἀμφι τὸν Παῦλον जो लोग पौल के संग थे वा हैं ।

२७७ । ἀνα

का मूल अर्थ है ऊपर की ओर यथा ἀναστα उठना ἀναβα चढ़ना ἀνατελ उगना । इस से फिरने का अर्थ निकला है क्योंकि इस संसार की दशा नदी के समान है जो सदा नीचे की ओर

वली भाषी है यथा ἀναζα फिर जीना ἀναγεννα फिर से जन्माना । इससे फिर २ करने और इससे अच्छी रीति से करने का अर्थ निकलताहै । यथा ἀνακριν ठीक २ विचार करना ἀναγνο फिर २ जानलेना अर्थात् पढ़ना ।

ἀνα अलग होके प्राय कर्म्म के साथ आताहै और उसका अर्थ प्राय नीचे से लेके ऊपरतक अर्थात् सम्पूर्ण किसी देश वा काल में होनाहै यथा ἀνὰ χώραν समस्त देश में ἀνα νύκτα समस्त रात में इस से प्रत्येकता का अर्थ निकलता है यथा ἀνὰ ἑκατὸν सौ २ करके ।

२७८ । ἀντὶ

का मूल अर्थ सम्मुख है यथा ἀντι παρερχ साम्हने नेचला जाना । इस से बदले का अर्थ निकलता है यथा ἀντι

λυτρο अर्थात् छूटने का मोल । और साह-श्य का अर्थ यथा ἀντιτυπο जो तुल्य मूर्त्ति का है । परन्तु प्राय उस का अर्थ विरोध का है यथा ἀντιλεγ अर्थात् विरुद्ध कह-ना ἀντιταγ अर्थात् विरोध में ठहराना। ἀντι अलग होके केवल सम्बन्ध के साथ आता है और उस के उक्त सब अर्थ होते हैं यथा χαριν αντι χαριτος कृपा के तुल्य कृपा ।

२७९ । ἀπό

का मूल अर्थ दूर की ओर है यथा ἀπο-βαλ दूर फेंक देना ἀποτεμ काटनिका-लना । इससे काम को समाप्त करके छोड़ने का अर्थ निकलता है यथा ἀπολαβ फेरा पाना । और फेरने का भी अर्थ यथा ἀπ-οδο फेरदेना । ἀπο अलगहोके सम्ब-न्धही के साथ आता है और उस का अर्थ से है यथा ἀπ᾽ ἐμοῦ मुझसे ।

२८०। δια

संस्कृत द्वि से निकला है। संस्कृत में तो इस का र छूटके विरह जाता है परन्तु यवनभाषा में इस का व छूटके δι होगया यथा διστομο द्विमुख और यह उपसर्ग होके δια हो गया। इसका अर्थ ठीक वि के समान है अर्थात् पहिले विभाग का यथा διαλυ खोलके अलग २ करना διαγνο अन्तर पहिचानना। इससे एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाने वा करने का अर्थ निकलता है क्योंकि जो ऐसा करते हैं सो मानों विभाग करते हैं यथा διαβα इधर से उधर तक जाना διαμεν आदिसे अन्ततक रहना इससे सम्पूर्ण रूप से करने का अर्थ निकलता है यथा διαμαρτυρ विशेष से साक्षी देना।

δια अलग होके कर्म्म और सम्बन्ध के

साथ आता है । जब कर्म्म के साथ आता है तब उस का अर्थ कारण का है यथा διὰ τί; काहेको διὰ τὸν Κύριον प्रभु के निमित्त ।

जब सम्बन्धके साथ आता है तब उसे के ये अर्थ होते हैं ।

१। समस्त देश वा काल में यथा δι᾽ ὅλης τῆς ἡμέρας समस्त दिन διὰ πολλῶν ἡμέρων बहुत दिनों में ।

२। प्रत्येक किसी काल में यथा διὰ τρίτης ἡμέρας तीसरे दिन के पीछे ।

परन्तु विशेषकरके

३। द्वारा यथा δι᾽ αὐτοῦ उसी के द्वारा।

२८१ । εἰς

का मूल अर्थ है प्रवेश का और यह अर्थ प्राय सब समासों में मिलताहै यथा εἰσελθ भीतर जाना εἰσφερ भीतर

ले आना। कभी २ सम्पूर्णता का अर्थ उस में है यथा εἰσακοου ऐसा सुनना कि उसके अनुसार करे भी।

εἰς अलग होके कर्म्मही के साथ आता है और उस के ये अर्थ हैं

१। स्थान में प्रवेश करना यथा εἰς τὴν οἰκίαν ἦλθεν घरमें गया।

२। काल तक यथा εἰς τὸν αἰῶνα सदा तक।

३। और यथा βλέψον εἰς ἡμᾶς हमारी ओर देख।

४। अभिप्राय यथा εἰς τί; किस लिये εἰς τὸ καταβαίνειν उतरने के लिये।

२८२। ἐκ

स्वर के पहिले ἐξ होता है और उस का मूल अर्थ εἰς के विरुद्ध अर्थात्

निकलने का है। प्राय यही अर्थ मिलता है यथा ἐκβαλ निकालडालना ἐκκαλε औरों में से बुलाना ἐξοδο निकलने की यात्रा। कभी २ उस का अर्थ सम्पूर्णता का है यथा ἐξαιτε मांगके प्राप्त करनी।

ἐκ अलग होके सम्बन्धी के साथ आता है और उस के ये अर्थ होते हैं

१। से यथा ἐξ οὐρανοῦ स्वर्ग से ἐξ ἀρχῆς आदि से ἐξ ἀγάπης प्रेमसे।

२। सम्बन्ध यथा ἐκ τῆς ἀληθείας ἐστι सत्यता की ओर का है।

२८३। ἐν

का मूल अर्थ भीतर का है और समासों में प्राय यही अर्थ मिलता है यथा

ἐννυχόν रातको ἔνθε भीतर रखना ἐμβλεπ भीतर देखना ἐνυπνιο जो स्वप्न में देखा जाता है ἐντιμο जो प्रतिष्ठा में है अर्थात् प्रतिष्ठित ἐντυχ मिलके संगति करना ἐνδειχ जो भीतर है सो दिखाना।

ἐν अलग होके अधिकरणादी के साथ आता है और उस के ये अर्थ हैं।

१। में यथा ἐν τῷ τόπῳ उस स्थान में ἐν πολλοῖς ἀδελφοῖς बहुत भाईयों में ἐν τιμῇ εἶναι प्रतिष्ठा में हो रहना।

२। उपाय वा द्वारा यथा ἐν πυρί आगसे।

२८४। ἐπί

कामहल अर्थ ऊपर का है और समासों में प्राय यही अर्थ मिलता है यथा ἐπισκοπο जो ऊपर होके देखना है ἐπιγειο

पृथिवी पंरका ἐπιχει किसी के ऊपर पड़े रहना ἐπιτρεπ किसी के ऊपरं फेरना अर्थात् उसको सौंपना ἐπιφαν किसी के ऊपर दिखाई देना ἐπιθανατιο जो मारे जाने परहै ।

ἐπι अलग होके कर्म्म सम्बन्ध और अधिकरण के साथ आता है ।

जब कर्म्म के साथ आता है तब उस के ये अर्थ हैं

१। ऊपर यथा ἐπὶ τὴν θαλάσσαν περιπατεῖ वह समुद्र के ऊपर चलता है ।

२। ओर यथा ἐπὶ τὸν ποταμὸν ἰέναι नदी के पास जाना ।

३। विरोध यथा ἐπαναστῆναι ἐπὶ γονεῖς पितरों के विरुद्ध उठना ।

४। तक यथा ἐφ᾽ ὅσον जहां तक ἐπὶ

χρόνον कुछ काल तक ।

५। अपि साथ ।

जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उसके ये अर्थ हैं

१। ऊपर यथा ἐπὶ χειρῶν αἴρειν हाथों पर उठाना ἐπὶ τῆς γῆς पृथ्वी पर ἐπὶ τῆς πόλεως ἄρχειν नगर का अधिकार रखना ।

२। साम्हने यथा ἐπ᾽ ἐμοῦ κρίνεσθαι मेरे साम्हने विचारित होना ।

३। समय में यथा ἐπὶ Ποντίου Πιλάτου पन्त पीलात के समयमें ।

४। रीति यथा ἐπ᾽ ἀληθείας सचमुच ।

जब अधिकरण के साथ आता है तब उसके ये अर्थ हैं

१। ऊपर यथा ἐφ᾽ ἱματίῳ कपड़े पर ।

२। पास यथा ἐπ᾽ αὐτοῖς उनके पास ।

३। अधिक यथा ἐπὶ πᾶσι τούτοις इनसबसे अधिक।

४। कारण यथा ἐφ' ᾧ जिसके कारणसे।

२८५। κατὰ

का मूल अर्थ नीचे की ओर है यथा κατα-βα उतरना καταγ उतारलेआना। इससे प्र-भुत्व का अर्थ निकलताहै यथा κατακα-υχα किसी के ऊपर घमण्ड करना। और विरोध काभी अर्थ κατα में बहुतमिलता है यथा κατακριν विरोधमें विचार करना अ-र्थात् दण्ड के योग्य ठहराना καταμαρτ-υρε विरोधमें साक्षी देना। और बहुत श-ब्दों में κατα केवल शब्द के अर्थ को दृढ़-ता देताहै यथा καταλυ नाश करना καταρτιζ सम्पूर्ण रूपसे जोड़ना κα-ταδηλο अतिस्पष्ट।

κατα अलग होके कर्म और सम्बन्ध के

साथ आताहै । जब कर्म्म के साथ आता है तब उस के ये अर्थ हैं

१। नीचे और साथ यथा κατὰ ῥόον πλέειν धारा के साथ नावचलाना ।

२। ऊपर से नीचे तक अर्थात् समस्त देशमें यथा καθ' ὅλην τὴν πόλιν समस्त नगर में ।

३। लगभग यथा κατ' ἐκεῖνον τὸν καιρὸν उस समयके लगभग κατὰ τὸν τοπὸν उसस्थान के पास ।

४। में यथा κατ' οἶκον αὐτῶν उनके घरमें ।

५। ओर यथा κατὰ μεσημβρίαν दक्षिणकी ओर ।

६। प्रत्येक यथा καθ' ἡμέραν प्रति दिन κατ' οἶκον घर घर κατὰ δύο दो दो ।

७। अनुसार यथा κατὰ φύσιν स्वभाव के अनुसार । τὰ κατ᾽ ἐμὲ

८। विषय यथा τὰ κατ᾽ ἐμὲ मेरी दशा ।

९। भाव यथा κατὰ σάρκα शारीरके भावसे ।

१०। किरिया का साक्षी यथा κατὰ τὸν θεὸν ईश्वर की किरिया ।

जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उस के ये अर्थ हैं

१। से और नीचे यथा κατὰ τοῦ κρημνοῦ ἔδραμον वे कड़ाड़े से नीचे दौड़े ।

२। नीचे और पर यथा κατὰ τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ ἔχεε उसने उसके सिर पर डाला ।

३। एक ओर से दूसरी ओर तक यथा καθ᾽

ὅλης τῆς χώρας समस्त देश में ।

४। विरोध यथा κατ' ἐμοῦ मेरे विरुद्ध ।

५। किरिया का साक्षी । यथा ὤμοσε καθ' ἑαυτοῦ उसने अपनी किरियाखाई।

२८९ । μετά

कामूल अर्थ मध्य है जिससे μεσο वि: शेषणभी निकलाहै । समासों में उस के ये अर्थ हैं

१। संगित्व । μεταδο सम्भागी करना।

२। पीछे । μεταμελ पश्चात्ताप करना।

३। बदलना । μετανοε मन बदलना μεταμορφο मूर्त्ति को बदलना ।

μετά अलग होके प्राय कर्म्म और सम्बन्ध के साथ आताहै ।

जब कर्म्म के साथ आता है तब उस का अर्थ प्राय पीछे है यथा μεθ' ἓξ ἡμέ-

ρας छः दिन के पीछे μετὰ τὸ ἐγερθῆναι με मेरे जगाये जाने के पीछे। जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उस का अर्थ प्राय साथ है यथा μετὰ τῶν νεκρῶν मृतकों के साथ μετ' ἐμοῦ मेरे साथ वा मेरी ओर।

२८७। παρα

का मूल अर्थ पास है यथा παραστα पास खड़ा होना παραῤῥυ पास से बह जाना παραχλητο जो किसी के पास बुलाया गया। इस से सौंपदेने का अर्थ निकलता है यथा παραθε वा παραδο सौंप देना παραλαβ किसी के पास से पाना। और उसी मूल अर्थ से सीमा के ऊपर जाने का भी अर्थ निकलता है यथा παραβα वा παραπετ अपरा-

य करना παρακου आज्ञा लङ्घन करना।
इस से विरोधका भी अर्थ निकलता है यथा
παραιτε विरोध में मांगना वा अनङ्गी-
कार करना।

παρα अलग होके कर्म्म सम्बन्ध और
अधिकरण के साथ आता है।

जब कर्म्म के साथ आता है तब उस के
ये अर्थ हैं

१। पास जाना। ἔῤῥιψαν παρὰ
τοὺς πόδας αὐτοῦ उन्हों ने उस-
के पांवों पर डाल दिया।

२। पास पास। यथा παρὰ θάλασσ-
αν ἦλθε वह समुद्र के तीरे २ गया।

३। अधिक। ἁμαρτωλοὶ παρὰ
πάντας सब से बड़े पापी।

४। छोड़के। यथा παρ᾽ ὃ παρελάβε-
τε उस को छोड़के जो तुम ने पाया।

५। विरोध। παρὰ φύσιν स्वभाव के विरुद्ध।

६। कारण। παρὰ τοῦτο इस कारण से। जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उसके ये अर्थ हैं

१। पास से। παρ' αὐτοῦ ἀκηκόαμεν हमने उस से सुना है।

२। पास। οἱ παρ' αὐτοῦ उसके पास के अर्थात् घरकेलोग। जब अधिकरण के साथ आता है तब उस का अर्थ केवल निकट ही है यथा παρ' ἐμοὶ मेरे निकट वामेरे समझमें।

२८८।: περὶ

का मूल अर्थ चारों ओर है यथा περιβλεπ चारों ओर देखना περιχωρα चारों ओर का देश। इस से अधिक का अर्थ निकलता है यथा περιεργο जो अधिक

काम करताहै περιλυπο अतिशोकित περιχλυτο अतिश्रुत अर्थात् बहुत कीर्तिमान ।

περι अलग होके कर्म और सम्बन्ध और अधिकरण के साथ आता है ।

जब कर्म वा अधिकरण के साथ आता है तब उसके ये अर्थ हैं ।

१। चारों ओर । τοὺς περὶ αὐτὸν καθημένους उन को जो उसकी चारों ओर बैठे थे οἱ περὶ ἐμὲ मेरे संगी लोग τὰ περὶ ἐμὲ मेरी दशा ।

२। लगभग । περὶ τὴν τρίτην ὥραν तीसरे घराटे के लगभग ।

३। विषय में । περὶ πάντα सब बातों के विषय में ।

जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उसका अर्थ प्राय विषय में है यथा περὶ οὗ γε-

γραπται जिसके विषय में लिखा है।

२८१। πρὸ

का मूल अर्थ आगे है। माय उस का अर्थ है आगे की ओर यथा προβα आगे जाना (इससे προβατο भेड़ निकलता है) προφα कह निकालना। कभी २ अगले समय का अर्थ उस में है यथा προεπ आगे से कहना। कभी २ अधिक का अर्थ है यथा προαιρε एकवस्तु को दूसरे से अधिक लेना अर्थात् चुनना। कभी २ साम्हने का अर्थ है यथा προφασι जो साम्हने दिखाई देता है। इस से उपकार का भी अर्थ निकलता है यथा προμαχ किसी के लिये लड़ना।

πρὸ कारक होके सम्बन्धकी के साथ आता है और उसका अर्थ आगे है चाहे देश में यथा πρὸ προσώπου σου मेरे मुह

के साम्हने । वा है समयमें यथा πρὸ τοῦ συλληφθῆναι αὐτὸν उस के पेट में पड़ने के आगे । वा है प्रतिष्ठा में यथा πρὸ πάντων सबसे अधिक ।

२५० । πρὸς

का मूल अर्थ पास है यथा προσαγ किसी के पास ले आना προσμεν किसी के पास रहना । इस से अधिका का भी अर्थ निकलता है यथा προσδαπανα अधिक व्यय करना ।

πρὸς अलग होके कर्म्म और सम्बन्ध और अधिकरण के साथ आता है ।

जब कर्म्म के साथ आता है तब उस के ये अर्थ हैं

१ । पास । πρὸς τὴν ῥίζαν जड़ के पास ।

२ । को । εἶπε πρὸς αὐτὸν उसने

उस को कहा।

३। समय तक। πρὸς καιρὸν किसी काल तक।

४। अभिप्राय। πρὸς τὸ θεαθῆναι दिखाई देने के लिये।

५। अपेक्षा। πρὸς τὴν σκληροκαρδίαν αὐτῶν उन के कठिन हृदय की अपेक्षा करके τί πρὸς ἡμᾶς; हम को क्या।

जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उस का अर्थ पास से वा निमित्त है यथा πρὸς τῆς ὑμετέρας σωτηρίας तुम्हारे छूटने के लिये।

जब अधिकरण के साथ आता है तब उसका अर्थ निकट है यथा πρὸς τῷ ὄρει पहाड़ के निकट।

२९१। σύν

का मूल अर्थ संगति का है यथा συναγ

एकट्ठा करना σομφωνε एकसाथ बोलना अर्थात् एकमन होना । इस से सम्पूर्णता का अर्थ निकलता है यथा συντεμ काट डालना ।

σὺν अलग होके अधिकरणाही के साथ आता है और उस का अर्थ साथ है यथा σὺν ἐμοὶ मेरे साथ ।

२५२ ὑπὲρ

का मूल अर्थ ऊपर है । इस से आधिक्य का अर्थ निकलता है यथा ὑπεραυξ अतिवृद्धिकरना ὑπερβολα आधिक्य ।

ὑπερ अलग होके कर्म्म और सम्बन्ध के साथ आता है ।

जब कर्म्म के साथ आता है तब उस का अर्थ अधिक है । यथा ὁ φιλῶν πατέρα ἢ μητέρα ὑπὲρ ἐμὲ जो पिता वा माता को मुझसे अधिक प्यार करता है ।

जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उसके अपने अर्थ हैं

१। निमित्त। ὑπέρ τινος προσεύχεσθαι किसी के लिये प्रार्थना करना।

२। स्थाने। ὑπέρ τινος ἀποθνήσκειν किसी की सन्ती मरना।

२९३। ὑπο

का मूल अर्थ नीचे है यथा ὑποταγ नीचे ठहराना वा वशीभूत करना ὑπομεν नीचे रह जाना अर्थात् भार को सह लेना। इससे गोपन का अर्थ निकलता है यथा ὑποκριν कपट करना ὑποβαλ गुप्त में उभाड़ना। इस से धीरे २ करने का अर्थ निकलता है यथा ὑποπνευ धीरे २ बहना।

ὑπο अलग होके कर्म और सम्बन्ध और २ अधिकरण के साथ आता है।

जब कर्म्म के साथ आता है तब उस का अर्थ प्राय नीचे है यथा ὑπὸ τὴν συκῆν अंजीर के पेड़ तले । कभी २ समय यथा ὑπὸ τὸν ὄρθρον भोर को ।

जब सम्बन्ध के साथ आता है तब प्राय परकर्त्तृक और अकर्म्मक क्रियाओं के कर्त्ता के साथ आता है यथा τὰ εἰρημένα ὑπό σου जो बातें तुझसे कही गयी हैं πάσχω ὑπ' αὐτοῦ मैं उस से दुःख उठाता हूं ।

जब अधिकरण के साथ आता है तब उस का अर्थ नीचे है ।

२९४। उपसर्गान्वित क्रियाओं का आगम प्राय उपसर्ग और क्रिया के मध्यही में आता है यथा ὑπετάγη वह वशीभूत किया गया । केवल जब निरे धातु का प्रयोग नहीं होता है तब आगम उपसर्ग

के पहिले ही आता है यथा ἐκάθευ-δον वे सुख से थे।

अभ्यास सदा उपसर्ग और क्रिया के मध्य में आता है यथा διαμεμενηκότες लगातार रहे हुए।

षोडश अध्याय—और कितने अव्ययों का वर्णन।

२९५। १। ἅμα अधिकरण के साथ आता है।

२। ἄνευ ἄχρι μέχρι πέρα सम्बन्ध के साथ आते हैं।

३। ἄγχι πέλας सम्बन्ध वा अधिक-रण के साथ आते हैं।

२९६। γάρ γὲ δὲ δὴ μὲν τε वाक्य वा उस के किसी शब्द के आदि में नहीं आ

सकते हैं। प्राय उस के पहिले ही शब्द के पीछे आते हैं।

२५७। Ἄν के विशेषकरके दो प्रकार के प्रयोग हैं।

१। वह सम्बन्धवाचक शब्दों के साथ आके उन को अधिक संदेह वा अनिश्चयता का अर्थ देता है। यथा ὅς ἄν ἔχῃ वा ὅστις ἄν ἔχῃ जिस किसी के पास हो ὅταν ἔρχῃ जब कभी तू आवे οὗ ἄν ᾖς जहां कहीं में होऊं ὡς ἄν βουλεύωμεν जिस किसी प्रकार से हम २ लेवें। इस प्रकार से ἐάν का भी कभी २ प्रयोग होता है।

२। वह ले डू. वा १ वा २ सद्द. वा लोड्. के धातु नाम के साथ आके यह बतलाता है कि उक्त क्रिया होती वा हुई तो नहीं

परन्तु यदि और कुछ होता तो वह भी होती यथा εἰ χθὲς ἤκουον τοῦτο, οὐχ ἂν ἐποίουν οὕτως यदि मैं कल यह सुनता तो ऐसा न करता ।

२९८। Ἢ सदा तरवर्थवाचक विशेषणों के पीछे आता है यथा οὐδὲν ἕτερον ἢ λέγειν τι कुछ कहने से कुछ भिन्न नहीं अर्थात् केवल कुछ कहना । इसी अर्थ में संज्ञा के सम्बन्धकारक का भी प्रयोग हो सकता है यथा σὺ εἶ δικαιότερος ἢ ἐγώ वा σὺ εἶ δικαιότερος ἐμοῦ तू मुझसे अधिक धर्मी है।

२९९। Καί के दो अर्थ हैं अर्थात् और। भी। जब इसका अर्थ है भी तब सदा उस शब्द के पहिलेही आता है जिस से विशेष सम्बन्ध रखता है यथा ἦμεν γάρ ποτε καὶ ἡμεῖς ἀνόητοι क्योंकि हम भी

कभी निर्द्धिष्ये ।

जब दो $\kappa\alpha\grave{\iota}$ पास २ आते हैं तब उन का अर्थ है दोनों यथा $\kappa\alpha\grave{\iota}$ $\acute{\eta}\mu\epsilon\tilde{\iota}\varsigma$ $\kappa\alpha\grave{\iota}$ $\acute{\upsilon}\mu\epsilon\tilde{\iota}\varsigma$ हमभी और तुमभी ।

३०० । Μὲν का प्रयोग केवल तबही होता है जब पीछे δὲ आता है वा वक्ता के मन में है यथा τότε μὲν ἐδουλεύσατε εἰδώλοις· νῦν δὲ γνόντες Θεὸν κ. τ. λ. तब तो तुमने मूर्त्तिन की सेवा किई परन्तु अब ईश्वरको पहिचानके इत्यादि ।

३०१ । Μὴ और οὐ का केवल वही अन्तर नहीं है जो मत और नहीं के बीच में है अर्थात् μη न केवल लोट् भाव के साथ नहीं आताहै वरन जहां कहीं अङ्गीकार का निश्चय नहीं है तहां

μὴ का प्रयोग होता है। यथा εἰ μὴ ἦλθον यदि मैं न आता ἵνα μὴ ἄκαρπος γένεται जिस्तें निष्फल न होवे।

सप्तदश अध्याय — कितने विशेषणों का वर्णन।

३०२। Αὐτο जब समास में आता है तब उसका अर्थ आप है यथा αὐτοχειρ अपने हाथ से करनेवाला αὐτοπτα अपनी आंख से देखनेवाला। जब अलग आता है तब विशेष करके उसके कर्त्ता कारक में प्राय वही अर्थ है यथा αὐτὸς ἐγὼ मैं आप αὐτοὶ ὑμεῖς तुम आप αὐτὸς ᾔδει τί ἤμελλε ποιεῖν

आप जानता था वा करने चाहता था ।
परन्तु उस के और २ कारकों में उस का
अर्थ प्राय केवल प्रथम पुरुष का है यथा
σὺν αὐτῷ उस के साथ πρὸς
αὐτοὺς उन को ।

३०३ । Αὐτο तीनों पुरुष के संज्ञाओं के
एकवचन से मिलके उन के साथ एक शा·
ब्द होता है यथा ἐμαυτον वा ἐμαυ-
τήν φιλῶ मैं अपने को प्यार कर·
ता वा करती हूं σεαυτόν γνῶθι
अपने को जान ले ἑαυτῆς ἐσθῆτα
ἐμόλυνε उस स्त्री ने अपना वस्त्र मै·
ला किया । इस प्रथम पुरुष के शब्द
का बहुवचन भी होता है यथा ἐν ἑαυ-
τοῖς λογίζονται वे अपने भीतर सोच·
ते हैं ।

३०४ । Ἀλλο दुहराया भी जाता है अ·

र्थात् ἀλλήλο होता है । इस का अर्थ है परस्पर । वह केवल द्विवचन और बहुवचन में होता है यथा ἀγαπᾶτε ἀλλήλους एक दूसरे को प्यार करो ।

३०५ । Tiν जब अनिश्चयवाचक शब्द है तब उस के स्वरों पर बलचिह्न नहीं होता है जब प्रश्नवाचक शब्द है तब उसपर तीक्ष्ण बलचिह्न होता है । जब अनिश्चयवाचक है तब ὅ (जो) के अन्त में लगके उस के अनिश्चयता को अधिक करता है यथा ἥντινα जिस किसी स्त्री को ।

३०६ । To और ὁ (जो) का मूल अर्थ केवल प्रथम पुरुष का है ठीक जैसा संस्कृत तत् का है । परन्तु समय पाके वह केवल उपमा वा विशेषता बनाने लगा यथा हलान्त में जहां किसी का नाम

पहिले आता है तहां नाम अकेला होता है परन्तु उसके पीछे जहां कहीं आवे तहां यह विशेषण उसके साथ आवेगा। फिर जब तात्पर्य्य है कि कोई पदार्थ एक ही है अथवा बहुतों में विशिष्ट है तब यह विशेषण उसके साथ आता है यथा ὁ ἥλιος सूर्य्य क्योंकि सूर्य्य एकही है θεός कोई देव परन्तु ὁ θεός मुख्य देव अर्थात ईश्वर। और जब विशेषण वा क्रिया के विशेषणभाव के साथ आता है तब उस का अनुवाद हिन्दी में जो से होना आवश्यक है यथा ὁ ἐλεήμων वह जो दयावान है οἱ εὖ πράξαντες वे जिन्हों ने अच्छा काम किया।

१०७। इस विशेषण के अन्त में जब

δε आता है तब उस का अर्थ है यह। यथा τάδε ये बातें।

परिस्मृक्त धातु।

ΚΤΙΔ बना।

ΛΕΠΙ छिलका निकाल। इस से

λεπτο पत ला λεπρο´ कोढ़ी।

ΠΕΝ श्रमकर। इस से πονο

श्रम πενητ श्रमी वा दारिद्र।

॥ समाप्तम्‌ ॥

लिखितं पंडितजनार्दनकाश्मीरी